

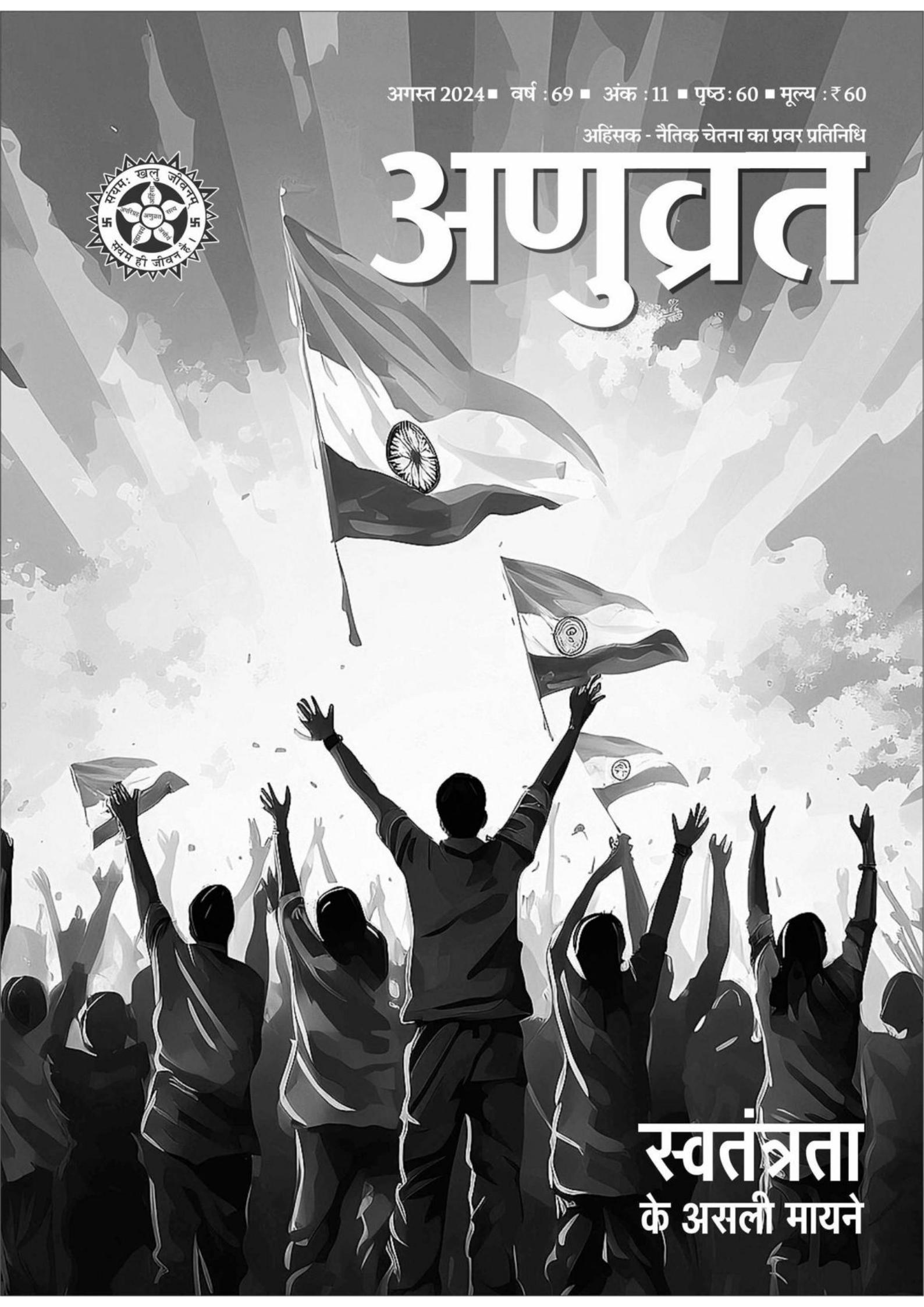
अगस्त 2024 ■ वर्ष : 69 ■ अंक : 11 ■ पृष्ठ : 60 ■ मूल्य : ₹ 60

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि



आनुप्राप्त

स्वतंत्रता
के असली मायने





नई पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता
को प्रोत्साहित करने का राष्ट्रव्यापी अभियान



अनुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट - 2024



मुख्य विषय

**व्यक्तित्व निर्माण
से राष्ट्र निर्माण**

प्रतियोगिताएं

चित्रकला

निबंध

गायन (एकल)

गायन (समूह)

भाषण
कविता

राष्ट्रीय विजेताओं को
आकर्षक पुरस्कार

स्तर-1 : कक्षा 5-8 ■ स्तर-2 : कक्षा 9-12

सहभागिता

18+ राज्य

200+ शहर/कस्बे

1+ लाख बच्चे

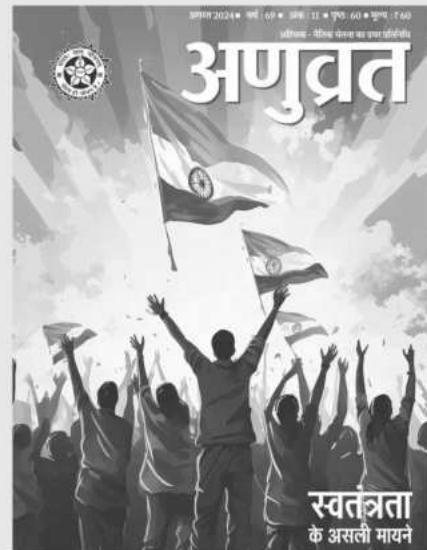
अधिक जानकारी
के लिए सम्पर्क करें

<https://anuvibha.org/acc> acc@anuvibha.org

+91-91166-34514 [+91-91166-34517](tel:+919116634517)

आयोजक

**अनुव्रत
विश्व भारती
सोसायटी**



वर्ष 69 • अंक 11 • कुल पृष्ठ 60 • अगस्त, 2024

सम्पादक

संचय जैन

सह-सम्पादक

मोहन मंगलम



टाइपसेटिंग व लेआउट

मनीष सोनी

क्रिएटिव्स

आशुतोष रॉय

चित्रांकन

मनोज त्रिवेदी

भगवान महावीर की वाणी
मिथ्या, माया और अहंकार से
रहित है। आचार्य श्री तुलसी का
विचार हमेशा एकता के लिए
रहता है। आज उनका प्रयास
अणुव्रत के रूप में सफल हो रहा
है। आगे और भी सफल होना
चाहिए।

-आचार्य देशभूषण



अविनाश नाहर

अध्यक्ष

राकेश बरड़िया

कोषाध्यक्ष

भीखम सुराणा

महामंत्री

सुरेन्द्र नाहटा

संयोजक, पत्रिका प्रसार



:: सदस्यता शुल्क विवरण ::

एक अंक - ₹ 60

एक वर्षीय - ₹ 750

त्रैवर्षीय - ₹ 1800

पंचवर्षीय - ₹ 3000

दसवर्षीय - ₹ 6000

योगक्षेमी (15 yrs) - ₹ 15000

:: बैंक विवरण ::

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
केनरा बैंक

A/c No. 0158101120312

IFSC : CNRB0000158

:: ऑनलाइन भुगतान के लिए ::



इस क्यूआर
कोड को स्कैन करें

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी



अणुविभा

अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,

नई दिल्ली-110002

anuvrat.patrika@anuvibha.org

www.anuvibha.org

दूरभाष : 011-23233345, मोबाइल : 9116634512



अनुक्रमणिका

प्रेरणा पाठ्य		कहानी	
■ मूल वृत्तियां और नैतिक मूल्य आचार्य तुलसी	06	■ सुगंध अब फैलेगी आशा पाण्डेय	34
■ नैतिकता और संयम आचार्य महाप्रज्ञ	08	■ नया तराना भगवती प्रसाद द्विवेदी	17
■ कथनी-करनी में समानता आचार्य महाश्रमण	12	■ जीवन बना विशेष चक्रधर शुक्ल	33
आलेख		लघुकथा	
■ अणुक्रत आंदोलन : एक चिराग... यू.एन. ढेर	16	■ मुल्क महेश कुमार केशरी	21
■ स्वतंत्रता के मायने राजेन्द्र बोड़ा	18	■ भरी गगरिया... यशोधरा भट्टनागर	29
■ सबकी हो स्वतंत्रता दिविक रमेश	20	■ सम्पादकीय	05
■ सूचनाओं के समंदर में... कल्पना मनोरमा	22	■ परिचर्चा	38
■ अधिकार ही नहीं... डॉ. कल्याण प्रसाद वर्मा	24	■ सूरत में किड्जोन का शुभारंभ	43
■ गंगाजल और गंगा... लायकराम मानव	26	■ बच्चों का देश : रजत जयंती	45
■ असत्य और उससे उत्पन्न... अंकुशी	28	■ बारडोली में अणुक्रत वाटिका और किड्जोन का शुभारंभ	46
■ सी-लर्निंग : जीने की राह... कृष्णबिहारी पाठक	30	■ अणुक्रत की बात	48
■ बुजुर्ग हैं हमारी विरासत डॉ. विनोद गुप्ता	31	■ वन महोत्सव सप्ताह : एक रिपोर्ट	49
■ चलते रहने का नाम जिंदगी मृत्युंजय कुमार मनोज	32	■ अंतरराष्ट्रीय योग दिवस : एक रिपोर्ट	52
■ कजरी : परंपरा तथा... स्निग्धा सिंह	37	■ पाठक परख	54
		■ अणुक्रत समाचार	56
		■ अणुक्रत संरक्षक	57
		■ ■ ■	
		■ अणुक्रत सिद्धांत, स्वास्थ्य, जीवन—मूल्य एवं अभिप्रेरणा विषयक सामग्री का उपयोग किया जा सकेगा।	
		■ anuvrat.patrika@anuvibha.org पर ही सामग्री प्रेषित करें।	
		■ ईमेल द्वारा संप्रेषित कम्पोज की गयी प्रकाशन सामग्री की Open Word File को प्राथमिकता दी जायेगी।	
		■ फोटो की गुणवत्ता कम होने पर उसे प्रकाशित करने में असमर्थता रहेगी। झाट्सएप पर फोटो न भेजें।	
		■ अनिमंत्रित सामग्री को लौटाने हेतु बाध्यता नहीं रहेगी।	
		■ प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों का निजी वित्तन है। प्रकाशक एवं सम्पादक इसके लिए जवाबदेह नहीं हैं।	
		■ इस प्रकाशन से सम्बन्धित किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दिल्ली रहेगा।	



आजादी का जरूर और गुलामी की बेड़ियाँ

भा

रत की आजादी अपने साथ गहरे जख्म ले कर आयी थी। किसे पता था कि ये जख्म देश की आत्मा को इस कदर लहूलुहान कर देंगे कि पीड़ियाँ बदल जाने के बाद भी जब-तब ये जख्म हरे होते रहेंगे। इतिहास के पत्रों को पलटते हैं तो आजादी की लड़ाई के उन सुनहरे पत्रों के बीच लाखों इंसानों के खून से सने उन पत्रों को देख कर दिल बैठ-सा जाता है।

जब
धर्म के नाम पर
खुली हिंसा को
समर्थन बढ़ने लगे

जब
धर्म के नाम पर
भ्रष्ट आचरण से
जन-मन हुलसने लगे

जब
धर्म अधार्मिकों की
स्वार्थपूर्ति का
साधन बनने लगे

जब
धर्म स्थल
विभेद की खाई
स्वयं गहराने लगे

तब
ऐसे 'धर्म' को
ताक पर रख
दिलों को जोड़ने की
मुहिम में जुट जाना ही
सच्चे धर्म की
सबसे बड़ी सेवा होगी।

यह वो वक्त था जब देशभक्ति की लहर से भारत सराबोर था। स्वतंत्रता आंदोलन ने एक से बढ़ कर एक राष्ट्रभक्त देश को दिये थे जिनकी एक आवाज पर लोग अपनी जान न्यौछावर करने को तत्पर हो जाते थे। देश का नेतृत्व करने के लिए अनेक महान हस्तियाँ मौजूद थीं, लेकिन कोई हिंसा के उस दावानल को रोक नहीं पाया। आजादी के जश्न के साथ जुड़े दर्द की यह एक क्रूर सच्चाई है।

अहिंसा के पुजारी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी इस आग में पानी डालने की अपनी तमाम कोशिशों में लगे थे। दिल्ली से कहीं दूर, कोलकाता और नोआखली के दंगाग्रस्त इलाकों में वे हिन्दू-मुस्लिम भाईचारे को बहाल करने में जुटे थे। यह कैसी विडम्बना थी कि आजादी की लड़ाई का सबसे बड़ा सिपाही जीत के जश्न से दूर अपने आप को हारा हुआ अनुभव कर रहा था। आजादी मिले अभी छः माह भी नहीं हुए थे कि धार्मिक कट्टरता की इसी सोच ने उस महापुरुष को भी लील लिया।

मानवता का वह एक काला अध्याय था। भारत ही नहीं वरन् पूरी दुनिया के नागरिकों के लिए वह एक सबक था। ऐसा सबक जिससे धर्मान्धता की अंधेरी सुरंग की तरफ जाने से ही इंसान घबराये। लेकिन अफसोस! इस पृथकी का सबसे बुद्धिमान प्राणी मनुष्य इतनी बड़ी कीमत चुका कर भी मानवता के मर्म को समझ न सका। आज भी दुनिया धर्म के नाम पर हो रही हिंसा से आहत है। भारत भी इससे कहाँ कुछ सीख पाया है! गाहे-बगाहे ये चिंगारियाँ सुलगती रहती हैं जो कब आग बन कर फैल जाएं, कोई नहीं कह सकता। कभी-कभी तो लगता है कि आजाद हिंदुस्तान आज भी गुलामी की बेड़ियों से बाहर नहीं निकल पाया है।

आजादी के अमृत महोत्सव के बाद के 25 वर्षीय काल को 'अमृत-काल' कहा जा रहा है। कितना अच्छा हो, इस अमृत-काल में हम समाज में धर्म और जाति के नाम पर खड़ी की गयी दीवारें ढहा सकें! मानव-मानव के बीच मानवीयता के सूत्र को ढूढ़तर कर सकें। अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी ने क्या खूब कहा है - इंसान पहले इंसान, फिर हिन्दू या मुसलमान। यदि ऐसा हो सका तो 15 अगस्त की आजादी में जो अधूरापन रह गया था, उसे हम पूरा कर पाएंगे। इसमें सरकारों और समाजों, नेताओं और धर्मगुरुओं, संस्थाओं और स्कूलों सब को हिस्सेदारी करनी होगी।

आज समय पुरानी गलतियों से सीख लेने का है, न कि पुराने धावों को कुरेदने का। सत्ता आती और जाती रहती है, देश कायम रहता है। व्यक्ति आते हैं और चले जाते हैं, समय उन्हें सर-आँखों पर बिठाता है जो इस दुनिया को और भी खूबसूरत बना कर जाते हैं। आजादी की वर्षगांठ यह एहसास हर नागरिक के मन में जगा सके, आजादी का सही मतलब सब को सिखा सके, इस 15 अगस्त यही मंगलकामना है।

सं. जै.

sanchay_avb@yahoo.com



अणुव्रत | अगस्त, 2024 | 05

मूल वृत्तियां और नैतिक मूल्य

अनुभूति का क्रमिक विकास होता है। अनुभूति जितनी प्रबल होती है, आचरण उतना ही पुष्ट होता है क्योंकि ये दोनों परस्पर सापेक्ष हैं। नैतिक आचरण की पूर्णता का सम्बन्ध अनुभूति की पूर्णता के साथ ही है। जब तक यह स्थिति अप्राप्य रहती है, चारित्रिक पूर्णता भी प्राप्तनहीं हो पाती।

मोक्ष की मान्यता या अवधारणा केवल मान्यता के स्तर पर ही हो तो उसका फलित नैतिकता नहीं हो सकता किन्तु जब व्यक्ति की अवधारणा इतनी पुष्ट हो जाये कि वह अनुभूति के स्तर पर उत्तर आये तो नैतिकता स्वतः प्राप्त संस्कार बन जाती है क्योंकि आचरण अनुभूति का प्रतिफलन है अथवा प्रगाढ़ अनुभूति का नाम ही आचरण है।

जिस व्यक्ति के स्वीकृत सिद्धांत और आचरण के मध्य श्रद्धा या अनुभूति की प्रगाढ़ता का पुल निर्मित हो जाता है, वह व्यक्ति निश्चित रूप से नैतिक हो जाता है। ओढ़ी हुई अवधारणाओं के आधार पर नैतिकता की बात मात्र स्वप्न या कल्पना ही रहती है क्योंकि उसमें अनुभूति तत्त्व सर्वथा गौण होता है।

सबसे बड़ी समस्या यही है कि मनुष्य मान्यता के स्तर पर ही मोक्षवादी रहता है, उससे आगे बढ़ने का प्रयत्न ही नहीं होता। इसलिए अच्छे सिद्धांतों की जानकारी होती है, वह वाडमात्र होकर रह जाती है। उसका कोई कार्मिक उपयोग नहीं होता। भगवान महावीर ने कहा कि केवल ज्ञान या केवल मान्यता ध्येय की पूर्ति के लिए पर्याप्त नहीं है। ज्ञान, दर्शन और चारित्र की समन्विति मोक्षमार्ग है। केवल ज्ञानवाद, आस्थावाद या आचारवाद जीवन की एक दिशा है। यह एक दिशा जिस समय बहु-आयामी बन

जाती है, ज्ञान के साथ आस्था और आचरण की जड़ें मजबूत हो जाती हैं; उसी स्थिति में मोक्ष की अवधारणा व्यक्ति को नैतिक बना सकती है।

अनुभूति का क्रमिक विकास होता है। अनुभूति जितनी प्रबल होती है, आचरण उतना ही पुष्ट होता है क्योंकि ये दोनों परस्पर सापेक्ष हैं। नैतिक आचरण की पूर्णता का सम्बन्ध अनुभूति की पूर्णता के साथ ही है। जब तक यह स्थिति अप्राप्य रहती है, चारित्रिक पूर्णता भी प्राप्त नहीं हो पाती।

अनुभूति का सरलतम मार्ग है गंभीर चिन्तन, गंभीर मनन तथा चित्त की एकाग्रता। मनुष्य का चित्त चंचल है। चंचलता का निरोध होता है मन को किसी आलम्बन पर केन्द्रित करने से। भगवान के सामने प्रश्न आया - "भते ! एक अग्र (आलम्बन) पर मन को स्थापित करने से जीव क्या प्राप्त करता है?" भगवान ने उत्तर दिया - "एकाग्र मन की स्थापना से वह चित्त का निरोध करता है। मन का गहरा सत्रिवेश ध्येय की निर्मिति में होता है, तब ध्येय भी पुष्ट हो जाता है। जब तक ध्येय में चित्त की संयोजना नहीं होती, समग्रता से स्मृति समन्वताहार नहीं होता, तब तक ध्याता और ध्येय में तादात्य स्थापित नहीं हो सकता। तादात्य के बिना अनुभूति परिपुष्ट नहीं होती।"



मनुष्य की स्वाभाविक वृत्तियों की पूर्ति के साधन संशोधित होकर नैतिक धारणा प्राप्त कर लेते हैं। मूलतः भूख, काम, संग्रह या लड़ाई की वृत्ति नैतिक-अनैतिक कुछ नहीं है क्योंकि व्यक्ति की वृत्ति स्वगत होती है। जब तक स्वगत वृत्ति दूसरों से सम्बन्धित नहीं बन जाती, वह अनैतिक या नैतिक नहीं होती। मूलतः इन वृत्तियों का सम्बन्ध व्यक्तिगत गुण-दोषों से है। भूख, काम आदि वृत्तियां भी क्रियान्वयन के सन्दर्भ में नैतिकता और अनैतिकता से जुड़ती हैं।

भूख मूल प्रवृत्ति है। इसे मिटाने के लिए व्यक्ति अर्थार्जन करता है। अर्थ की उपलब्धि समाज-सम्पत्ति पद्धति से भी हो सकती है और चोरी-डैकेती से भी हो सकती है। प्रथम पद्धति परिष्कृत है और दूसरी अपरिष्कृत। दूसरे के प्रति अन्याय करके अर्थार्जन नहीं करना, इस भावना से अनैतिकता का परिष्कार होता है। परिष्कार के लिए संयम की अपेक्षा है। जहाँ संयम का प्रवेश है, वहाँ नैतिकता सहज रूप से सिद्ध होती है।

काम भी एक स्वाभाविक वृत्ति है। अनियंत्रित काम-भावना अनैतिकता को जन्म देती है, किन्तु वही जब अपने विवाहित जीवनसाथी में केन्द्रित हो जाती है, तब यह वृत्ति-परिष्कार की दिशा हो जाती है। स्वदार-संतोष व्रत का मूल्य इसी सन्दर्भ में है।

मनुष्य के पूरे शरीर में विष व्याप्त हो जाता है तो किसी विष-वैद्य से उसकी चिकित्सा करायी जाती है। वह शरीर में फैले हुए विष को एक बिंदु पर केन्द्रित करता है, फिर उसे निकालकर समूचे शरीर को निर्विष बना देता है। असीम काम-वृत्ति को विवाह की सीमा में बाँधने का अर्थ है व्यक्ति का समग्र जगत के प्रति निर्विषीकरण। उसके मन में काम का जो विष है, वह एक बिन्दु पर केन्द्रित हो गया। इस केन्द्रीकरण के बाद व्यक्ति जब चाहे अकाम की दिशा में गति कर सकता है। काम-भावना को कला और संस्कृति के क्षेत्र में रूपान्तरित करके भी उसमें संशोधन किया जा सकता है।

संग्रह की वृत्ति में भी अर्थ-प्राप्ति के स्रोतों की शुद्धि पर ध्यान देकर परिष्कार किया जा सकता है। इसी प्रकार लड़ाकू वृत्ति को अपने भीतर देखने का दृष्टिकोण निर्मित कर परिष्कृत किया जाता है। दूसरों को देखने का अर्थ है - लड़ाई को प्रोत्साहन। अपने प्रति देखने से व्यक्ति अपनी दुर्बलताओं और अपने से विजातीय तत्त्वों को देख सकेगा। इस अन्तर्दर्शन में उसकी लड़ाकू वृत्ति का मोर्चा कहीं बाहर न होकर भीतर होगा। एक संस्कृत कवि के शब्दों में - 'अपराधिनि कोपश्वेत् कोपे कोपः कथं न ते' अर्थात् यदि तुम अपने दुश्मन पर गुस्सा करते हो तो गुस्से पर ही गुस्सा क्यों नहीं करते? वही तो तुम्हारा सबसे प्रबल शत्रु है, अपराधी है।

इस प्रकार वृत्ति-परिष्कार की दिशा में आगे बढ़ता हुआ व्यक्ति किसी समय पूर्ण अहिंसक हो जाता है। इस स्थिति में पहुँचने के बाद न उसे संग्रह की अपेक्षा रहती है और न कामुकता

चारित्रिक मूल्यों की स्थापना के पीछे अनेक उद्देश्य हैं। जिस प्रकार काव्य का सृजन आनन्द और यश के लिए होता है, उसी प्रकार आचरण की उच्चता भी यश के हेतु स्वीकृत की जाती है। कुछ व्यक्ति राष्ट्रीय और सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए ऊँचा आचरण करते हैं और कुछ व्यक्ति केवल आत्मख्यापन की दृष्टि से ही उस पथ पर चलते हैं। आत्मख्यापन प्रतिष्ठा के साथ-साथ व्यावसायिक लाभ भी देता है, इसलिए भी कुछ व्यक्ति इस माध्यम को अपनाते हैं। अमुक कम्पनी या फर्म किसी गलत प्रवृत्ति को प्रोत्साहन इसलिए नहीं देती कि वैसा करने से उसकी प्रतिष्ठा में कमी आ जाएगी। कुछ कम्पनियां तो अल्पकालीन घाटा बर्दाशत करके भी अपना ख्यापन करती हैं, क्योंकि उससे उन्हें दीर्घकालिक लाभ की संभावनाएँ रहती हैं।

ही शेष रहती है। क्योंकि एक अहिंसक के लिए अपरिग्रही होना नितान्त अपेक्षित है। अपरिग्रह के पूर्ण विकास की स्थिति सब कामनाओं और वासनाओं पर स्वयंभूविजय है।

चारित्रिक मूल्यों की स्थापना के पीछे अनेक उद्देश्य हैं। जिस प्रकार काव्य का सृजन आनन्द और यश के लिए होता है, उसी प्रकार आचरण की उच्चता भी यश के हेतु स्वीकृत की जाती है। कुछ व्यक्ति राष्ट्रीय और सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए ऊँचा आचरण करते हैं और कुछ व्यक्ति केवल आत्मख्यापन की दृष्टि से ही उस पथ पर चलते हैं। आत्मख्यापन प्रतिष्ठा के साथ-साथ व्यावसायिक लाभ भी देता है, इसलिए भी कुछ व्यक्ति इस माध्यम को अपनाते हैं। अमुक कम्पनी या फर्म किसी गलत प्रवृत्ति को प्रोत्साहन इसलिए नहीं देती कि वैसा करने से उसकी प्रतिष्ठा में कमी आ जाएगी। कुछ कम्पनियां तो अल्पकालीन घाटा बर्दाशत करके भी अपना ख्यापन करती हैं, क्योंकि उससे उन्हें दीर्घकालिक लाभ की संभावनाएँ रहती हैं।

मुनि एक विशेष प्रकार की वेशभूषा रखता है। यह भी एक दृष्टि से आत्मख्यापन है। गणधर गौतम श्रमण केशी के एक प्रश्न को उत्तरित करते हुए कहते हैं - "लोगों को यह प्रतीति हो कि ये साधु हैं, इसलिए नाना प्रकार के उपकरणों की परिकल्पना की गयी है। जीवन-यात्रा को निभाना और 'मैं साधु हूँ' ऐसा ध्यान आते रहना - इस लोक में वेश धारण के ये प्रयोजन हैं।"

आत्महीनता की बात भी सापेक्ष दृष्टि से मूल्य पाती है। साहित्यकारों और भगवद्भक्तों ने इस मूल्य का आश्रय लिया है। 'मो सम कौन कुटिल खल कामी' आदि पंक्तियां इसी तथ्य की अभिव्यक्ति हैं। इस पद्धति को अहं-विसर्जन की प्रक्रिया के रूप में स्वीकृत किया गया है, इस दृष्टि से इसको चारित्रिक मूल्य का आधार माना जा सकता है, पर वास्तव में सहानुभूति, आत्मख्यापन और आत्महीनता आदि सभी तत्त्व चारित्र के मूल आधार नहीं हैं, स्वयंजात आधार नहीं हैं क्योंकि इनके साथ कोई न कोई त्रुटि जुड़ी हुई है।

नैतिकता और संयम

नैतिकता के साथ कुछ बातें जुड़ी हुई हैं। उनमें पहली बात है - संयम। संयम के बिना नैतिकता की कल्पना नहीं की जा सकती। हमारी जो नैतिकता की प्राण-शक्ति है, जीवनी शक्ति है, वह संयम है। जहाँ यह प्राण-शक्ति नहीं है, वहाँ नैतिकता नहीं हो सकती। संयम होगा तभी नैतिकता की कल्पना की जा सकेगी।

सा रे संसार का अध्ययन करें तो मानव व्यवहार में एक रूपता दिखायी नहीं देती। किसी भूखंड में मानवीय व्यवहार एक प्रकार का है और किसी भूखंड में मानवीय व्यवहार दूसरे प्रकार का है। यह नैतिकता की एक बहुत बड़ी समस्या है। हिन्दुस्तान में एक प्रकार का व्यवहार मिलता है। यूरोप और अमेरिका में दूसरे प्रकार का व्यवहार मिलता है। वहाँ छोटी बात के लिए अनैतिक आचरण नहीं होता। मिलावट करना, किसी की चीज उठा लेना - इस प्रकार की अनैतिकता वहाँ नहीं मिलती। जो क्रय-विक्रय के लिए जाता है, वह पूरा दाम चुका देता है। एक-दूसरे पर विश्वास होता है, भरोसा होता है।

ऐसा लगता है - विदेशी बाजार में विश्वास ज्यादा चलता है। वर्तमान में भारत की जो स्थिति है, इसमें अविश्वास ज्यादा चल रहा है। कोई किसी पर भरोसा नहीं करता। अगर एकांत में किसी की चीज पढ़ी मिल जाती है तो व्यक्ति उसे उठा लेगा। मिलावट भी चलती है और चोरी भी। यह अंतर क्यों? क्या कारण है? क्या यह मानें कि वहाँ धर्म ज्यादा है, यहाँ धर्म कम है? यदि धर्म और नैतिकता का संबंध है तो इस विषय में खोज करनी होगी, अनुसंधान करना होगा।

नैतिकता की प्राणशक्ति

नैतिकता के साथ कुछ बातें जुड़ी हुई हैं। उनमें पहली बात है - संयम। संयम के बिना नैतिकता की कल्पना नहीं की जा सकती। हमारी जो नैतिकता की प्राण-शक्ति है, जीवनी शक्ति है, वह संयम है। जहाँ यह प्राण-शक्ति नहीं है, वहाँ नैतिकता नहीं हो सकती। संयम बहुत कठोर शब्द है। प्रिय नहीं है। आदमी को जितना सुख प्रिय है, उतना संयम प्रिय नहीं है। कुछ चीजें प्रिय होती हैं, पर हितकर नहीं होतीं। कुछ चीजें हितकर होती हैं, पर प्रिय नहीं होतीं। संयम भी वैसा ही है। वह हितकर तो है, पर प्रिय नहीं है। असंयम जितना प्रिय है, उतना हितकर नहीं है, पर संयम बिल्कुल प्रिय नहीं है। यहाँ नैतिकता उलझ जाती है। यह कहा जा सकता है - नैतिकता के बिना यदि समाज स्वस्थ नहीं रह सकता तो संयम के बिना नैतिकता भी स्वस्थ और सप्राण नहीं बन सकती। संयम होगा तभी नैतिकता की कल्पना की जा सकेगी। उसके अभाव में नैतिकता आकाश कुसुम जैसी बनी रहेगी।

मोक्ष का साधन क्या?

जैन आगम का एक शब्द है - परिज्ञा। परिज्ञा का अर्थ है जानना, पर केवल जानना ही नहीं है। परिज्ञा के दो अर्थ हैं - जानना





मनुष्य में लोभ का संस्कार है, स्वार्थ का संस्कार है और सुख का संस्कार है। लोभ, स्वार्थ और सुख की भावना - ये संयम के लिए बड़ी बाधाएं हैं। इसीलिए संयम प्रधान नैतिकता की बात फलित नहीं होती। प्रयत्न हजारों वर्षों से हो रहे हैं, पर आज भी आदमी का दृष्टिकोण जितना सुखवादी है, उतना संयमवादी नहीं है और संयमवादी नहीं है, इसीलिए अनैतिकता की बात चलती है, नैतिकता की बात मंद हो जाती है।

और छोड़ना। ज्ञ परिज्ञा है जानने वाली परिज्ञा और प्रत्याख्यान वाली परिज्ञा है हेय को छोड़ने वाली परिज्ञा, आचरण करने वाली परिज्ञा। दोनों को अलग नहीं किया सकता। यह नहीं हो सकता कि ज्ञ परिज्ञा तो है, प्रत्याख्यान परिज्ञा नहीं है। दोनों संयुक्त होनी चाहिए। अगर सही अर्थ में जान लिया तो फिर आचरण वैसा होगा ही। हमने सही अर्थ में जान लिया कि जहर खाने वाला आदमी मरता है। कोई भी समझदार आदमी जहर नहीं खाता।

जहाँ ज्ञान सत्य हो गया, यथार्थ हो गया, वहाँ ज्ञान और आचरण में दूरी नहीं हो सकती। दोनों एक साथ चलेंगे। एक त्रिपदी या रत्नत्रयी है - सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र। ये तीन रत्न हैं मोक्ष की साधना के लिए। दर्शन अगर सम्यक् है, ज्ञान सम्यक् है तो फिर आचरण सम्यक् होगा ही।

पूछा गया - मोक्ष किससे होता है? सम्यक् दर्शन से होता है या सम्यक् चारित्र से होता है? उत्तर दिया गया - न सम्यक् दर्शन से मोक्ष होता है और न सम्यक् ज्ञान से मोक्ष होता है और न सम्यक् चारित्र से मोक्ष होता है। जब तीनों मिल जाते हैं, तब मोक्ष होता है। जब ज्ञान और आचरण बँट जाता है, विभक्त हो जाता है तो वह ज्ञान भी सम्यक् नहीं होता और वह आचरण भी सम्यक् नहीं होता।

ज्ञान और आचरण की दूरी मिटे

यदि ज्ञान पूरा सम्यक् हो गया तो फिर आचरण गलत कैसे होगा? आचरण गलत है तो मान लेना चाहिए कि ज्ञान पूरा सम्यक् नहीं हुआ। आचारांग सूत्र में कहा गया - जो समत्वदर्शी या सम्यग्दर्शी है, वह पाप नहीं कर सकता और जो पाप करता है, वह समत्वदर्शी नहीं हो सकता, सम्यग्दर्शी नहीं हो सकता। यह सिद्धांत गहन है, पर मनन करने योग्य है। हमारा ज्ञान तभी परिपक्व और यथार्थ ज्ञान माना जाएगा जब ज्ञान और आचरण की दूरी बिल्कुल समाप्त हो जाएगी।

'मैं जानता हूँ, पर करता नहीं हूँ', 'जानता कुछ हूँ और करता कुछ हूँ', जब यह दूरी बनी रहती है तब जानना भी उल्टा हो जाता है और करना भी उल्टा हो जाता है। यह दूरी समाप्त होने पर सही ज्ञान और सही आचरण संभव है। ऐसा लगता है - सम्यक् दर्शन का विकास कुछ भूखंडों में एक प्रकार का हुआ है और कुछ भूखंडों में दूसरे प्रकार का हुआ है।

समस्या है मानवीय प्रकृति की

हिन्दुस्तान में संयम पर बहुत काम हुआ है। उसका बहुत विकास हुआ है। साधना हुई है। भगवान महावीर का पूरा जीवन-दर्शन संयम का दर्शन है। अहिंसा की परिभाषा है - सब जीवों के प्रति संयम करना। प्रत्येक बात में संयम को महत्व दिया गया है। पतंजलि ने यम-नियम को बहुत महत्व दिया, किंतु एक समस्या हमेशा बनी रही। वह समस्या है मानवीय प्रकृति की और मनोविज्ञान की भाषा में मौलिक मनोवृत्तियों की। मनुष्य में कुछ ऐसे संस्कार, ऐसी मौलिक मनोवृत्तियां हैं जिन्हें इंस्टंक्ट कहा जाता है।

चरित्र का संबंध मौलिक मनोवृत्तियों से नहीं जोड़ा गया क्योंकि ये मौलिक मनोवृत्तियां आदमी को चरित्र की ओर प्रेरित नहीं करतीं। भूख, युद्ध की भावना, युयुत्सा, जीने की इच्छा, सेक्स, काम-वृत्ति - ये जितनी मौलिक मनोवृत्तियां हैं, आदमी को संयम की ओर नहीं ले जातीं, इसीलिए आचारशास्त्रियों और नीतिशास्त्रियों ने चरित्र के संबंध में इच्छा पर बहुत बल दिया किंतु मौलिक मनोवृत्तियों को महत्व नहीं दिया, उनका मूल्य नहीं माना। मनोविज्ञान के क्षेत्र में मौलिक मनोवृत्तियां बहुत मूल्यवान मानी जाती हैं, किंतु चरित्र के क्षेत्र में इन पर कोई विचार नहीं किया गया, क्योंकि ये आदमी को चरित्र की दिशा में प्रेरित नहीं करतीं। हमारे विकास में बाधक हैं ये मौलिक मनोवृत्तियां।

मनुष्य में लोभ का संस्कार है, स्वार्थ का संस्कार है और सुख का संस्कार है। लोभ, स्वार्थ और सुख की भावना - ये संयम के लिए बड़ी बाधाएं हैं। इसीलिए संयम प्रधान नैतिकता की बात फलित नहीं होती। प्रयत्न हजारों वर्षों से हो रहे हैं, पर आज भी आदमी का दृष्टिकोण जितना सुखवादी है, उतना संयमवादी नहीं है और संयमवादी नहीं है, इसीलिए अनैतिकता की बात चलती है, नैतिकता की बात मंद हो जाती है।

प्रतिबंध काबिंदु

हर आदमी सुख चाहता है, सुविधा चाहता है। मैं बहुत बार सोचता हूँ - एक आदमी सुख चाहता है और सुविधा चाहता है, भोग चाहता है। दूसरा भी चाहता है और तीसरा भी चाहता है। हर आदमी चाहता है। सुख के साधन भी चाहता है। यानी सुख चाहने का मतलब सुख के साधन चाहना भी है। सुख के साधन चाहता है तो उनकी प्राप्ति भी चाहता है। सुख की आकांक्षा, साधन को पाने की आकांक्षा मन में है, साधन चाहिए, उनकी प्राप्ति होनी चाहिए। अगर हम केवल इसी बात पर विचार करें कि प्राप्ति के साधन शुद्ध हों तो यह बात चलेगी नहीं। इसे रोका भी नहीं जा सकता, टोका भी नहीं जा सकता। हम यह कहें - साधन-शुद्धि के साथ व्यापार करो। साधन-शुद्धि बरतो। कभी भी संभव नहीं है। इस पर कभी प्रतिबंध नहीं लगाया जा सकता। प्रतिबंध कहाँ लगेगा? इसका बिंदु कौन-सा है? उसे हम पकड़ें। वह बिंदु है सुख की आकांक्षा।

अगर हमारी सुख की आकांक्षा कम है तो साधन कम जरूरी होंगे। कम साधन की जरूरत होगी तो प्राप्ति का साधन अपने आप शुद्ध बन जाएगा। सुख की आकांक्षा प्रचुर है तो साधन भी प्रचुर चाहिए। प्राप्ति केवल शुद्ध ढंग से हो, यह संभव लगता नहीं है। यद्यपि हमारा प्रयत्न यही होता है कि प्राप्ति के साधन शुद्ध हों, अर्जन के साधन शुद्ध हों, अनैतिक न हों। हमारे भीतर सुख की आकांक्षा विद्यमान है। सुख चाहिए, दूसरे को चाहिए और तीसरे को चाहिए, सबको चाहिए। यह वृत्ति अपना काम कर रही है और हम प्रतिबंध लगाना चाहें कि तुम साधन शुद्ध रखोगे और जो प्राप्त करना है बिल्कुल सही तरीके से प्राप्त करोगे। कब संभव होगा? भीतर से पानी का वेग आ रहा है। पाल कमजोर है। वह वेग उस पर ऐसा धक्का मारेगा कि पाल टूट जाएगी। जब तक हम मूल बात को नहीं पकड़ेंगे, सुख की आकांक्षा को कम नहीं करेंगे, तब तक साधन-शुद्धि की बात का कोई सार्थक परिणाम नहीं आएगा।

कृत्रिम साधनों का अस्वाभाविक प्रयोग धातक

नैतिकता का पहला बिंदु है संयम, सुख की आकांक्षा का संयम। मन में सुख पाने की जो आकांक्षा है, उसका संयम करो। सुख की अनुभूति तो होती है, पर वह बहुत काम की नहीं है। एक आदमी गर्मी के मौसम में वातानुकूलित मकान में जाकर बैठ जाता है और सोचता है - पहले कितने दुःख में था और अब कितने सुख में आ गया। उसे सुख की अनुभूति होती है, अच्छा भी लगता है, पर वह बहुत काम का नहीं है। जिस व्यक्ति ने निरंतर वातानुकूलन में रहना पसंद किया है, उसने साथ-साथ बीमारियां भी पाली हैं। वातानुकूलन में शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता कम होने लग जाती है। जो व्यक्ति गर्मी और सर्दी को सह सकता है, उसमें जितनी रोग-प्रतिरोधक क्षमता होगी, उतनी वातानुकूलित में रहने वाले में नहीं होगी। जो आदमी प्राकृतिक आपदाओं को सहन नहीं करता, उसके बचाव के लिए हमेशा कृत्रिम साधनों का प्रयोग करता है, उसका परिणाम अच्छा नहीं होता। रोग विशेषज्ञों की परिषद् में एक कार्डियोलोजिस्ट ने कहा - "जिसमें कृत्रिम खाद दी जाती है,

हम मूल बात पर विचार करें कि संयम का सबसे पहला तत्व क्या है? कहाँ संयम करें? सबसे पहले संयम करें सुख की आकांक्षा का। सुख की जो एक प्रबलतम इच्छा है, उसको कम करें। केवल सुख ही सुख की बात न करें। वस्तुतः सारी प्रकृति और हमारे जगत में केवल सुख की बात है ही नहीं। प्रत्येक सुख के साथ दुःख जुड़ा हुआ है। एक आदमी बहुत खाता है, पेटू है। उसे खाने से सुख मिलता है, पर खाने के बाद क्या होता है? क्या सुख ही मिलता है? नहीं, बहुत दुःख मिलता है। रोगी भी बनता है। मधुमेह आदि अनेक बीमारियों से घिर जाता है। वह अधिक खाने की आदत को बनाये रखने के लिए बहाना भी खोज लेता है और मार्ग भी खोज लेता है। मालिक ने रसोइये से कहा - "देखो, आज एक समस्या पैदा हो गयी है।" नौकर ने पूछा - "मालिक! क्या समस्या है?" मालिक ने कहा - "आज मेरी नौकरी छूट गयी है और जब तक नयी नौकरी न लगे, तब तक बड़ी परेशानी है। तुम एक बात का ध्यान रखना। रसोई में ज्यादा खर्च मत करना। बहुत सादा भोजन बनाना। धी, दूध का ज्यादा खर्च मत करना।" नौकर ने कहा - "ठीक है।" भोजन का समय आया। उसने मालिक को रुखी रोटियां परोस दीं और स्वयं खूब धी और दूध के साथ रोटी खाने लगा। मालिक ने कहा - "अरे

वे चीजें खाना हार्ट के लिए बहुत हानिकारक हैं।" बड़ा अजीब है विज्ञान का जगत। पहले कृत्रिम खाद का प्रचार किया जाता है। अधिक उपजाओ, खाद का प्रयोग करो। कुछ समय के बाद कहा जाता है कृत्रिम खाद से उपजे पदार्थ मत खाओ, हार्ट कमजोर हो जाएगा। किसी बात मानें, कृत्रिम खाद देने वाली बात मानें या न देने वाली बात को मानें। जब प्रकृति के साथ अतिरिक्त छेड़छाड़ होती है और अधिक कृत्रिम साधनों का अस्वाभाविक प्रयोग होता है, वह मनुष्य के लिए हितकर नहीं होता।

यह अधिक सुख की आकांक्षा, हमेशा दुःख से बचने का प्रयत्न, कठिनाई से बचने की अभीप्सा और अधिक सुविधावादी दृष्टिकोण आदमी को ऐसे जाल में फँसा देता है जिससे उसे अधिक कठिनाई और परेशानियां भुगतनी पड़ती हैं।

प्राणतत्त्व के हास का कारण

हमें रोग से बचाता है हमारा प्राण-तंत्र। उसे मेडिकल साइंस की भाषा में प्रतिरोधात्मक शक्ति कहते हैं। कृत्रिम संसाधनों से व्यक्ति अधिक दुःखी बन जाता है। हम मूल बात पर विचार करें कि संयम का सबसे पहला तत्व क्या है? कहाँ संयम करें? सबसे पहले संयम करें सुख की आकांक्षा का। सुख की जो एक प्रबलतम इच्छा है, उसको कम करें। केवल सुख ही सुख की बात न करें। वस्तुतः सारी प्रकृति और हमारे जगत में केवल सुख की बात है ही नहीं। प्रत्येक सुख के साथ दुःख जुड़ा हुआ है। एक आदमी बहुत खाता है, पेटू है। उसे खाने से सुख मिलता है, पर खाने के बाद क्या होता है? क्या सुख ही मिलता है? नहीं, बहुत दुःख मिलता है। रोगी भी बनता है। मधुमेह आदि अनेक बीमारियों से घिर जाता है। वह अधिक खाने की आदत को बनाये रखने के लिए बहाना भी खोज लेता है और मार्ग भी खोज लेता है। मालिक ने रसोइये से कहा - "देखो, आज एक समस्या पैदा हो गयी है।" नौकर ने पूछा - "मालिक! क्या समस्या है?" मालिक ने कहा - "आज मेरी नौकरी छूट गयी है और जब तक नयी नौकरी न लगे, तब तक बड़ी परेशानी है। तुम एक बात का ध्यान रखना। रसोई में ज्यादा खर्च मत करना। बहुत सादा भोजन बनाना। धी, दूध का ज्यादा खर्च मत करना।" नौकर ने कहा - "ठीक है।" भोजन का समय आया। उसने मालिक को रुखी रोटियां परोस दीं और स्वयं खूब धी और दूध के साथ रोटी खाने लगा। मालिक ने कहा - "अरे



मूर्ख! मैंने क्या कहा था कि संयम बरतना है और रुखा-सूखा खाना है।" नौकर ने कहा - "मालिक! नौकरी आपकी छूटी है, मेरी नहीं छूटी है।"

मूल प्रेरणा है सुख की आकांक्षा

आदमी तर्क खोज लेता है। बड़े बहाने होते हैं, क्योंकि भीतर में जो आकांक्षा बैठी है, उसे पूरा किये बिना काम नहीं चलता। हमारे सामने एक जटिल प्रश्न है। हम नैतिकता की बहुत चर्चा करते हैं और उसका बहुत विकास चाहते हैं। हर आदमी यह सोचता है कि भ्रष्टाचार मिटना चाहिए, अनैतिकता मिटनी चाहिए। इतना भ्रष्टाचार और इतनी अनैतिकता! जहाँ कहीं भी जाओ, बड़ी समस्या और बड़ी कठिनाई का अनुभव होता है और उसको मिटाने के लिए बहुत सारे प्रयत्न भी हो रहे हैं, किंतु समस्या वैसी ही उलझी हुई है और कारण भी बहुत साफ है। हमारी प्रकृति है - हमारे जो सामने आता है हम उसी पर प्रहार कर देते हैं। हम इस बात पर बल देते हैं कि भाई नैतिक रहो, शुद्ध रहो। हम इस बात पर ध्यान दें कि व्यवहार को कौन अशुद्ध बना रहा है? यह प्रेरणा कहाँ से आ रही है? जब तक उस प्रेरणा पर विचार नहीं करेंगे, तब तक समाधान नहीं मिलेगा। वह प्रेरणा आ रही है सुख की आकांक्षा में से। सुख की आकांक्षा और स्वार्थ अनैतिकता की मूल प्रेरणाएँ हैं।

आदमी के मन में एक प्रेरणा जाग गयी है कि मुझे प्रसिद्ध होना है। भीतर में एक आकांक्षा है प्रसिद्धि की। वह उपाय करेगा कि मैं प्रसिद्ध बनूँ। उपाय किया और प्रसिद्धि नहीं हुई तो फिर भीतर से प्रेरणा आएगी कि जैसे-तैसे प्रसिद्ध बनो। हम देखें - हमारे भीतर में क्या-क्या प्रेरणाएँ छिपी हुई हैं। असंयम की प्रेरणा, सुख की प्रेरणा, प्रसिद्धि की प्रेरणा - ये सारी छिपी हुई प्रेरणाएँ हैं, ये जब तक कम नहीं होतीं, इनका संयम नहीं होता, तब तक साधनों को कम करने और साधनों को शुद्ध ढंग से पाने की बात, व्यवहार शुद्धि या नैतिकता की बात बहुत कमज़ोर बन जाती है। इसलिए हमें सबसे ज्यादा ध्यान देना है मूल समस्या पर और मूल स्रोत पर, जहाँ से ये सारी बीमारियां फूटकर आ रही हैं। वह स्रोत है सुख की आकांक्षा।

समाधान की भाषा

नैतिकता के क्षेत्र में अनेक पश्चिमी दार्शनिकों ने सुखवादी नैतिकता पर भी विचार किया है किंतु भारतीय साधना पद्धति के संदर्भ में जिस बात पर अधिक बल दिया गया, वे हमारे बहुत परिचित शब्द हैं - संयम, यम और नियम। यदि इन तीनों पर ध्यान दें तो नैतिकता की बात कुछ सुलझ सकती है। जब तक इन पर हमारा गहरा चिंतन नहीं होगा तब तक असंयम भी चलता रहेगा, अनैतिकता भी चलती रहेगी और नैतिकता के लिए घोषणाएँ भी होती रहेंगी, पछतावा भी होता रहेगा और भारतीय समाज कितना रसातल तक चला गया है, इसके अनुताप का स्वर भी उभरता रहेगा, किंतु कोई परिणाम आ सकेगा, ऐसा मुझे नहीं लगता। इसलिए हमें मूल बीमारी को पकड़ना है और मूल स्रोत तक पहुँचना है। वहाँ पहुँचकर ही हम समाधान की भाषा में बोल सकेंगे। ■

प्रेरक दृष्टिंत

योग्यता का परीक्षण

राजगृह में एक सार्थकाह था। उसके चार पुत्र और चार पुत्रवधुए थीं। उनके नाम थे - उज्जिता, भोगवती, रक्षिता और रोहिणी। सार्थकाह वृद्ध हुआ। उसने घर की जिम्मेदारी सम्पालने के लिए बहुओं का परीक्षण करना चाहा।

सार्थकाह ने एक विशाल भोज आयोजित किया। भोज के बाद परिजनों के समक्ष चारों बहुओं को चावल के पाँच-पाँच दाने दिये और कहा - "जब मैं माँगूँ, वापस लौटा देना।" बड़ी बहू ने चावल के दाने फेंक दिये। दूसरी ने समुरजी का प्रसाद मानकर खा लिये। तीसरी ने एक डिबिया में उनको सुरक्षित रखा और चौथी ने अपने पीहर वालों के पास भेजकर उन पाँच दानों की अलग से खेती करने को कह दिया।

एक-एक कर पाँच वर्ष व्यतीत हो गये। सार्थकाह ने पुनः प्रीतिभोज आयोजित कर चारों बहुओं से चावल माँगे। बड़ी बहू ने कोष्ठागार से चावल के पाँच दाने लाकर दिये।

समुर ने पूछा - "क्या ये वे ही चावल हैं?"

वह बोली - "उनको मैंने फेंक दिया था, ये दूसरे चावल हैं।"

दूसरी बहू ने कहा - "उन चावलों को मैंने प्रसाद मानकर खा लिया, दूसरे दाने तैयार हैं।"

तीसरी ने अपनी डिबिया खोलकर समुर को मूल के चावल सौंप दिये। अब छोटी बहू की बारी थी। वह बोली - "समुरजी! आपके दिये हुए पाँच चावल पाँच वर्षों में बहुत बढ़ गये, उनके लिए कुछ वाहनों की व्यवस्था कीजिए।"

बहू के पीहर से चावल आ गये। सार्थकाह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अपनी सबसे छोटी बहू रोहिणी को घर की पूरी जिम्मेदारी सौंपी। तीसरी बहू रक्षिता को तिजोरी की चाबियां सौंपकर सुरक्षा का भार दिया। दूसरी बहू भोगवती को रसोईघर की व्यवस्था सम्भलायी और बड़ी बहू उज्जिता को घर की सफाई का काम दिया। योग्यता के अनुसार कार्य का विभाजन देखकर आगन्तुक लोगों ने सार्थकाह की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।



कथनी-करनी में समानता

आदमी वाणी से जो कहे, वह क्रियात्मक रूप में करके दिखाये। जो व्यक्ति केवल बात करता है, किन्तु वैसा आचरण नहीं करता, वह सुगन्धहीन पुष्प के समान होता है। बात करने वाला व्यक्ति यदि साथ में काम भी करे तो उसका जीवन सफल होता है, उसकी वाणी सफल होती है।

बौ द्वि साहित्य के महान ग्रन्थ धर्मपद में कहा गया है-

यथापि स्त्रियं पुष्पं वरणवन्तं सगन्धकं।
एवं सुभासिता वाचा अफला हेति अकुञ्जतो॥

जैसे सुन्दर, वर्णयुक्त निर्गन्ध पुष्प होता है, वैसे ही (कथनानुसार) आचरण न करने वाले के लिए सुभाषित वाणी निष्फल होती है।

एक आदमी बहुत अच्छी-अच्छी बातें करता है, परन्तु उसका स्वयं का आचरण उन बातों के अनुरूप नहीं होता, वह व्यक्ति कैसा होता है? इस विषय में धर्मपदकार ने कहा कि एक ऐसा फूल हमारे सामने है, जो दीखने में बड़ा सुन्दर है, वर्णवान है, परन्तु उसमें सुगन्ध नहीं है। ऐसा सुगन्धिवहीन फूल सुन्दर होने पर भी ज्यादा काम का नहीं होता। इसी प्रकार केवल ऊँची-ऊँची बातें बोलने वाला और काम नहीं करने वाला व्यक्ति भी उस सुगन्धिहीन फूल के समान होता है। आदमी की कथनी और करनी में समानता का विकास होना चाहिए। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने एक गीत में कहा- "कथनी-करनी की समानता में गतिशील चरण हो।" आदमी इस दिशा में चरण आगे बढ़ाये कि मेरी कथनी और करनी में समानता आये। जैसा मैं कहता हूँ, वैसा करके दिखाऊं। आदमी का संकल्प जाग जाये तो जैसा वह कहता है, वैसा कर भी सकता है।

आगे बढ़ने के लिए कभी दूसरों का सहारा भी लिया जा सकता है। दूसरों के सहारे से भी आदमी गति कर सकता है। छोटा बच्चा स्वयं नहीं चल सकता। वह माँ की अँगुली पकड़कर चलता है। माँ की अँगुली के सहारे वह कितना आगे बढ़ जाता है। वृद्ध आदमी के चलने में कठिनाई होती है तो वह गेड़ीए का, लाठी का सहारा लेता है, जिससे चलने में सुविधा हो जाती है। विकास आदमी स्वयं अपने पैरों से करे, अच्छी बात है। अगर स्वयं के पैरों में शिशुत्व के कारण या वृद्धत्व के कारण वह क्षमता नहीं है तो दूसरों के सहारे से भी विकास किया जा सकता है।

एक राजा का स्वर्गवास हो गया। उसकी कोई संतान नहीं थी। उसके राज्य में बाज पक्षी प्रशिक्षित किया हुआ था। मंत्री परिषद् के सदस्यों ने यह निर्णय किया कि इस बाज पक्षी को उड़ाया जाये। यह जिसके ऊपर जाकर बैठ जाएगा, उसको राजा बना देंगे। निर्णय के अनुसार बाज पक्षी को उड़ाया गया। वह उड़ते-उड़ते तालाब के पास बैठे लकड़हारे के कंधे पर जाकर बैठ गया। सबने उसको राजा के रूप में स्वीकार किया। उस लकड़हारे को महलों में लाया गया। उसे सुसज्जित किया गया और अच्छे मुहूर्त में राज्याभिषेक कर दिया गया। लकड़हारा युवावस्था का था। इसलिए राज्य का युवा राजा बन गया। उसका मंत्री असी वर्ष का वृद्ध था। राज्याभिषेक का कार्यक्रम संपन्न होने के बाद





धर्मशास्त्र का सार है - प्राणियों के प्रति दया करना। दया यानी अनुकर्म्मा। आदमी के जीवन में अनुकर्म्मा आ जाये कि मैं किसी को तकलीफ न दूँ मैं किसी का बुरा न करूँ। दुःखियों को देखकर कंपन हो कि दुःखियों का दुःख दूर कैसे हो? उन्हें सुख कैसे मिले? चित्तसमाधि कैसे मिले? यह चेतना जाग जाती है तो धर्म का एक बहुत बड़ा सार जीवन में आ जाता है।

नवाभिषिक्त राजा जब सिंहासन से नीचे उतरा, तब वृद्ध मंत्री के कंधों का सहारा लेकर उतरा। वृद्ध मंत्री को हँसी आ गयी।

राजा - "मंत्री महोदय! आपको हँसी किस बात की आयी?"

मंत्री - "महाराज! मैं तो अस्सी वर्ष का वृद्ध व निर्बल आदमी हूँ और आप चालीस वर्ष के युवा व सबल पुरुष हैं। आपने मेरा सहारा लिया, यह कहाँ तक उचित बात है?"

राजा ने बड़ी मार्मिक बात कही - "मंत्री महोदय! आपकी बात उचित है। मुझे क्या जरूरत थी सहारा लेने की? पर इस सहारे के माध्यम से मैं यह बताना चाहता हूँ कि मैं तो लकड़हारा था, अनपढ़ आदमी था, अब मैं सिंहासन पर बैठ गया हूँ, राजा बन गया हूँ, पर मेरे पास ज्यादा बौद्धिक विकास नहीं है। इसलिए मैं आप जैसे बुद्धिमान मंत्री का सहारा लेकर राज्य का संचालन करूँगा।" कितनी गहरी बात एक अनपढ़ राजा ने आसानी से कह दी। दूसरों का सहारा भी लिया जा सकता है, पर मूल बात है स्वयं का विकास होना चाहिए।

आदमी केवल वाग्विलास ही न करे, वाणी से जो कहे वह क्रियात्मक रूप में करके दिखाये। जो व्यक्ति केवल बात करता है, किन्तु वैसा आचरण नहीं करता, वह सुगन्धहीन पुष्प के समान

होता है। बात करने वाला व्यक्ति यदि साथ में काम भी करे तो उसका जीवन सफल होता है, उसकी वाणी सफल होती है।

जो प्रमुख होता है, वह पथदर्शन दे और कार्यकर्ता में प्रोत्साहन का प्राण फूँकता रहे तो कार्यकर्ता बड़ी निष्ठा के साथ कार्य कर सकता है। उसे प्रोत्साहन न मिले, प्रेरणा न मिले, पथदर्शन न मिले तो धीरे-धीरे कार्यकर्ता रूपी जो फूल है, वह मुरझा भी सकता है। फूल मुरझाये नहीं। इसलिए सिंचन की आवश्यकता होती है। हमारी बाल-पीढ़ी एक नयी पौध है। ज्ञानशाला के माध्यम से इस पीढ़ी को सिंचन देने का प्रयास किया जा रहा है। आज जो बच्चे हैं, वे कभी बड़े होंगे और अच्छे कार्यकर्ता बन सकेंगे। उनको संस्कार देने की अपेक्षा है। उन्हें तैयार करने की अपेक्षा है। हमारी प्रशिक्षिकाएं और कार्यकर्ता अपनी शक्ति का प्रयोग करते हुए बच्चों को संस्कारी बनाने का प्रयास करें और उन्हें सारपूर्ण बातें बताएं।

राजा का अभी कुछ दिन पहले ही आभिषेक हुआ था, चार पंडित आये और बोले - "महाराज! हम आपके राज्य के पंडित हैं। आप नये राजा बने हैं। इसलिए हम चार बड़े-बड़े शास्त्र आपको भेंट करने आये हैं। प्रत्येक शास्त्र में संस्कृत भाषा के एक-एक लाख श्लोक हैं। आप उनका गहराई से अध्ययन करें तो आपके राज्य-संचालन में बड़ी सुविधा होगी।"

राजा बोला - "पंडित प्रबरो! आप सबका मैं सम्मान करता हूँ, पर मैं तो राज्य-संचालन में इतना व्यस्त रहता हूँ कि चार लाख श्लोकों का अध्ययन करने का समय मेरे पास नहीं है। आप मुझे संक्षेप में कोई बात बताओ तो मैं ध्यान दे सकता हूँ।" संक्षेप करते-करते आखिर यह फैसला हुआ कि एक श्लोक बना दिया जाये। उसमें चारों शास्त्रों का सार आ जाये। चारों पंडितों ने अपने-अपने शास्त्र का सार एक-एक चरण में गुणित कर दिया। वह श्लोक इस प्रकार है-

जीर्णं भोजनमात्रेयः, कपिलः प्राणीनां दयाः।

बृहस्पतिरविश्वासः, पंचालः स्त्रीषु मार्दवः॥।

पहला स्वास्थ्य शास्त्र है। उसका विद्वान आत्रेय है। स्वास्थ्यशास्त्र का सारपूर्ण सिद्धान्त है - 'जीर्णं भोजनं' अर्थात् पहले खाया हुआ भोजन पचने के बाद ही कुछ खाना चाहिए। उससे पहले नहीं खाना चाहिए। दूसरा पंडित बोला - "महाराज! मैं धर्मशास्त्र का विद्वान कपिल हूँ। धर्मशास्त्र का सार है - प्राणियों के प्रति दया करना। दया यानी अनुकर्म्मा। आदमी के जीवन में अनुकर्म्मा आ जाये कि मैं किसी को तकलीफ न दूँ मैं किसी का बुरान करूँ। दुःखियों को देखकर कंपन हो कि दुःखियों का दुःख दूर कैसे हो? उन्हें सुख कैसे मिले? चित्तसमाधि कैसे मिले? यह चेतना जाग जाती है तो धर्म का एक बहुत बड़ा सार जीवन में आ जाता है।" तीसरा राजनीतिशास्त्र का विद्वान बृहस्पति बोला - "महाराज! हमारे राजनीतिशास्त्र का एक सारभूत सिद्धान्त यह है कि किसी का विश्वास नहीं करना चाहिए। जैसा मौका देखे, वैसा काम कर लेना चाहिए।" चौथा कामशास्त्र अथवा सौन्दर्यशास्त्र का विद्वान पंचाल बोला - "महाराज! हमारे कामशास्त्र या



प्रेरक दृष्टिंत

मौन धर्म-चर्चा

एक संन्यासिनी और एक संन्यासी अपने-अपने शिष्यों के साथ दो विपरीत दिशाओं से आ रहे थे। एक स्थान पर वे दोनों आमने-सामने हो गये। शिष्यों ने सोचा कि उनके गुरु परस्पर चर्चा करेंगे, किन्तु वे दोनों मौन खड़े रहे।

कुछ समय बाद संन्यासी ने एक पैर उठाया। संन्यासिनी के शिष्यों ने समझा - "बाबा कहता है कि देखती क्या हो, मैं तुम्हें पैर से कुचल दूँगा।"

उसी समय संन्यासिनी ने अपना मुँह खोलकर फैलाया। संन्यासी के शिष्यों ने सोचा- "माँ कह रही है कि तुमने मेरे पैर लगाया तो मैं तुम्हें कच्चा ही चबा जाऊँगी।"

संन्यासिनी और संन्यासी दोनों शान्त भाव से खड़े थे, पर उनके शिष्यों ने आवेश में आकर लाठियां उठा लीं और मरने-मारने पर उतारू हो गये।

शिष्यों की यह हालत देख वे बोले - "बिना कारण ही संघर्ष क्यों कर रहे हो?" शिष्यों ने अपने-अपने मन का सन्देह खोला।

संन्यासी बोला- "तुम लोग कितने मूँह हो! हम तो आपस में चर्चा कर रहे थे।"

यह बात सुन दोनों पक्षों के लोग स्तब्ध रह गये। उन्होंने कहा - "चर्चा, कैसी चर्चा! आप तो बोले ही नहीं।"

संन्यासी बोला- "हमारी चर्चा पूरी हो गई। हमारे प्रश्नों का समाधान हो गया।"

शिष्यों द्वारा आग्रह करने पर बाबा ने चर्चा का रहस्य खोलते हुए कहा- "मेरा प्रश्न था कि एक पैर उठाया है, दूसरा उठ सकेगा या नहीं।"

संन्यासिनी बोली- "मैं बाबाजी के विचारों से सहमत हूँ। मैंने इनके प्रश्न को उत्तरित करते हुए मुँह खोला था। इसका अर्थ है - एक श्वास आ गया, दूसरा आएगा या नहीं, इसका कोई भरोसा नहीं है। हमारी इस संक्षिप्त सांकेतिक चर्चा का सार है जीवन की क्षणभंगुरता। प्रथम क्षण मनुष्य जीवित है, पर दूसरे क्षण का किसी को कोई पता नहीं है।"

आदमी में अपना विवेक जागना चाहिए। विवेकहीन आदमी मित्र भी होता है तो नुकसान कर देता है और विवेक सम्पन्न आदमी कई बार शत्रु होता है तो भी भला कर देता है। बच्चों में भी ऐसी विवेक चेतना जागे कि वे समाज की पवित्र सेवा कर सकें। वे परिवार के लिए समस्या नहीं, अपितु परिवार के लिए समाधान बन जाएं।

सौन्दर्यशास्त्र का सार है कि स्त्रियों के प्रति मृदुतापूर्ण व्यवहार करना चाहिए।"

संक्षेप में सारपूर्ण बातों का अधिक महत्व होता है। बच्चों के दिमाग में ऐसी छोटी-छोटी बातें जमा दें कि ज्ञान नहीं बोलना, लड़ाई-झगड़ा नहीं करना, नशा नहीं करना, गुस्सा नहीं करना। ऐसी कुछ बातें बच्चों के अवचेतन मन तक पहुँचा दें।

आदमी में अपना विवेक जागना चाहिए। विवेकहीन आदमी मित्र भी होता है तो नुकसान कर देता है और विवेक सम्पन्न आदमी कई बार शत्रु होता है तो भी भला कर देता है। किसी राजा के पास कलाकार आया। उसके पास कई बन्दर थे। राजा ने बन्दरों को देखा। वे बन्दर अच्छे लगे। कलाकार ने कहा - "महाराज! इन बन्दरों को मैंने प्रशिक्षित किया है। मैं एक बन्दर आपको उपहार में देना चाहता हूँ। यह बन्दर आपकी सेवा करेगा, परिचर्या करेगा। यह युद्ध कला का भी जानकार है। आप इसको तलवार हाथ में दें तो यह युद्ध भी कर सकता है, यह पहरा भी दे सकता है।"

राजा ने एक बन्दर को स्वीकार कर लिया। राजा उस बन्दर को अपने पास रखता। राजा को बन्दर से इतना प्रेम हो गया कि वह मित्र जैसा बन गया। राजा शयन करता तो बन्दर राजा के पास बैठा रहता। राजा ने तलवार उसके हाथ में दी तो उसने करतब दिखाया कि मैं युद्ध भी कर सकता हूँ और आपकी रक्षा भी कर सकता हूँ।

राजा ने कहा - "तुम मेरे बॉडीगार्ड बन जाओ। तुम मेरे शरीर की रक्षा करना।"

बन्दर ने कहा - "मुझे मंजूर है।"

बन्दर ने राजा की रक्षा करने का संकल्प कर लिया, पर आखिर था तो बन्दर का बन्दर। विवेक तो था नहीं। एक बार राजा सोया हुआ था। बन्दर तलवार हाथ में लिये पास में बैठा था। एक मक्खी राजा के मुँह पर बैठ गयी। बन्दर के कहने से वह उड़ी नहीं तो बन्दर ने तलवार से बार किया। मक्खी तो उड़ गयी, पर साथ में राजा का चेहरा भी कट गया। कहने का तात्पर्य है कि विवेकहीन सेवक भी किस काम का? विवेकहीन मित्र भी किस काम का? विवेकहीन कोई भी व्यक्ति काम का नहीं होता। बच्चों में भी ऐसी विवेक चेतना जागे कि वे समाज की पवित्र सेवा कर सकें। वे परिवार के लिए समस्या नहीं, अपितु परिवार के लिए समाधान बन जाएं।





हेल्थ इंश्योरेंस - मेडिक्लेम केशलेस



10 लाख
का मेडीक्लेम
@ 39 प्रतिदिन में
'पॉलिसी 3 वर्षों में
20 लाख हो जायेगी'

20 लाख
का मेडीक्लेम
@ 49 प्रतिदिन में
'पॉलिसी 3 वर्षों में
40 लाख हो जायेगी'

50 लाख
का मेडीक्लेम
@ 55 प्रतिदिन में
'पॉलिसी 3 वर्षों में
1 करोड़ हो जायेगी'



प्रेग्नेंसी कवर 2 लाख
का सिर्फ 1 साल वेटिंग में
@199 प्रतिदिन में.



65 की उम्र तक हेल्थ इंश्योरेंस
बगैर मेडिकल चेकअप
लिमिटेड समय ऑफर !!!



सुपर टॉप अप

20 लाख का @ ₹ 7 प्रतिदिन में
'आपकी पुरानी पॉलिसी को
छोटी सी प्रीमियम देके बढ़ाए '



प्रीमीयम डिस्काउंट

2 वार्षिक 7.50% | 3 वार्षिक 10%



हेल्थ इंश्योरेंस में EMI फैसिलिटी ?

सिर्फ 30% प्रीमियम का डाउन पेमेंट करना
होगा. और बाकी अमांट EMI में लेंगे,
जिसमें 2 EMI से लेकर 30 EMI तक का
ऑप्शन सिलेक्ट कर सकते हो.



10 लाख की एक्सीडेंटल पॉलिसी ₹. 7 प्रतिदिन में !

'एक्सीडेंट के बेड-रेस्ट से मिलेगा
हर हफ्ते ₹. 5000 सैलरी का
मुआफ़ज़ा, अगले 100 हफ्तों तक !'



हमारे द्वारा मेडिक्लेम में बेस्ट फैसिलिटी

- हॉस्पिटल कमरे की कोई सीमा नहीं
- इलाज राशि की कोई सीमा नहीं
- ऑल इंडिया कैशलेस हॉस्पिटल की सुविधा
- कंस्यूमरेबल आइटम्स को कवर किया जाएगा
- क्लेम में कोई पैसा नहीं कटेगा
- फास्ट क्लेम सेटलमेंट की गारंटी
- 3 वर्षीय प्रीमियम पे 3 वर्ष का टैक्स बेनिफिट
- हर्ष वर्ष बढ़ता हुआ कवर

पोर्टेबिलिटी सुविधा क्या है ?



पोर्टेबिलिटी सुविधा से आप आपकी पुरानी पॉलिसी को पुराने बेनिफिट, पॉलिसी की प्रारंभ तारीख एवं
बोनस के साथ, दूसरी कंपनी में ट्रांसफर कर सकते हैं. अगर आपकी पॉलिसी 2 साल से पुरानी है, तो आपकी
पॉलिसी में वेटिंग पीरियड नहीं आएगा और आप अगले दिन से क्लेम कर सकते हैं.

हमारे हजारों क्लेम सेटलमेंट में से कुछ ग्राहकों के क्लेम राशि की झलक



संजय-नितेश धाकड़	मुलेश्वर	₹. 28,22,147/-	अर्जुन सांखला	गोरेगांव	₹. 26,95,047/-
प्रकाश सिसोदिया	मुलेश्वर	₹. 25,15,000/-	छ्यालीलाल कोठारी	मिवडी	₹. 20,00,200/-
महेंद्र कोठारी	चैंबूर	₹. 17,11,000/-	मनोज शर्मा	चर्नी रोड	₹. 15,18,450/-
प्रवीण बघावत	वरली	₹. 14,38,372/-	दिनेश कच्छारा	मुलेश्वर	₹. 14,12,947/-
तेजराज गन्ना	सांताकुड़ा	₹. 13,42,177/-	रोशनलाल मेहता	उरण	₹. 12,11,145/-
रमेश पामेचा	नाना चौक	₹. 11,35,902/-	हस्तीमल परमार	मालाड	₹. 8,25,516/-



Ganpat Dagliya
Gold Medalist
T.O.T - U.S.A



One Stop Insurance Solution in India !

Since 40 Years | 30000+ Happy Clients | 11000+ Claims Solved | 300 Awards Won
Policies : Health | Jewellers | Factory | Building | Travel | Mutual Funds

हमारी सेवाएँ पूरे भारत में ऑनलाइन द्वारा ले सकते हैं।



Chirag Dagliya
M.B.A & Harvard Cert.
T.O.T - U.S.A

A 801/802/803, Shreepati Aradhana, 8th floor, Dr. A. M. Road, Kabutar Khana, Nr. Kalbadevi, Marine Lines (E), Mumbai - 400 002.

Email : info@niceinsure.com | www.niceinsure.com ☎ 022 - 46090022/23/24 ☎ Intercom: 5050

₹ +91 98692 30444 | 98690 50031



समाज सुधार के लिए शुरू किये गये किसी भी आंदोलन की सफलता का सूत्र है उसकी उपादेयता, प्रासादिकता और स्वीकार्यता। समाज के सर्वमान्य व्यक्ति यदि उस सुधारवादी आंदोलन की उपादेयता और प्रासादिकता को मुक्त करने से स्वीकार कर लेते हैं तो आमजन भी उस आंदोलन के दर्शन का अनुसरण करने की दिशा में अग्रसर होते हैं। अणुव्रत आंदोलन के प्रारम्भिक काल से ही तत्कालीन समाज के गणमान्य महानुभावों ने इसकी महत्ता को स्वीकार किया तथा इसे अभिव्यक्ति भी दी। इस माह प्रस्तुत हैं कांग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष यू.एन. डेबर के विचार।

अणुव्रत आंदोलन एक चिराग ! एक ज्योति !

आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन के रूप में हमें एक चिराग दिया है, एक ज्योति दी है, उसे लेकर हम आज अनैतिकता के तिमिराच्छन्न वातावरण में नैतिक पथ प्राप्त कर सकते हैं, उसकी रोशनी में हम अपना काम निकाल सकते हैं। हर एक के मन में शक्ति छिपी है, उसको जागृत करके प्रत्येक व्यक्ति विकास कर सकता है।

जी वन के कई पहलू होते हैं। मनुष्य को अपने शरीर, परिवार, उसकी आर्थिक स्थिति और साथ ही साथ नैतिक जीवन-विकास की साधना की फिक्र करनी पड़ती है। पहले परिवार के लिए इंसान चिन्ता करता है, उसका दिमाग परेशान रहता है और आगे चलकर समाज की फिक्र करता है। यह सब इसलिए कि जिससे वह अपने निजी परिवार व समाज के जीवन को सम्भाल सके। मनुष्य पशु नहीं, उसका जीवन खाने-पीने तक ही सीमित नहीं है। उसमें पशु की अपेक्षा दो बातें विशेष रूप से हैं, एक तो आत्म-स्फुरण और दूसरी विवेक-बुद्धि। इनके उपयोग से ही मनुष्य का जीवन बनता है, आगे उसे बनाना है। अणुव्रत आत्म-स्फुरण का सन्देश ही जन-जन तक पहुँचा रहा है।

कुछ लोग सोचते हैं कि आर्थिक विकास हुआ तो सब ठीक हो जाएगा, पर वस्तुतः बात ऐसी नहीं है। दुनिया में ज्यादातर जो लोग हैं, वे न तो परिवार को छोड़ सकते हैं और न उसके मोह को, उसकी याद को, ऐसी हालत में कोई सहज मार्ग ढूँढ़ने की जरूरत

है। आचार्य श्री तुलसी ने करुणा बुद्धि से हमें वह रास्ता दिखाने के लिए अणुव्रत आन्दोलन शुरू किया है, जो जीवन के नैतिक स्तर को ठीक करता है। जिस तरह चतुष्कोण के एक कोण के ठीक हो जाने पर बाकी के तीन कोण स्वतः ठीक हो जाते हैं; उसी तरह जीवन के नैतिक पक्ष के ठीक हो जाने से उसके अन्यान्य पहलू भी स्वतः सुधर जाते हैं।

रूपया-पैसा जीवन का लक्ष्य नहीं है। इससे आदमी न गिरता है, न चढ़ता है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति ने रूपये-पैसे पर कभी जोर नहीं दिया। भारत की यह सांस्कृतिक विशेषता रही है। हमारे मस्तक सदैव उन अकिञ्चनों के चरणों में झुके हैं, जिन्होंने मानव जाति को आगे से आगे ले जाने की कोशिश की, जिन्होंने रूपये-पैसे से इमारत बनाने के प्रयत्न करने के बजाय सदा नैतिक विकास द्वारा मानव जीवन को उन्नत करने की चेष्टा की। गांधीजी के पास क्या था? आचार्य श्री तुलसी के पास कौन-से रूपये हैं? हम उनके आगे झुकते हैं, क्यों? क्योंकि उन्होंने उस



एक नैतिक कोण को ठीक किया है, जिसके द्वारा हमारे जीवन का बहुमुखी विकास होने वाला है। हम भी सोचें, इस ओर हम क्या कर सकते हैं? पहला कदम रखने में कठिनाई जरूर महसूस होती है, पर यह ठीक वैसी ही है जैसे सर्दी के मौसम में तालाब में पैर देने की शिक्षा। मन का स्वभाव ही अधिक से अधिक कठिनाइयों से बचने का है। इन्द्रियों का प्रभाव सहज ही घटना नहीं चाहता। हमारा दिमाग बन गया है कि रुपये-पैसे के बिना काम नहीं चल सकता, पर दृढ़ निष्ठा के सामने रुपये-पैसे का आकर्षण और कठिनाइयों का भय दूर हो जाता है।

सूरज के निकलने पर अंधेरा भाग खड़ा होता है और उसके अस्त होते ही चारों ओर अन्धकार अपनी चादर फैला देता है, परन्तु उस हालत में भी यदि हमें कोई छोटा-सा दीपक मिल जाये तो अपना रास्ता देख सकते हैं। आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन के रूप में हमें एक चिराग दिया है, एक ज्योति दी है, उसे लेकर हम आज अनैतिकता के तिमिराच्छन्न वातावरण में नैतिक पथ प्राप्त कर सकते हैं, उसकी रोशनी में हम अपना काम निकाल सकते हैं। हर एक के मन में शक्ति छिपी है, उसको जागृत करके प्रत्येक व्यक्ति विकास कर सकता है।

आज शरीर को खिलाने-पिलाने व मन को बहलाने के लिए तरह-तरह की कोशिशें हो रही हैं, पर शरीर तो मिटने वाला है। धन, इमारत और वैभव आदि सदा टिकने वाले नहीं हैं। फिर वह कौन-सी चीज है, जो इन सबके जाने पर भी बनी रहती है और जो इनके आने से पहले भी थी। वह चीज आत्म-तत्त्व है। उस चीज को देखें, जिस पर शरीर चल रहा है, सारा संसार टिका हुआ है। उसे देखने व समझने की जरूरत को समझें। भारतीय ऋषियों ने इसी आत्म-तत्त्व को खोजकर समझाया है। जहाँ तक शरीर का प्रश्न है, उसे खिलाने-पिलाने की कोशिश करना बालू पर भीत बनाने जैसा लगता है।

भारत ने इसमें संशोधन करके बताया कि जब तक इंसान आत्मा की ओर नहीं देखता, तब तक उसमें व पशु में कोई अन्तर नहीं, पर आज दुनिया ने इस सही तत्त्व को भुला दिया है और यह भौतिक समृद्धि की ओर भाग रही है। अब हालत यह हो गयी है कि हम दिन-रात राम, कृष्ण, बुद्ध व महावीर का जाप करते हैं, पर हमारा व्यवहार इतना नीचे चला जा रहा है कि वे महापुरुष यदि हमें देखें तो क्या कहेंगे? उनकी आँखों में आँसू के सिवा कुछ नहीं दिखायी देगा और फिर जहाँ आँखों में आँसू हों, वहाँ आशीर्वाद कैसा?

हमारे बोलने और दिनभर के आचरण में कितना अन्तर आ गया है। अणुव्रत आन्दोलन उस अन्तर को पाट देना चाहता है। आचार्य श्री तुलसी की शिक्षा को हम सभी हृदय से स्वीकार करें, इस खयाल को लेकर कि इसमें बहुत बड़ी ताकत भरी है। संकल्पों और व्रतों की असीम शक्ति हमें उस मंच पर ले जाएगी, जहाँ न हमारा विनाश होगा और न समाज व परिवार का। अणुव्रत आन्दोलन की यह मंगलकारी भावना देशभर में फैले, मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है। ■

गीत

नया तराना

■ भगवती प्रसाद द्विवेदी - पटना ■

जब से देना सीखा,
सचमुच पाना सीख लिया।

हसिल करने की खातिर ही
बहा पसीना-खून,
प्यास बूँद की, सागर
हथियाने का रहा जुनून,
कर पिपासु को तृप्त,
तृप्त हो जाना सीख लिया।

खूब ऐंठ थी, खूब अकड़
क्या खूब सुभीता था,
भरा-भरा-सा रहा, मगर
अंदर से रीता था,
निझर-सा बहने का
नया तराना सीख लिया।

जब तक और-और पाने की
भूख सताती थी,
तब तक कुदरत के जादू पर
नजर न जाती थी,
परमानंद मिला, सर्वस्व
लुटाना सीख लिया।

अब पक्षी, तितली, फूलों से
प्राणवायु मिलती,
हर वंचित में नारायण पा
मन-कलिका खिलती,
काँटों में बिंधकर भी अब
मुस्काना सीख लिया।



स्वतंत्रता के मायने

राजनीति और कानून दोनों ही स्वतंत्रता को एक स्व-स्पष्ट सत्य मानते हैं, खासकर एक आधुनिक उदार लोकतंत्र में। ऐसे में स्वतंत्रता राज्य और नागरिक के बीच संबंधों तक सीमित हो जाती है और आशा की जाती है कि इसका अंततोगत्वा प्रभाव समाजों पर भी पड़ेगा और उनके भी लोकतात्रिक बनने की राह प्रशस्त होगी।

स्व तंत्रता के असली मायने को समझने के लिए हजारों वर्षों से कोशिशें जारी हैं और सैकड़ों विद्वानों व दर्शनशास्त्रियों ने अपनी-अपनी अवधारणाएं दी हैं। यह माना जाता है कि स्वतंत्रता वह स्थिति या अधिकार है जिसमें आप बिना किसी नियंत्रण या सीमा के जो चाहें कर सकें, कह सकें, सोच सकें आदि। जिंदगी को अपने तरीके से जीना, अपना आनंद खुद निर्धारित करना तथा किसी और के जीवन में हस्तक्षेप किये बिना उस आनंद को पाने का प्रयत्न करना स्वतंत्रता का अर्थ होता है। वास्तव में स्वतंत्रता एक नैसर्गिक मानवीय मूल्य है जिसका छीना जाना परतंत्रता की स्थिति होती है। इसी कारण अधिकतर लोगों के लिए यह प्रश्न राज्य में व्यक्तिगत अधिकारों का भी हो जाता है।

हम स्वतंत्रता को मुक्तिदायी आदर्श के रूप में देखते हैं और इसके पीछे अनेक बेहतरीन कारण भी हैं। पूरे मानव इतिहास में, स्वतंत्र होने की इच्छा ने हाशिये पर पड़े अनगिनत समूहों को राजनीतिक और आर्थिक अभिजात वर्ग के शासन को चुनौती देने के लिए प्रेरित किया है। स्वतंत्रता वह नारा भी रहा जिसे लगाते हुए क्रांतिकारियों ने निरंकुश राजा-महाराजाओं, अभिमानी अभिजात वर्ग और दासता की प्रथा में मालिक बने बैठे लोगों को

उखाड़ फेंका और पुरानी मानव विरोधी परंपराओं और व्यवस्थाओं को ध्वस्त किया। पश्चिम में अश्वेत नागरिक अधिकारों और स्त्री को बराबरी का हक दिलाने और लोकतंत्र को स्थापित करने के लिए भी स्वतंत्रता के नाम पर लड़ाइयां लड़ी गयीं। दूसरी तरफ प्रगतिवादियों ने भी मजदूरों पर से मालिकों के आर्थिक वर्चस्व को समाप्त कर उन्हें स्वतंत्र करने के लिए संघर्ष किया।

स्वतंत्रता की अवधारणा पर प्राचीन काल से ही दर्शनशास्त्र में चर्चा की जाती रही है, जिसमें विचारकों ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय के बारे में सिद्धांत प्रतिपादित किये हैं। समकालीन दर्शन में, स्वतंत्रता एक केंद्रीय अवधारणा बनी हुई है, जिसमें विचारक नियतिवाद, जिम्मेदारी और सामाजिक न्याय जैसे अन्य महत्वपूर्ण विषयों के साथ इसके संबंधों की खोज करते हैं।

स्वतंत्रता और दायित्व का आपस में नैतिक परिप्रेक्ष्य में गहरा संबंध देखा जाता है और कहा जाता है कि यदि व्यक्ति वास्तव में स्वतंत्र है, तो उसे अपने कार्यों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। इसीलिए स्वतंत्रता का एक अर्थ आत्मशासन भी बताया गया है। स्वतंत्रता का एक मायने विकल्प



चुनने का सामर्थ्य और क्षमता भी है। ऐसे में भी यह स्वतंत्रता व्यक्ति पर उसके परिणामों की जिम्मेदारी भी डालती है।

स्वतंत्रता और जिम्मेदारी के बीच का संबंध अत्यंत महत्व रखता है। यह व्यक्ति की प्रकृति, समाज की भूमिका और उसकी नैतिक परंपरा पर भी सवाल उठाता है। स्वतंत्रता की नैतिकता या व्यक्ति के नैतिक निर्णय लेने के बीच के अनबूझे संबंध को समझना आवश्यक है क्योंकि नैतिक जिम्मेदारी की प्रकृति और व्यक्तिगत व्यवहार को आकार देने में समाज की भूमिका के बारे में भी सवाल उठाये जाते रहे हैं। स्वतंत्रता की अवधारणा में व्यक्तियों का अपने लिए तथा दूसरों के लिए अपने कार्यों के परिणामों पर भी विचार किया जाता है। इससे व्यक्तिगत और सामूहिक स्वतंत्रता के बीच के संबंध और दोनों के बीच व्यवहार को विनियमित करने में राज्य की भूमिका के बारे में सवाल उठते रहे हैं।

स्वतंत्रता की बात दो स्तर पर की जाती है। एक व्यक्तिगत स्तर पर तथा दूसरे राजनैतिक व्यवस्था अथवा शासन-प्रणाली के स्तर पर। राजनैतिक व्यवस्था अथवा शासन-प्रणाली के संदर्भ में स्वतंत्रता के लिए 'स्वराज' शब्द का उपयोग होता रहा है। महात्मा गांधी ने 1931 में 'यांग इंडिया' में लिखा - "स्वराज एक पवित्र शब्द है, यह एक वैदिक शब्द है, जिसका अर्थ है स्वशासन तथा आत्मनिग्रह; इसका अर्थ सब प्रकार के संयमों से मुक्ति नहीं है, जैसा कि प्रायः स्वतंत्रता का अर्थ लगाया जाता है।" गांधी का यह कथन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह स्पष्ट करता है कि स्वतंत्रता उद्दंडता या मनमानी नहीं होती।

गांधी यह तो मानते हैं कि "अगर व्यक्तिगत स्वतंत्रता जाती रहे तो निश्चित समझिए कि सब कुछ चला गया क्योंकि अगर व्यक्ति का ही महत्व न रहा तो समाज में बचा ही क्या?" वे 1942 में 'हरिजन' अखबार में लिखते हुए अपने को और स्पष्ट करते हैं कि "व्यक्तिगत स्वतंत्रता ही मनुष्य को समाज सेवा के लिए स्वेच्छापूर्वक पूर्णतया समर्पित करा सकती है। अगर यह समर्पण उससे बलपूर्वक कराया जाएगा तो वह यंत्रचालित मनुष्य की तरह काम करेगा और उसके परिणामस्वरूप समाज बर्बाद हो जाएगा। मनुष्य को व्यक्तिगत स्वतंत्रता से वंचित करके संभवतः किसी समाज की रचना नहीं की जा सकती। यह मनुष्य की प्रवृत्ति के सर्वथा प्रतिकूल है।" किन्तु स्वतंत्रता का मतलब अशांति या हिंसा से काम लेने की आजादी नहीं है।

वर्तमान में स्वतंत्रता लोकतंत्र का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ माना जाता है। वास्तव में, राजनीति और कानून दोनों ही स्वतंत्रता को एक स्व-स्पष्ट सत्य मानते हैं, खासकर एक आधुनिक उदार लोकतंत्र में। ऐसे में स्वतंत्रता राज्य और नागरिक के बीच संबंधों तक सीमित हो जाती है और आशा की जाती है कि इसका अंततोगत्वा प्रभाव समाजों पर भी पड़ेगा और उनके भी लोकतात्रिक बनने की राह प्रशस्त होगी।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने 19 अक्टूबर, 1929 को लाहौर के एक छात्र सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा था - "यदि हम

अगर व्यक्तिगत स्वतंत्रता जाती रहे तो निश्चित समझिए कि सब कुछ चला गया क्योंकि अगर व्यक्ति का ही महत्व न रहा तो समाज में बचा ही विद्या।"

विचारों में क्रांति लाना चाहते हैं तो सबसे पहले हमारे सामने एक ऐसा आदर्श होना चाहिए जो हमारे पूरे जीवन को एक उमंग से भर दे। यह आदर्श स्वतंत्रता का है।" लेकिन स्वतंत्रता एक ऐसा शब्द है जिसके बहुत सारे अर्थ हो सकते हैं। स्वतंत्रता से नेताजी का आशय ऐसी स्वतंत्रता से था "जो व्यक्ति और समाज की हो, अमीर और गरीब की हो, स्त्रियों और पुरुषों की हो तथा सभी लोगों और बर्गों की हो।" उनका कहना था कि यह आदर्श व्यवहार, जिससे सामाजिक असमानताओं का अंत होगा, अनेक को "स्वप्न-सरीखा" लग सकता है लेकिन "केवल यही आदर्श आत्मा की भूख मिटा सकता है।"

कुछ दार्शनिक मानते हैं कि उस "स्वप्न-सरीखी स्वतंत्रता" के बारे में सोचना ही बेकार की बात है, क्योंकि कोई व्यक्ति बिना किसी विरोधाभास में फँसे स्वतंत्रता की कल्पना नहीं कर सकता। यह तो ठीक है कि हम स्वतंत्र हैं और इसलिए जिम्मेदार हैं, लेकिन आंतरिक स्वतंत्रता (स्वतंत्र इच्छा) कार्य-कारण (एकशन एंड कौज) के प्राकृतिक सिद्धांतों से पूरी तरह मेल नहीं खाती।

भौतिक दुनिया में, सब कुछ कार्य-कारण द्वारा शासित आवश्यकता के अनुसार होता है। इसलिए, यह मानते हुए कि हम पूरी तरह से भौतिक प्राणी हैं जो भौतिकी के नियमों द्वारा शासित हैं, मानव स्वतंत्रता के विचार पर विचार करना भी असंभव है। इसके विपरीत यह कहना कि हम स्वतंत्र प्राणी हैं, स्वचालित रूप से यह मान लेना होता है कि हम एक स्वतंत्र कारण हैं - यानी, हम अपनी इच्छा से कुछ ऐसा करने में सक्षम हैं जो भौतिक दुनिया में स्वयं बिना कारण के होता है।

'पारलौकिक इच्छा' का यह विचार, जिसे सबसे पहले इमैनुअल कांट ने दिया था, का कहना है कि स्वतंत्र इच्छा का गैर-भौतिक संचालन होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, वह भौतिक दुनिया की प्रणाली का हिस्सा नहीं होना चाहिए। इस प्रकार यह दार्शनिक भी स्वतंत्रता के मुद्दे को पूरी तरह से संबोधित नहीं कर पाया।

दार्शनिक एपिकूरु के अनुसार, नैतिक रूप से स्वतंत्रता का अर्थ 'सभी इच्छाओं को पूरा करना' नहीं है, बल्कि व्यर्थ, अनावश्यक या व्यसनकारी इच्छाओं से मुक्त होना है, जबकि दुनिया को इतिहास की वैज्ञानिक दृष्टि देने वाले विचारक कार्ल मार्क्स का मानना था कि 'ऐतिहासिक आवश्यकताओं का ज्ञान ही स्वतंत्रता है।'

जयपुर निवासी लेखक करीब 50 वर्ष से पत्रकार के रूप में संचार के सभी माध्यमों में सक्रिय हैं। विज्ञान, अर्थशास्त्र तथा कला जगत में वे विशेष रुचि रखते हैं।

सबकी हो स्वतंत्रता

मानव समाज एक ही स्थान या पृथ्वी के अनेक स्थानों पर टुकड़ों-टुकड़ों में बँटा है - धर्म, राजनीति, दर्शन, संस्कृति, रंग आदि के आधार पर। हर टुकड़ा अपनी स्वतंत्रता चाहता है। इसमें कोई खास बुराई नहीं है। बुराई तब आती है या टुकड़ा-स्वतंत्रता तब भ्रमित हो जाती है जब अपने से इतर टुकड़ा-स्वतंत्रता को समकक्ष मान्यता न दी जाये।

स्व तंत्रता को यदि एक वाक्य में व्याख्यायित किया जाये तो कह सकते हैं कि किसी भी तरह की दासता या गुलामी से खुद को मुक्त कर लेना, लेकिन स्वतंत्रता के आशय अलग-अलग संदर्भ के साथ बदल भी जाते हैं। ये संदर्भ व्यक्ति, समाज, भूगोल, संस्कृति, सभ्यता आदि के रूप में अनेक होते हैं। व्यक्ति के रूप में मनुष्य अपने सहज स्वभाव से स्वतंत्रता कामी होता है। अपने मन का मौजूदा, लेकिन समाज के रूप में अपनी स्वतंत्रता के लिए उसे निरंतर संघर्ष करना होता है।

व्यक्ति के स्तर पर, स्वतंत्रता के लिए मनुष्य का संघर्ष खुद से होता है। खुद को गुलाम बनाने के प्रयास में लगी खुद अपनी ही इंद्रियों से। अपनी ही भीतरी सही आवाज को दबाने में निरंतर लगी हुई अपनी ही भीतरी प्रतिकूल पथभ्रष्ट करने वाली ललचाती ताकतों से। यह वह स्थिति होती है जहाँ अच्छाई और बुराई में भ्रम पैदा करने के प्रयास जुटे होते हैं। स्वाभिमान और अहंकार, सद्भावना और अराजकता, सेवा और तानाशाह जैसे कितने ही भावों की समझ को भ्रमित किया जा रहा होता है।

यहाँ व्यक्ति के रूप में सबसे बड़ी चुनौती होती है अपनी ही सीमाओं से बाहर आना। लोभ, मोह, स्वार्थ आदि से मुक्ति पाने की राह अपनाना। 'मैं' की निजता को महत्व देना लेकिन 'मैं' को

केवल 'मैं' ही की कैद में रखने से बचना अर्थात् अपना आपा मिटाना। अपने 'मैं' की निजता में दूसरे की निजता को स्वीकृति देना और इस प्रकार निज और पर के अंतर से ऊपर उठ जाना। इसके लिए हमें सिद्ध ऋषियों, मुनियों, तपस्वियों आदि को ध्यान में रखना होगा।

समाज के संदर्भ को देखा जाये तो सिद्धांत रूप में बुनियादी तौर पर व्यक्ति-संदर्भ की ही राह लेनी होती है। फर्क यह हो जाता है कि मानव समाज एक ही स्थान या पृथ्वी के अनेक स्थानों पर टुकड़ों-टुकड़ों में बँटा है - धर्म, राजनीति, दर्शन, संस्कृति, रंग आदि के आधार पर। हर टुकड़ा अपनी स्वतंत्रता चाहता है। इसमें कोई खास बुराई नहीं है। बुराई तब आती है या टुकड़ा-स्वतंत्रता तब भ्रमित हो जाती है जब अपने से इतर टुकड़ा-स्वतंत्रता को समकक्ष मान्यता न दी जाये। यही नहीं, इतर टुकड़ा-स्वतंत्रता को बलपूर्वक या चालाकी से नष्ट करने या खुद में लीन करने का प्रयत्न किया जाता है। लब्बोलुआब यह है कि जब मनुष्यता को तिरोहित करके टुकड़ा-स्वतंत्रता की बात की जाती है तो स्वतंत्रता के सही मायने भ्रमित और धूमिल हो जाया करते हैं।

यहाँ हमें समाजचेता साहित्यकारों को, समाज शास्त्रियों को विशेष रूप से ध्यान में लाना होगा। खासकर संप्रदायवाद,



मुल्क

■ महेश कुमार केशरी - बोकारो ■



"माँ तुम रो क्यों रही हो?" सादिक ने अमीना बीबी के कंधे पर धीरे-से हाथ रखकर पूछा।

"नहीं, मैं रो कहाँ रही हूँ?"

"रो नहीं रही तो तुम्हारी आँखों से आँसू कैसे निकल रहे हैं?" सादिक वैसे ही बोल रहा था जैसे वह माँ की बात को ताड़ गया हो। "कुछ नहीं होगा...हम लोग कहीं नहीं जा रहे हैं।" सादिक ने माँ को जैसे विश्वास दिलाते हुए कहा।

अमीना बीबी का बड़ी मुश्किल से जब किया हुआ बाँध जैसे भरभराकर टूट गया और वह रुआँसे स्वर में बोलीं - "ऐसा ही गुलमोहर का एक पेड़ हमारे यहाँ भी हुआ करता था। तुम्हारे अब्बा ने उसे लगाया था। इस गुलमोहर के पेड़ को देखकर तुम्हारे अब्बा की याद आती है। सोचा, इस गुलमोहर के पेड़ को ही देखकर मैं बाकी की बची-खुची जिंदगी भी जी लूँगी। मैंने यहाँ बहुत समय निकाल दिया। अब सोचती हूँ कि बाकी का समय भी इसी जमीन पर इसी गुलमोहर के नीचे काट दूँ। यहाँ की तरह ही वहाँ भी धूप के कतरे, पानी की प्यास और आदमी को लगने वाली भूख मैंने कोई अंतर नहीं पाया। बार-बार जड़ें नहीं खोदी जातीं...सादिक मियाँ! ऐसे गुलमोहर एक दिन में नहीं बनते।" ...और अचानक से अमीना बीबी जोर-जोर से रोने लगी।

सादिक ने माँ को अपनी बांहों में भर लिया और चुप कराने की कोशिश करने लगा। माँ को चुप कराते-कराते सादिक भी पता नहीं कब खुद भी रोने लगा।

राजनीतिक पार्टियाँ राजनीति करती रहेंगी, आरोप भी एक-दूसरे पर लगाती रहेंगी, लेकिन स्वतंत्रता दिवस मनाना सत्ताधारी और विरोधी पार्टियों सहित देश की पूरी जनता की जरूरत भी है और सबका धर्म भी।

धार्मिक कटूरता आदि मूल्यों से ऊपर उठे हुए किसी भी मानव समाज के पोषक और मनुष्यता को सर्वोपरि समझने वाले चिन्तक साहित्यकारों और समाज शास्त्रियों को। दार्शनिकों को भी।

जहाँ तक स्वतंत्रता के भूगोल के संदर्भ की बात है, यह लोगों से जुड़ा सर्वाधिक लोकप्रिय और भौतिक संदर्भ है। हमारे देश के संदर्भ में यह स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त की अवधारणा से जुड़ा है। एक भू-भाग जिसे हम देश या राष्ट्र के रूप में समझते हैं, उसकी स्वतंत्रता का अर्थ है उस भू-भाग के नागरिकों की स्वतंत्र या अपनी सत्ता। यह स्वतंत्रता, यदि चारों ओर निगाह दौड़ायी जाये तो पाएंगे कि यह लोकतंत्र, तानाशाही, फौजी हुकूमत आदि शासन-तंत्र के तहत दिखती है। सबसे उपयुक्त लोकतांत्रिक स्वतंत्रता ही मानी जाती है। दूसरे शासन-तंत्र वस्तुतः अपने नागरिकों को पराधीन बनाने या कहूँ कि नागरिकों की स्वतंत्रता छीनने की भूमिका ही निभाते हैं। अधिनायकवाद या साम्राज्यवाद इसी की पहचान है। इसके साथ ही समझना यह भी होगा कि एक भू-भाग के नागरिकों की लोकतंत्र सम्मत स्वतंत्रता भी एकांगी नहीं होती। इस स्वतंत्रता में भी दूसरे भू-भाग की स्वतंत्रता को समकक्ष रूप में स्वीकृति देना अनिवार्य रूप से निहित होता है।

स्वतंत्रता के रूप में एक पक्ष युद्ध का भी जुड़ा है। युद्ध का मसला बहुत ही पेचीदा है। युद्ध को व्यक्तिगत रूप से एकदम अवाञ्छित मानते हुए भी मैं युद्धविहीन विश्व की कल्पना नहीं कर पा रहा हूँ। हाँ, युद्ध के अस्तित्व को आत्मरक्षा के संदर्भ में स्वीकार करना ही पड़ता है। अपने हक के लिए लड़ना भी इस संदर्भ के अन्तर्गत स्वतंत्रता कामी ही माना जाएगा। संवाद और शांति की राह से अपनी स्वतंत्रता के हक के लिए लड़ना यूँ सर्वश्रेष्ठ राह होती है।

कुल मिलाकर, चाहे वह निजी स्तर पर हो, समाज के स्तर पर हो या देश के स्तर पर हो, स्वतंत्रता हर हाल में एक अनिवार्य जरूरत है। देश के संदर्भ में, स्वतंत्रता दिवस निश्चित रूप से एक बड़ा उत्सव होता है। इसे हर्षोल्लास के साथ मनाना सहज बात है। हमारा देश भी धूमधाम से मनाता है। राजनीतिक पार्टियाँ राजनीति करती रहेंगी, आरोप भी एक-दूसरे पर लगाती रहेंगी, लेकिन स्वतंत्रता दिवस मनाना सत्ताधारी और विरोधी पार्टियों सहित देश की पूरी जनता की जरूरत भी है और सबका धर्म भी।

नोएडा में रहने वाले लेखक, वरिष्ठ कवि, सुप्रतिष्ठित बाल साहित्यकार, अनुवादक, संपादक, आलोचक और चिंतक हैं। इनकी कई कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। ये अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुस्तकारों से अलंकृत हैं।



सूचनाओं के समंदर में हंस-विवेक की दरकार

व्यक्ति को समझना होगा कि वर्तमान में परोसी जा रही सूचनाएँ, खबरें और खबरों में जकड़े प्रलोभन उसके लिए कितने उपयोगी और कितने अनुपयोगी हैं। किन सूचनाओं का उसे स्वागत करना चाहिए और किनका बहिष्कार क्योंकि विकास के मोह में फँसा जीवन अब हंस-विवेक की माँग कर रहा है।

आज धरती से लेकर आसमान तक हर और बस खबरों ही खबरें सुनायी-दिखायी पड़ रही हैं। हर घड़ी हर पल प्रचारित-प्रसारित हो रही इन खबरों में न गुणवत्ता की परवाह है, न तथ्यों की कसौटियां, न गोपनीयता और न अखंडता के प्रति प्रतिबद्धताएँ। न ही जनमानस के आगे परोसी जा रही इन सूचनाओं में किसी भी प्रकार के सिद्धान्त की कोई गुंजाइश समझ में आती है, जबकि सूचना सुरक्षा के मूल सिद्धान्त गोपनीयता, अखंडता और उपलब्धता हैं। गोपनीयता के सिद्धान्त का उद्देश्य व्यक्तिगत जानकारी को उजागर न करते हुए किसी की निजता की रक्षा करना होता है। यह सिद्धान्त सुनिश्चित करता है कि दी जा रही सूचना केवल उन व्यक्तियों के लिए दूर्यमान होगी जिन्हें संस्थागत कार्यों को करने के लिए इसकी आवश्यकता होगी।

आज व्यक्ति के सामने सूचनाओं के अंबार में से अपने लायक उपयुक्त सूचना तलाश लेने की बड़ी चुनौती है। ऐसे में अगर कोई व्यक्ति गलत सूचनाओं के फेर में पड़ जाये तो वह अपने जीवन की यात्रा वैसी ही बना लेता है जैसे फलाई ओवर पर एक गलत टर्न लेने से मिनटों की यात्रा घंटों में परिवर्तित कर मुसाफिर सही मुकाम पर पहुँचने से चूक जाता है। सूचनाओं में शांति, धर्म, अहिंसा, सन्मार्ग, आनंद और ऐश्वर्य तलाशती दुनिया को मालूम

होना चाहिए कि सूचना मात्र जानकारी, इतिला, नोटिस, विज्ञापन, प्रतिवेदन भर है। स्थायी समाधान नहीं। स्थायित्व की चाह रखने वालों को सूचनाओं के इतर सोचना, देखना और समझना होगा।

समाज अपनी सुगंध व संस्कृति को बनाये और बचाये रखने के लिए सूचनाओं को तरजीह देता है। सामाजिक प्रविधियों के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी विशेष भूमिका निभाने वाले व्यक्तियों के अपेक्षित व्यवहार, मूल्यों, मानदंडों और सामाजिक कौशल को सीखा जा सकता है। सूचनाओं के माध्यम से मनुष्य समाज के विभिन्न व्यवहार, रीत-रिवाज, गतिविधियां इत्यादि को एक से दूसरे तक पहुँचाता रहा है। जैविक अस्तित्व से सामाजिक अस्तित्व में मनुष्य का रूपांतरण भी समाजीकरण के माध्यम से ही होता है और सूचना समाजीकरण में सहयोगी साबित होती आ रही है।

धर्म के चार स्तंभ - सत्य, तप, पवित्रता एवं दान बताये गये हैं। इन्हीं पर इंसानी जीवन की छत टिकी होती है लेकिन आज सूचना का महत्व जीवन से ज्यादा दिख रहा है। दिन-रात व्यक्ति के कान से लगकर कोई न कोई बोलता जा रहा है। पहले भी लोग हाथों में अखबार और कान से रेडियो लगाये फिरते रहते थे लेकिन तब सूचनाओं में सत्य की प्रामाणिकता कौतूहल से ज्यादा होती आ रही है।





क्या हम अपने आसपास दुष्प्रचार फैलाने से कम से कम अपने को रोक पा रहे हैं? या दुष्प्रचार के इस दौर में अपनों को समझा पा रहे हैं कि हर एक सूचना को सत्य, तप, पवित्रता एवं दान की कसौटी पर देखने के बाद सबसे बड़े धर्म मानवता की कसौटी पर देखने के पक्षधर बने रहें।

थी। दाल में नमक के बराबर कौतूहल मिलाकर उसे रोचक बनाया जाता था ताकि पढ़ने वाले और सुनने वाले को आनंद आये और वह मुद्दे की बात तक पहुँच सके, लेकिन अब सूचनाओं में सब उलट चुका है। अब दाल में नमक भर सत्यता मिल जाये तो बहुत बड़ी बात होगी। जबकि सूचना ज्ञान, संचार और मूल्य व गुणवत्ता निर्धारण का महत्वपूर्ण स्रोत है। वर्तमान समय में सूचनाओं को सत्य की कसौटी पर परखे बिना अगर इसके फेर में पढ़ गये तो हालत क्या होती है...सब जानते और समझते हैं।

वर्तमान समय में सूचना सुरक्षा खतरों की सैकड़ों श्रेणियाँ और लाखों ज्ञात खतरे हैं। आज सिर्फ राजनीति ही नहीं, उद्यम, सुरक्षा, स्वास्थ्य, धर्म, मनोरंजन, शादी-ब्याह आदि के प्रति आधी-अधूरी सूचनाएँ खतरे के निशान के ऊपर उपलब्ध हैं। गति और तकनीकी विकास के मौजूदा दौर में सुरक्षा उपायों में हर व्यक्ति यानी शहरी, ग्रामीण, व्यवसायी, नौकरीपेशा, किसान, मेहनतकश सबको कम-ज्यादा समझौते करने पड़ रहे हैं। कौन कब ठगी के जाल में फँस जाये, किसी को नहीं पता।

मन का स्थूल होना जीवन को कीचड़ के समान बना देता है। गोस्वामी तुलसीदास ने मन की तुलना पीपल के पत्तों से की है। जिस तरह तनिक-सी हवा के सिहरन से पीपल के पत्ते डोल उठते

गति और तकनीकी विकास के मौजूदा दौर में सुरक्षा उपायों में हर व्यक्ति यानी शहरी, ग्रामीण, व्यवसायी, नौकरीपेशा, किसान, मेहनतकश सबको कम-ज्यादा समझौते करने पड़ रहे हैं। कौन कब ठगी के जाल में फँस जाये, किसी को नहीं पता।

हैं, हमारे मन को भी इसी तरह संवेदनशील होना चाहिए। लेकिन पीपल के पत्ते उच्छृंखल नहीं, सुगठित होते हैं।

सूचनाओं के इस महान समय में क्या हम इस बात को ठीक से समझ पा रहे हैं? क्या हम अपने आसपास दुष्प्रचार फैलाने से कम से कम अपने को रोक पा रहे हैं? या दुष्प्रचार के इस दौर में अपनों को समझा पा रहे हैं कि हर एक सूचना को सत्य, तप, पवित्रता एवं दान की कसौटी पर देखने के बाद सबसे बड़े धर्म मानवता की कसौटी पर कसकर देखने के बे पक्षधर बने रहें। सूचनाओं का यह दौर जो भड़भूजे की तरह हमें भून देने पर आमादा है, हमारी तैयारी क्या होनी चाहिए...? और कितनी होनी चाहिए...? क्योंकि सही सूचनाओं से ही कुछ उपयोगी विमर्श हो सकता है।

अन्यथा गीतकार महेश्वर तिवारी के शब्दों को सच होने में कहाँ देर लगेगी-

"आने वाले हैं ऐसे दिन
जो आँसू पर भी पहरे बैठाने वाले हैं
आकर आस-पास भर देंगे
ऐसी चिलाहट
सुन न सकेंगे
हम अपने ही
भीतर की आहट
शोर-शराबे ऐसे दिल
दहलाने वाले हैं
आने वाले हैं ऐसे दिन।"

व्यक्ति को समझना होगा कि वर्तमान में परोसी जा रहीं सूचनाएँ, खबरें और खबरों में जकड़े प्रलोभन उसके लिए कितने उपयोगी और कितने अनुपयोगी हैं। किन सूचनाओं का उसे स्वागत करना चाहिए और किनका बहिष्कार क्योंकि विकास के मोह में फँसा जीवन अब हंस-विवेक की माँग कर रहा है।

दिल्ली निवासी लेखिका माध्यमिक विद्यालय में संस्कृत और हिन्दी विषय की अध्यापिका पद से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के बाद साहित्य-साधना में संलग्न हैं। आपकी कई कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं।



अधिकार ही नहीं, कर्तव्य भी पहचानें

देश के हर नागरिक के बीच मूल कर्तव्यों की पहचान और उसके प्रति जागरूकता इस प्रकार समाविष्ट हो जाये कि प्रत्येक नागरिक अधिकारों के साथ-साथ अपना कर्तव्य समझते हुए इतना कर्तव्यनिष्ठ रहे कि संविधान में मूल कर्तव्यों की पवित्र घोषणा की सार्थकता व पहचान सदैव बनी रहे।

हमारा देश भारत एक सम्पूर्ण प्रभुत्वसम्पन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य है, जहाँ नागरिकों को विशद रूप में मौलिक अधिकार प्रदत्त हैं। संविधान द्वारा प्रदत्त मूल अधिकारों के प्रति प्रत्येक नागरिक इतना जागरूक रहता है कि कदम-कदम पर अधिकारों की ही बात की जाती है। इतना ही नहीं, मूल अधिकारों को प्रवर्तित कराने के लिए सांविधानिक (विधिक) उपचारों का सहारा भी लिया जाता है, किन्तु अधिकारों की अपेक्षा कर्तव्यों की ओर कम ध्यान दिया जाता है, जबकि कर्तव्यपालन के प्रति चेतना अपेक्षित है।

हम सभी को सड़क पर चलने और वाहन चलाने का अधिकार है किन्तु हम वाहन कैसे चला रहे हैं, किस गति से चला रहे हैं, क्या हमें इसका भान है? दफ्तर में नौकरी करते हैं किन्तु कितनी कुशलता व कर्तव्यपरायणता से कार्य को अंजाम दे रहे हैं? राह चलते-चलते गुटखा-पान मसाला खाकर खाली रैपर इधर-उधर सड़क पर ही फेंक देना, पीक थूक देना, अपने पालतू पेट्स को कहीं भी शौच करा लेना इत्यादि ऐसे कृत्य हैं जिनसे आस-पास का वातावरण कितना प्रदूषित हो रहा होता है, इसका हम कितना ध्यान रख पाते हैं? इस तरह के अनेक ज्वलंत प्रश्न हैं

जो हमें सोचने को विवश करते हैं कि हमारे मूल अधिकारों की भाँति कुछ मूल कर्तव्य भी हैं जिनकी अनदेखी की जाती रही है।

हमारे धर्मग्रंथों, यथा-रामायण और महाभारत में कर्तव्य-पालन पर विशेष बल दिया गया है। 'गीता' में 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' का मूल मंत्र कर्तव्य-पालन के प्रति स्पष्ट दिशा-निर्देश है। विधिशास्त्री 'सामण्ड' ने जहाँ यह स्पष्ट किया है कि अधिकार और कर्तव्य परस्पर संबंधित होते हैं, वहाँ अधिकार और कर्तव्यों की सहभागिता स्वतः सिद्ध हो जाती है। जहाँ एक व्यक्ति का अधिकार होता है, वहाँ वह दूसरे का कर्तव्य होता है क्योंकि प्रत्येक अधिकार के साथ एक सहवर्ती कर्तव्य जुड़ा होता है।

अधिकार के बिना कर्तव्य और कर्तव्य के बिना अधिकार अधूरा है। फिर भी; चरित्र-निर्माण और सुनागरिकता की दृष्टि से अधिकारों के साथ-साथ मूल कर्तव्यों के प्रति सजग रहना प्रत्येक नागरिक का पुनीत कर्तव्य है, क्योंकि अधिकारों का महत्व भी तभी तक है जब कर्तव्यों के प्रति नागरिक सचेष्ट रहें। एक अच्छे नागरिक से अपेक्षा की जाती है कि वह अपने अधिकारों का उपभोग शालीनता और विधिपूर्ण तरीके से करे ताकि किसी अन्य के अधिकारों पर आँच न आये। साथ ही उसका यह विधिक



लोग प्रायः पटाखे चलाते समय वृद्धजनों और मरीजों को होने वाली परेशानियों को अनदेखा कर जाते हैं। पटाखों व आतिशबाजी से उत्सर्जित गैसें जनजीवन, जीव-जन्तु और वनस्पति को भी हानि पहुँचाती हैं। इसी तरह सड़क पर गुजरने वाले वाहनों की ध्वनि, मशीनों की गड़गड़ाहट, तथा मानकों से तेज आवाज और समय-बेसमय बजने वाले लाउड-स्पीकरों की कर्णभेदी ध्वनि आदि प्रदूषण के मुख्य कारक हैं, जिन पर नियंत्रण करके प्रदूषण के संत्रास से बचा जा सकता है।

दायित्व भी है कि वह निर्धारित मूल कर्तव्यों की पालना पूर्ण निष्ठा व सजगता से करे कि उसकी कर्तव्यपरायणता देश व समाज के लिए उपादेय हो। आवश्यकता है कि हम अपने मूल कर्तव्यों को भली-भाँति पहचानें। इसे देखते हुए हमारे संविधान द्वारा प्रदत्त मूल कर्तव्यों की जानकारी आवश्यक है।

मूल कर्तव्य

संविधान के अनुच्छेद 51 क में मूल कर्तव्य अन्तर्विष्ट हैं (भाग 4 क) जिन्हें 42वें संशोधन अधिनियम, 1976 के द्वारा उपबंधित किया गया है। अनुच्छेद 51 क के अधीन भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह-

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं राष्ट्रध्वज व राष्ट्रगान का सम्मान करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोये रखे और पालन करे;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किये जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा, और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति (Composite culture) की गौरवशाली परम्परा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्यजीव आते हैं, की रक्षा करे और उसका संवर्द्धन करे तथा प्राणी मात्र के प्रति दयाभाव रखें;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहें;

(ज) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए, प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले।

इनमें से प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा और उसका संवर्द्धन एक आदेश है जिसकी प्रतिपूर्ति राज्य की सहायता से की जा सकती है; जबकि अन्य सभी मूल कर्तव्य प्रत्येक नागरिक के दायित्व के रूप में एक उद्घोषन हैं जिन्हें उसे सुनागरिकता के लिए निभाना आवश्यक व जरूरी ही है ताकि एक स्वच्छ वातावरण का निर्माण हो सके।

प्रदूषण के संत्रास से बचाव सम्भव

लोग प्रायः पटाखे चलाते समय वृद्धजनों और मरीजों को होने वाली परेशानियों को अनदेखा कर जाते हैं। प्रदूषित वातावरण से रोगी ही नहीं, सामान्य व्यक्ति को भी साँस लेने में कठिनाई होती है। वृद्ध और अतिवृद्ध व्यक्ति की नींद में व्यवधान व तज्जनित बीमारी अस्थमा, बहरापन आदि का कारण पटाखों को माना जाता है। पटाखों व आतिशबाजी से उत्सर्जित गैसें जनजीवन, जीव-जन्तु और वनस्पति को भी हानि पहुँचाती हैं। इसी तरह सड़क पर गुजरने वाले वाहनों की ध्वनि, मशीनों की गड़गड़ाहट, तथा मानकों से तेज आवाज और समय-बेसमय बजने वाले लाउड-स्पीकरों की कर्णभेदी ध्वनि आदि प्रदूषण के मुख्य कारक हैं, जिन पर नियंत्रण करके प्रदूषण के संत्रास से बचा जा सकता है।

देश के हर नागरिक के बीच मूल कर्तव्यों की पहचान और जागरूकता इस प्रकार समाविष्ट हो जाये कि प्रत्येक नागरिक अधिकारों के साथ-साथ अपना कर्तव्य समझते हुए इतना कर्तव्यनिष्ट रहे कि संविधान में मूल कर्तव्यों की पवित्र घोषणा की सार्थकता व पहचान सदैव बनी रहे। इन कर्तव्यों के पालन से जहाँ देश में पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना उदित होगी, वहाँ सामासिक संस्कृति के साथ धार्मिक सहिष्णुता भी बढ़ेगी। अतः हम अपने मूल अधिकारों के साथ-साथ मूल कर्तव्यों को भी पहचानें।

जयपुर निवासी लेखक स्वतंत्र पत्रकार तथा डॉ. रांगेय राधव साहित्य के विशेष अध्येता हैं। साहित्य और पत्रकारिता पर इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।



गंगाजल और गंगा की निर्मलता

गंगा को लोग माँ कहते हैं। माँ के दूध को अमृत माना जाता है। गंगा के जल को भी अमृत का दर्जा दिया गया है। गंगाजल को पवित्र माना जाता है क्योंकि यह शुद्ध है। कल्याणकारी है। सेहत के लिए गुणकारी है। गंगाजल में जो गुण हैं, वे दूसरे साधारण जल में नहीं पाये जाते। अन्य कोई भी जल अधिक दिनों तक भरकर नहीं रखा जा सकता।

फुलिया काकी बीमार थीं। बचने की कोई उम्मीद न रही। देवकी चाची ने कहा, "गंगाजल लाओ। इनके मुँह में डालो।" सभी लोग परेशान हो गये। घर में गंगाजल था ही नहीं। तभी मालती भाभी दौड़कर अपने घर से गंगाजल ले आयी। काकी के मुँह में उसे डाला गया। गंगाजल पीकर उन्होंने अंतिम सांस ली। जब किसी के बचने की उम्मीद नहीं रह जाती, उस समय उसके मुँह में गंगाजल डाला जाता है। कहते हैं, इससे उसकी तकलीफ कम होती है। मरने के बाद आत्मा को शाति मिलती है।

गंगाजल का महत्व जग जाहिर है। हर घर में भले न हो, लेकिन हर गाँव के कुछ घरों में गंगाजल अवश्य मिल जाएगा। गंगा को लोग माँ कहते हैं। माँ के दूध को अमृत माना जाता है। गंगा के जल को भी अमृत का दर्जा दिया गया है। गंगाजल को पवित्र माना गया है। किसी की पवित्रता साबित करनी हो तो लोग उसकी तुलना गंगाजल से करते हैं। कहते हैं, यह गंगाजल की तरह पवित्र है।

गंगाजल को इतना पवित्र इसलिए माना जाता है क्योंकि यह शुद्ध है। कल्याणकारी है। सेहत के लिए गुणकारी है। कोई भी पूजा हो, अनुष्ठान हो, यज्ञ हो, हवन हो, गंगाजल का प्रयोग उसमें जरूर किया जाता है। सावन के दिनों में और शिवरात्रि के अवसर

पर श्रद्धालु कांवड़ में गंगाजल लेकर दूर-दूर से आते हैं और भगवान भोलेनाथ का अभिषेक करते हैं। देवी-देवताओं की स्थापना के समय गंगाजल से उनका अभिषेक किया जाता है। किसी स्थान या वस्तु को पवित्र करने के लिए गंगाजल छिड़कने की परम्परा है। पंचमृत बनाने में भी गंगाजल का प्रयोग किया जाता है।

गंगाजल में जो गुण हैं, वे दूसरे साधारण जल में नहीं पाये जाते। अन्य कोई भी जल अधिक दिनों तक भरकर नहीं रखा जा सकता। थोड़े दिनों बाद उसमें बदलाव आने लगता है। कीटाणु पनपने लगते हैं। वह पीने योग्य नहीं रह जाता। वहीं गंगाजल वर्षों तक खराब नहीं होता।

ब्रिटिश शासन के दौरान अंग्रेज कलकत्ता से इंग्लैंड जाते समय जहाज में गंगा के एक मुहाने से जल भरकर चलते थे। यह जल इंग्लैंड तक बराबर ताजा बना रहता था। वहीं लौटते समय जब वे लंदन से जल भरकर चलते थे तो वह जलदी ही खराब हो जाता था। उन्हें बीच में कई जगह पानी बदलना पड़ता था।

आखिर गंगाजल में ऐसा क्या है कि वह खराब नहीं होता? क्यों इसे इतना पवित्र और गुणकारी माना जाता है? यह पता लगाने के लिए समय-समय पर कई वैज्ञानिकों और डॉक्टरों ने





अक्सर कुछ लोग यह सवाल उठाते हैं कि जब गंगाजल कीटाणुओं को मार देता है, तो उसके दूषित होने की चिन्ता क्यों? यह सवाल उचित नहीं है। प्रदूषण की चिन्ता तो कर्त्ता ही होगी। हमारी गंगा माँ भी आखिर गंदगी से कितना लड़ेगी। जब हर तरफ से गंदगी का हमला होगा तो उसका अस्तित्व भी खतरे में पड़ सकता है।

इसकी जाँच की है। इन जाँचों से गंगाजल के चामत्कारिक गुणों का पता चलता है।

एक वैज्ञानिक हुए हैं हैनवरी हैकिन्स। उन्होंने काशी में गंगा में गिरने वाले गंदे नालों के पानी की जाँच की। उस पानी में भारी संख्या में हैजे के कीटाणु पाये गये। वही पानी गंगा में मिल रहा था। गंगा में मिलने के कुछ देर बाद उन्होंने उस पानी का परीक्षण किया तो उसमें हैजे के सभी कीटाणु नष्ट हो चुके थे। उन्होंने जाँच करके सिद्ध किया कि गंगाजल में हैजे के कीटाणुओं को नष्ट करने की अद्भुत शक्ति है।

इसी बात को एक अन्य प्रसिद्ध डॉक्टर डेरेल ने भी सिद्ध किया है। उस समय भारत में हैजे और आँव का प्रकोप फैला हुआ था। इन रोगों से मरने वाले लोगों के शव गंगा में बहा दिये जाते थे। डॉ. डेरेल ने उसी जगह के पानी की जाँच की। उस पानी में हैजे और आँव के कीटाणु होने की पूरी उम्मीद थी, लेकिन जाँच में ऐसे कोई कीटाणु नहीं पाये गये। मतलब यह कि गंगाजल में मिलने के बाद सभी कीटाणु नष्ट हो चुके थे।

नेशनल बॉटैनिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिक डॉ. चंद्रशेखर नौटियाल ने भी परीक्षण करके सिद्ध किया है कि

गंगाजल में बीमारी पैदा करने वाले ई कोलाई बैक्टीरिया को नष्ट करने की क्षमता है। उन्होंने परीक्षण के लिए ताजा, आठ साल पुराना और सोलह साल पुराना तीन तरह का अलग-अलग गंगाजल लिया और उनमें ई कोलाई बैक्टीरिया डाला। परीक्षण में उन्होंने पाया कि ताजे जल में तीन दिन, आठ साल पुराने जल में एक हफ्ते और सोलह साल पुराने जल में ई कोलाई बैक्टीरिया पंद्रह दिन में नष्ट हो गये। उन्होंने बताया कि गंगाजल में अद्भुत रूप से रोग प्रतिरोधक क्षमता विद्यमान है। गंगाजल में यह शक्ति गंगोत्री और हिमालय से आती है। उन्होंने यह भी बताया कि गंगाजल को गरम करने से उसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है। वहीं आईआईटी रुड़की के पर्यावरण वैज्ञानिक प्रोफेसर भार्गव के अनुसार बैक्टीरिया और वायरस को नष्ट करने वाले तत्त्व गंगा की तलहटी में पाये जाते हैं।

आयुर्वेद में भी गंगाजल के गुणों की प्रशंसा की गयी है। आचार्य चरक ने गंगाजल को रोगियों के लिए अत्यंत गुणकारी माना है। एक प्राचीन ग्रंथ 'भोजन कुतूहल' के अनुसार, गंगाजल स्वच्छ, शुद्ध, पवित्र, स्वादिष्ट और रुचिकर है। भोजन पकाने के लिए उत्तम है। इससे पाचन शक्ति बढ़ती है और बुद्धि तेज होती है।

प्रायः गंगाजल को बहुत-से लोग धर्म विशेष से जोड़कर देखते हैं जबकि यह हर धर्म और जाति के लोगों के लिए समान रूप से गुणकारी है। सभी के लिए सहज उपलब्ध है। कई मुस्लिम बादशाहों के महलों में गंगाजल का इस्तेमाल होता था। सुलतान मुहम्मद तुगलक के लिए गंगाजल बराबर दौलताबाद ले जाया जाता था। बादशाह अकबर भी गंगाजल के मुरीद थे। युद्ध में हों, यात्रा पर हों या महल में, वे गंगाजल का ही सेवन करते थे। बादशाह औरंगजेब के लिए एक सुराही गंगाजल प्रतिदिन मँगवाया जाता था। कई मुस्लिम नवाब भी केवल गंगाजल का ही सेवन करते थे।

अक्सर कुछ लोग यह सवाल उठाते हैं कि जब गंगाजल कीटाणुओं को मार देता है, तो उसके दूषित होने की चिन्ता क्यों? यह सवाल उचित नहीं है। प्रदूषण की चिन्ता तो करनी ही होगी। हमारी गंगा माँ भी आखिर गंदगी से कितना लड़ेगी। जब हर तरफ से गंदगी का हमला होगा तो उसका अस्तित्व भी खतरे में पड़ सकता है। उसकी शुद्धता और पवित्रता में कमी आ सकती है। वैसे भी जिसे हम माँ का दर्जा देते हैं, जो हमारा पोषण करती है, उसे शुद्ध, पवित्र और निर्मल बनाये रखने की जिम्मेदारी भी हमारी है।

गंगा सबकी है। गंगाजल सबके लिए है। गंगा को स्वच्छ और शुद्ध बनाये रखने की जिम्मेदारी हम सबकी बनती है ताकि गंगाजल के अद्भुत गुण हमेशा बरकरार रहें।

लेखनकारी निवासी लेखक बच्चों और प्रौढ़ों के लिए सतत लेखन में संलग्न हैं। साहित्य की विभिन्न विधाओं में अब तक अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

असत्य और उससे उत्पन्न दोष

व्यक्ति अपनी सत्यवादिता के बल पर ही समाज में टिक पाता है। सत्य का प्रयोग करने से उसे थोड़ी देर के लिए परेशानी हो सकती है, किंतु वारस्तविक या अतिम रूप से जीत उसी की होती है। असत्य से उत्पन्न सारे दोषों के निराकरण का एक ही मार्ग है। वह है सत्य, सत्य और सिर्फ सत्य क्योंकि सत्य का कोई विकल्प नहीं होता।

मनुष्य सुबह जागने से लेकर रात सोने तक अनेक लोगों से मिलता है और उनसे अनेक विषयों पर तरह-तरह की बातें करता है। इस दौरान स्वयं द्वारा या दूसरों द्वारा कही गयी सारी बातों का सत्य होना आवश्यक नहीं है।

असत्य बोलने वाला कई कारणों से असत्य बोल सकता है। कुछ लोग स्वभाववश असत्य बोलते हैं, कुछ लोग दबाववश असत्य बोलते हैं और कुछ लोग अभाववश असत्य बोलते हैं। अज्ञानतावश भी असत्य बोला जाता है। अपने लाभ के लिए असत्य बोलने वालों की संख्या सबसे अधिक है।

स्वभाववश असत्य बोलने वाले बात-बात में असत्य बोलते हैं। सच्ची बातें उन्हें बड़ी हल्की लगती हैं। इसलिए वे अपनी निम्न से निम्नतर बातों को भी नमक-मिर्च लगाकर भारी-भरकम बनाने की कोशिश करते हैं। ऐसे लोग हर घटना या प्रसंग में अपनी उपस्थिति या उससे संबंध जोड़ने का प्रयास करते हैं, जिस कारण उन्हें अनावश्यक रूप से असत्य का सहारा लेना पड़ता है।

कुछ लोग दबाववश असत्य बोलते हैं। ऐसे लोग दूसरे के प्रेमजन्य या भयजन्य दबाव के कारण तात्कालिक तौर पर किसी बात को स्वीकार तो कर लेते हैं मगर बाद में उसे पूरा नहीं कर पाते जिससे उनकी बात असत्य हो जाती है। अभाववश असत्य बोलने

वाले अपनी कमी को ढंकने के लिए असत्य का सहारा लेते हैं। ऐसे लोग रिश्तेदारी या समाज में अपने अभाव को छिपाने के लिए असत्य बोलते हैं। हालाँकि हर अभावग्रस्त ऐसा नहीं करता। बल्कि ऐसा देखा गया है कि अभावग्रस्त लोग भी असत्य का प्रयोग करने से हिचकिचाते हैं। ऐसे लोगों द्वारा पाप-पुण्य में अधिक विश्वास किया जाना भी इसका कारण हो सकता है। कुछ लोग ज्ञान के अभाववश असत्य बोलते हैं। वे अनावश्यक रूप से कुछ बोलने की आदत की मजबूरी के कारण अज्ञानतावश असत्य का प्रयोग कर डालते हैं।

अपने लाभ के लिए असत्य बोलने वालों की संख्या कुछ अधिक ही है। न्यायालय में अपना पक्ष प्रस्तुत करने के लिए सबसे अधिक असत्य का सहारा लिया जाता है। किसी भी वस्तु अथवा सेवा की बिक्री के लिए असत्य का प्रयोग बहुत अधिक होता है। कुछ असत्य अपनों द्वारा अपनों के बीच बोला जाता है। असत्य बोलने का उद्देश्य सबका अलग-अलग होता है।

स्वार्थसिद्धि के लिए कुछ लोग गलत-सही कोई काम करने से नहीं हिचकते। ऐसे लोग येन केन प्रकारेण अपना स्वार्थ पूरा करने का प्रयास करते हैं और इस क्रम में सत्य-असत्य का भेद किये बिना कुछ भी बोल जाते हैं। समाज में कुछ लोग ऐसे हैं, जो



भरी गगरिया चुपके जाये

■ यशोधरा भट्टनागर - देवास ■

जिस परिवार में बड़े लोग असत्य का प्रयोग करते हैं, उस परिवार के बच्चे भी असत्य बोलने लगते हैं। बात-बात में असत्य का प्रयोग करने से उस परिवार का समाज में महत्व खत्म हो जाता है।

बिना सोचे हुए अनायास ही असत्य बोलते रहते हैं। अपना कार्य सिद्ध करना या किसी को धोखा देना अथवा किसी को लाभ पहुँचाना उनका उद्देश्य नहीं होता। वस्तुतः असत्य बोलना उनकी आदत बन गयी होती है।

असत्य चाहे किसी भी कारण या उद्देश्य से बोला जाये, असत्यवादी व्यक्ति आत्मविश्वासी भी कम होता है। उसे असत्य बोलने को लेकर आत्मगलानि अवश्य होती है। आत्मगलानि का कारण है असत्य का पकड़ा जाना। असत्य सिद्ध हो जाने पर ऐसे व्यक्ति पर से लोगों का विश्वास उठ जाता है। समाज में उसकी अच्छी पहचान नहीं बन पाती है।

एक बार असत्य बोल देने के बाद असत्य बोलने का सिलसिला समाप्त कर पाना प्रायः संभव नहीं हो पाता और असत्य बोलने वाला अपने ही असत्य कथन के जाल में फँसता चला जाता है। असत्य कथन के साथ एक बहुत बड़ी बात यह होती है कि एक असत्य को छिपाने के लिए कई असत्य बोलने पड़ जाते हैं। कभी-कभी एक असत्य बोलने से उत्पन्न स्थिति बड़ी गलतियों को जन्म दे देती है। उसके बाद ऐसी गलतियों का सिलसिला चल पड़ता है।

असत्य बोलने की आदत अधिकतर मामलों में पारिवारिक संस्कार की देन है। जिस परिवार में बड़े लोग असत्य का प्रयोग करते हैं, उस परिवार के बच्चे भी असत्य बोलने लगते हैं। बात-बात में असत्य का प्रयोग करने से उस परिवार का समाज में महत्व खत्म हो जाता है। ऐसा परिवार आर्थिक संपन्नता के बावजूद विपन्नता की ओर अग्रसर हो जाता है और धीरे-धीरे अपना अस्तित्व खो देता है।

व्यक्ति अपनी सत्यवादिता के बल पर ही समाज में टिक पाता है। सत्य उसकी सबसे बड़ी पूँजी होती है। सत्य का प्रयोग करने से उसे थोड़ी देर के लिए परेशानी हो सकती है, किंतु वास्तविक या अंतिम रूप से जीत उसी की होती है। आत्मविश्वासपूर्ण जीवन जीने से उसके चेहरे पर तेज दिखायी देने लगता है। असत्य से उत्पन्न सारे दोषों के निराकरण का एक ही मार्ग है। वह है सत्य, सत्य और सिर्फ सत्य क्योंकि सत्य का कोई विकल्प नहीं होता।

रांची निवासी लेखक साहित्य सेवाओं के लिए झारखण्ड सरकार से सम्मानित हो चुके हैं। बाल साहित्य तथा पर्यावरण विषयक इनकी अनेक रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं।

सुबह बरामदे में बैठकर चाय की चुस्कियों संग पेपर पढ़ना भला लग रहा था।

"ऊँ सूर्याय नमः, ऊँ भास्कराय नमः....।" की आवाज से ध्यान सामने वाली छत की ओर गया। बाबूजी सूर्योदेव को अर्घ्य दे रहे थे। सूर्योपासना कर उन्होंने तुलसा जी को जल चढ़ाया। फिर मिट्टी के सकोरों को जल से भर दिया।

"गुटर गू...गुटर गू..." मेरी नजर बाबूजी के इर्द-गिर्द इकट्ठे हो आये कबूतरों के झुंड की ओर गयी।

"हाँ, मेरे दोस्तों, कैसे हो? दाना चाहिए?"

...और बाबूजी जी ने दोनों हाथों से छत पर दाने उछाल दिये। ऊँची गर्दन किये कबूतर गुटर गू करते मटक रहे थे। कबूतरों से बातें कर कुछ ही देर में बाबूजी कंधे पर कपड़े का झोला टाँगे नीचे सड़क पर खड़े थे।

सड़क के कई श्वान पूँछ हिलाते कूँड़ कूँड़ करते हुए उनके पास आ गये। बाबूजी ने बड़े प्यार से उन्हें रोटियाँ खिलायीं।

"भूरे, अब कैसे हो? और टॉमी तुम? तुम्हारा पैर कैसा है?"

प्रत्युत्तर में श्वानों की पूँछ तेजी से हिलने लगी और कूँड़ कूँड़ करते वे बाबूजी के पैरों के पास बैठ गये। श्वानों को पुचकार कर बाबूजी तेज कदमों से सैर को चल दिये। उनका हाथ फिर झोले में गया और उन्होंने कुछ बीज सड़क किनारे हवा में उछाल दिये।

मैंने बाबूजी के आसपास बड़े ध्यान से देखा, वहाँ कोई फोटोग्राफर नहीं था। एहसास हुआ, "भरी गगरिया चुपके जाये।"



सी-लर्निंग : जीने की राह बनाये आसान

अनेक परिस्थितियों में व्यक्ति स्वयं अपने प्रति निर्मम और निष्कर्षण हो उठता है जिसकी परिणति कभी-कभी अनियन्त्रित तनाव, आत्मपीड़क क्रोध, अवसाद और आत्महत्या जैसी विनाशकारी हो जाती है। सी-लर्निंग के घटक व्यक्ति को स्वयं के प्रति भी करुणा और अनुराग करना सिखाते हैं।

सा माजिक, भावात्मक एवं नैतिक अधिगम (Social Emotional Ethical - Learning) अर्थात् सी-लर्निंग आज की बड़ी आवश्यकता है। सुबह से शाम तक मशीनों और तकनीकों से घिरे हुए मनुष्य के पास अपने आसपास के परिवेश, प्रकृति, परिवार, समाज आदि को निकट से देखने-समझने का अवकाश नहीं है। यहाँ तक कि वह स्वयं अपने भावात्मक पक्ष के प्रति भी निर्मम होता जा रहा है।

अपने दैनिक जीवन में रोटी वह खाता है, कपड़े वह पहनता है, मकान में वह आराम से रहता है परंतु उसके ध्यान में शायद ही यह बात आती होगी कि उस तक रोटी-कपड़ा-मकान आदि जीवनोपयोगी वस्तुओं को तैयार अवस्था में पहुँचाने में कितने हाथों का स्पर्श लगा है, उनकी मेहनत और भावना लगी है। सी-लर्निंग एक तरह से व्यक्ति को उसकी इसी समष्टि से सामाजिक, भावात्मक एवं नैतिक रूप से जुड़ने का मार्ग प्रशस्त करता है।

अनेक परिस्थितियों में व्यक्ति स्वयं अपने प्रति निर्मम और निष्कर्षण हो उठता है जिसकी परिणति कभी-कभी अनियन्त्रित तनाव, आत्मपीड़क क्रोध, अवसाद और आत्महत्या जैसी विनाशकारी हो जाती है। सी-लर्निंग के घटक व्यक्ति को स्वयं के प्रति भी करुणा और अनुराग करना सिखाते हैं।

सी-लर्निंग के अंतर्गत 'ओके जोन' का सिद्धांत बहुत सार्थक है। सामान्य, सुखद, शांतिपूर्ण और प्रसन्नचित्त रहने की अवस्था ओके जोन कहलाती है।

विपरीत परिस्थितियों में या तो अत्यधिक तनाव सक्रिय होकर मनुष्य आवेग और क्रोध के परिक्षेत्र में अर्थात् 'हाई जोन' में चला जाता है अथवा निराशा और अवसाद के शैथिल्य से नीरस 'लो जोन' में चला जाता है। सी-लर्निंग 'हाई जोन' और 'लो जोन' से मनुष्य को 'ओके जोन' में लाने और बने रहने का प्रशिक्षण ही है। सी-लर्निंग के अंतर्गत ऐसी अनेक गतिविधियां एवं अभ्यास सुझाये गये हैं जो व्यक्ति को 'ओके जोन' में आने और बने रहने के लिए अनुकूलित करते हैं।

वर्तमान परिदृश्य में बालकों एवं युवा वर्ग में बढ़ते हुए अवसाद, आत्महत्या की प्रवृत्ति और नशे की लत को रोकने के लिए तुरंत प्रभाव से उन्हें सी-लर्निंग से जोड़ना बहुत आवश्यक है।

सी-लर्निंग के विशेषज्ञ ओके जोन में आने एवं बने रहने के लिए 'Help Now' शीर्षक से अनेक गतिविधियों के अभ्यास की सलाह देते हैं। इन गतिविधियों में प्रमुख रूप से से धीरे-धीरे चलना या टहलना, दीवार में धक्का देना, आकृतियों एवं रंगों को देखना,



‘संबंध कौशल’ एक अन्य आयाम है जिसमें दूसरों की आवश्यकताओं की सही समझ विकसित करने के लिए उन्हें सहानुभूतिपूर्वक सुनना, कौशलपूर्ण संवाद करना, अपनी योग्यता एवं दूसरे की आवश्यकता के अनुसार सहायता के लिए तत्पर होना एवं संघर्षपूर्ण स्थितियों का रचनात्मक, शांतिपूर्ण समाधान करना शामिल है।

उल्टी गिनती गिनना, घूँट-घूँट करके पानी पीना, वस्तुओं को स्पर्श करना, परिवेशगत ध्वनियों को सुनकर चिह्नित करना, धीरे-धीरे आँखें खोलना बंद करना अथवा सांस लेना आदि शामिल हैं।

हेल्प नाउ के अतिरिक्त खुशियों का पिटारा, ध्यान केंद्रित करना, हैण्डीनेस चार्ट, मन-मस्तिष्क को पोषित करने वाली (Nurturing movements) सुखद स्मृतियों को संजोना तथा भावनाओं को समझते हुए संवेदनाओं की समझ विकसित करना भी ओके जोन के पक्ष में किये जाने वाले अभ्यास हैं।

‘संबंध कौशल’ एक अन्य आयाम है जिसमें दूसरों की आवश्यकताओं की सही समझ विकसित करने के लिए उन्हें सहानुभूतिपूर्वक सुनना, कौशलपूर्ण संवाद करना, अपनी योग्यता एवं दूसरे की आवश्यकता के अनुसार सहायता के लिए तत्पर होना एवं संघर्षपूर्ण स्थितियों का रचनात्मक, शांतिपूर्ण समाधान करना शामिल है। अहिंसक संप्रेषण का ज्ञान इसमें उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

सी-लर्निंग की प्रेरणा में संवेगात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence) सिद्धांत के प्रणेता पाश्चात्य शिक्षा मनोविज्ञानी डेनियल गोलमैन तथा आध्यात्मिक गुरु करुणावादी दलाई लामा की वैचारिकता का प्रभाव है। दलाई लामा ने कहा है, “सामाजिक, भावात्मक एवं नैतिक अधिगम का सही समय आ चुका है।” मनुष्य की मनुष्यता बची रहे, उसमें सहृदयता बनी रहे, उसका चिंतन सकारात्मक और मानसिक शारीरिक संवेगात्मक स्वास्थ्य उत्प्रतिशील हो, इसके लिए सी-लर्निंग आदि नवाचारी उपागमों का मुक्त हृदय से स्वागत किया जाना चाहिए।

करौली निवासी लेखक हिंदी व्याख्याता के पद पर कार्यरत रहते हुए साहित्य सूजन में संलग्न हैं। इनके आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

बुजुर्ग हैं हमारी विरासत

■ डॉ. विनोद गुप्ता - मंदसौर ■

क्या आपके साथ बुजुर्ग रहते हैं? यदि हाँ, तो आप बड़े सौभाग्यशाली हैं। जानते हैं, क्यों? दरअसल, बुजुर्ग ज्ञान और अनुभव की खुली किताब होते हैं। यदि नयी पीढ़ी उसे पढ़े तो काफी कुछ सीख और समझ सकती है। बुजुर्गों के पास ज्ञान और अनुभव का भंडार है। नयी पीढ़ी उसका लाभ उठा सकती है। बशर्ते वह अपना अहं छोड़ दे। केवल डिग्रियां हासिल कर लेने से कोई बुद्धिमान या ज्ञानवान नहीं बन जाता। विपत्ति या संकट से कैसे उबरा जाये या कैसी रणनीति अपनायी जाये, यह पाठ्य पुस्तकों में अंकित नहीं है और न ही कॉलेजों में पढ़ाया जाता है। संकट के समय बुजुर्गों का अनुभव और ज्ञान ही बेड़ा पार लगा सकता है। वे प्रकाशपूंज की भाँति होते हैं जो घने अंधेरे में भी रास्ता दिखा सकता है।

बुजुर्गों की बदौलत ही आज हमारी संस्कृति, सभ्यता, सांस्कृतिक विरासत और नैतिक मूल्य कायम हैं। यदि हम अपनी लोक संस्कृति, लोक कला, लोक परपरा आदि को जीवित रखे हुए हैं, तो उसका श्रेय बुजुर्गों को ही है जो कि इन सबमें पूरी तरह ढूबे हुए और उनके रंग में रंगे हुए हैं। यदि बुजुर्ग न हों तो नयी पीढ़ी को इन सबसे अवगत कौन कराएगा?

परिवार तथा समाज को एकजुट बनाये रखने में बुजुर्गों का योगदान किसी से छिपा नहीं है। सामाजिक ताने-बाने बुनने में बुजुर्गों की अपनी महत्ता और भूमिका रही है। अपने परिवार का हित-अहित बुजुर्गों से बेहतर और कौन समझ सकता है?

बुजुर्गों के पास ज्ञान और अनुभव का अथाह सागर है जो कभी सूखता नहीं है। बुजुर्ग हमारी धरोहर हैं। वे परिवार, समाज और देश की शान हैं। उनका उचित आदर और सम्मान होना चाहिए, तिरस्कार नहीं। पाश्चात्य संस्कृति की नकल करके बुजुर्गों की अनदेखी करना अच्छी बात नहीं है। हमें अपने बुजुर्गों के लाड़-प्यार और आशीर्वाद की आवश्यकता है जो उनसे जुड़ने से ही मिल सकता है, उनसे अलग रहकर नहीं।



चलते रहने का नाम जिंदगी

जीवन में आनंदित रहने का एकमात्र उपाय है अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए समर्पित होकर निरंतर कर्म करते रहना। भाव्यवाद केवल शिकायत करने वाले लोगों का अस्त्र है। कर्म पर विश्वास करने वाले कोई शिकायत किये बिना स्वयं पर भरोसा करते हुए निरंतर परिश्रम करते रहते हैं। उनके लिए जिंदगी चलते रहने का नाम है।

मनुष्य जीवन कर्म-प्रधान है। कर्म का कोई विकल्प नहीं है। हाँ, हर व्यक्ति के कर्म करने का माध्यम और उद्देश्य अलग-अलग हैं। कोई दिमाग का इस्तेमाल ज्यादा करता है तो कोई शरीर का। किसी को नाम-शोहरत चाहिए तो किसी को खूब धन-दौलत और किसी को दोनों, लेकिन बिना मेहनत के कोई भी सफलता नहीं मिलती है।

परिस्थितियां कभी अनुकूल तो कभी प्रतिकूल भी हो सकती हैं क्योंकि मनुष्य का जीवन परिवार, दोस्त, पैसा, धर्म, जाति आदि कई कारकों पर निर्भर करता है और इन पर हर पल नियंत्रण संभव नहीं है। लेकिन जिसने प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हार नहीं मानी, वही जीवन के समर में विजयी होता है।

पूरी दुनिया ऐसी कहानियों से भरी पड़ी है जिनके नायकों ने कर्म-पथ पर चलते हुए सबके लिए मिसाल पेश की। प्रसिद्ध मीडियाकर्मी ओपरा विन्फ्रें, प्रसिद्ध लेखिका जे. के. रोलिंग, एपल के फाउंडर स्टीव जॉब्स, अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन, भारत के पूर्व राष्ट्रपति भारत रत्न ए. पी. जे. अब्दुल कलाम, क्रिकेटर महेन्द्र सिंह धोनी, फिल्म अभिनेता रजनीकांत जैसी शख्सियत कुछ उदाहरण मात्र हैं। इन सबने अपने जीवन के सफर में आयी विपरीत परिस्थितियों को अपने मार्ग की बाधा नहीं बनने

दिया। हालात से लड़े और सफल हुए क्योंकि वे आत्मविश्वास से लबरेज थे। उन्होंने स्वयं पर भरोसा किया; मेहनत की और कठिनाइयों से लड़ते हुए हर दिन अपने को बेहतर बनाने में लगे रहे। उन्होंने चुनौतियों को अवसर के रूप में लिया और समयानुकूल तकनीक, कौशल, बुद्धि-विवेक का इस्तेमाल करते हुए कठिनाइयों पर विजय प्राप्त की। प्रकृति ने हर व्यक्ति को बिना किसी भेदभाव के चौबीस घंटे दिये हैं। मानव जीवन की सफलता और असफलता की कहानी इन्हीं चौबीस घंटे के इस्तेमाल करने की कहानी है।

किसी व्यक्ति का जन्म कहाँ होगा, किस परिवार में होगा, यह नियति तय करती है। जन्म के समय के सामाजिक, आर्थिक परिवेश पर व्यक्ति का कोई नियंत्रण नहीं है, लेकिन उसके बाद की कहानी वह स्वयं लिखता है। जो व्यक्ति अपने सामाजिक और आर्थिक हैसियत का रोना न रोकर उपलब्ध संसाधनों और समय का सही इस्तेमाल करते हुए अपने जीवन की समस्याओं को सुलझाने में लगा रहता है, वह जिंदगी को जीता भी है और हर जंग को जीतता भी है। जरूरी नहीं कि उसे मनचाही सफलता मिल ही जाये, लेकिन उन सपनों को पूरा करने का सफर व्यक्ति को अनुभवी, दृढ़निश्चयी और आत्मविश्वासी बनाता है। ऐसा व्यक्ति



हर व्यक्ति अनंत संभावनाओं का स्रोत है। कला, साहित्य, विज्ञान, खेल कोई भी क्षेत्र हो, वहाँ कोई-न-कोई व्यक्ति अपनी प्रतिभा से नित्य नयी ऊँचाइयों को छू रहा है।

जीवन के हर पल का आनंद उठाता है। गीता में कहा गया है - "कर्म करो लेकिन फल की इच्छा नहीं करो।" यह सिद्धांत सुखी जीवन का सूत्र है। अभी तक ऐसी कोई संस्था सरकारी या गैरसरकारी, तंत्र-मंत्र, टेक्नोलॉजी, दबा नहीं बनी है जो हमारे जीवन की गारंटी दे सके। किसी भी व्यक्ति का कोई भी पल उसका आखिरी पल हो सकता है। ऐसे अनिश्चित जीवन में कर्म ही एकमात्र विकल्प है जो आनंद दे सकता है और कर्म का फल चूँकि कई कारकों पर निर्भर है, इसलिए वह अनिश्चित है। इसीलिए फल की अनावश्यक चिंता नहीं करनी चाहिए।

हर व्यक्ति अनंत संभावनाओं का स्रोत है। कला, साहित्य, विज्ञान, खेल कोई भी क्षेत्र हो, वहाँ कोई-न-कोई व्यक्ति अपनी प्रतिभा से नित्य नयी ऊँचाइयों को छू रहा है। यदि हर व्यक्ति प्रत्येक दिन अपने ज्ञान, स्किल, टेक्नोलॉजी, व्यवहार को पिछले दिन की तुलना में ऐड ऑन करने की कोशिश करेगा तो निश्चित रूप से वह सफलता के नये आयाम को छू सकेगा। इससे उसका जीवन तो सार्थक होगा ही, परिवार, समाज और राष्ट्र का भी उत्थान होगा।

वैसे तरक्की का एक दूसरा रास्ता भी है जिसका इस्तेमाल आज के दौर में बढ़-चढ़कर किया जा रहा है। स्वयं को यथावत रखते हुए अपने संभावित प्रतिद्वंद्वी के मार्ग में बाधा उत्पन्न कर उसे आगे बढ़ने से रोकने की कोशिश करना। लेकिन यह मार्ग न केवल जीवन को नकारात्मक विचारों से भर देता है बल्कि दूसरों को रोकने की कोशिश में बाकी दुनिया बहुत आगे निकल जाती है और वह स्वयं बीते समय के साथ घोर कुंठा और अवसाद का शिकार हो जाता है।

बात पते की यह है कि जब जीवन का ही भरोसा नहीं है तो जीवन से जुड़ी सफलता-असफलता की गारंटी का प्रश्न अपने आप बेमानी हो जाता है। ऐसे में जीवन में आनंदित रहने का एकमात्र उपाय है अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए समर्पित होकर निरंतर कर्म करते रहना। यदि लक्ष्य प्राप्त हो जाता है तो सफर दूसरों के लिए मिसाल बन जाता है अन्यथा वह सफर आपको और अधिक बेहतर और अनुभवी इंसान बना देता है। स्पष्ट है भाग्यवाद केवल शिकायत करने वाले लोगों का अस्त्र है। कर्म पर विश्वास करने वाले कोई शिकायत किये बिना स्वयं पर भरोसा करते हुए निरंतर परिश्रम करते रहते हैं। उनके लिए जिंदगी चलते रहने का नाम है।

ग्रेटर नोएडा में रहने वाले लेखक रक्षा सेवा में कार्यरत रहते हुए साहित्य साधना में संलग्न हैं। आपके आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

दोहे

जीवन बना विशेष

■ चक्रधर शुक्ल - कानपुर ■

मौसम अब दिखला रहा, अपना-अपना रंग।
निज कर्मों का भोग है, सुख-दुःख जीवन-संग।।

प्यासे पंछी धूमते, रँभा रही है गाय।
जीवन कितना कीमती, जाने 'पत्रा धाय'।।

बरगद छाया दे रहा, मिले पथिक को ठैर।
बारहमासी पेड़ है, हरदम लगती बौर।।

मौसम ने करवट लिया, मन हुलसा उल्लास।
कोयल कूके पेड़ पर, धवल हुआ आकाश।।

जो जितना गुणवान है, वो उतना गंभीर।
बातों में उसके दिखे, दया, क्षमा, शुचि, धीर।।

मानवीय व्यवहार से, बदल गया परिवेश।
शब्द हृदय को छू गये, जीवन बना विशेष।।

धीरे-धीरे रमेगा, मन पापी चित्तचोर।
अन्दर हैं मधु के कलश, बाहर-बाहर शोर।।

जीवन एक किताब है, सागर-सा संसार।
जिसने खोजा पा लिया, तल पर मुक्ताहार।।

अच्छे लोगों से मिले, सदा नीतिगत ज्ञान।
अनुभव में परिपक्वता, जीवन सुमन समान।।

गहरी-गहरी श्वास से, मन को मिला सुकून।
मुस्काती फिर जिन्दगी, अन्तस खिला प्रसून।।





सुगंध अब फैलेगी

■ आशा पाण्डेय ■

यह तो एकदम नाजुक कली है, इसे तो सहारा चाहिए, उसका अपना सहारा। इस कली की खुशबू पूरी बगिया में फैले, इसलिए उसे अपनी बासी सुगंध समेटनी पड़ेगी। अपनी कर्तव्यपरायण बहू के लिए वह स्वयं ऐसा करेगी। पुराने ओटे का गम कैसा? आने वाली बहार क्या कम लुभावनी होगी?

ची जों के स्थान का हेर-फेर करके उसे नया रूप प्रदान कर देना उसका प्रिय शौक था। वह कुछ दिनों में कमरे को परिवर्तित कर देती थी। इस तरह सीमित और पुराने संसाधनों के साथ ही वह नित नूतनता का प्रयास करती रहती थी, लेकिन कमरे को नया रूप देने के लिए आज उसके घर में जो हो रहा है, वह उसके लिए असहनीय है। आज से पच्चीस साल पहले वह ब्याह कर इस घर में आयी थी। यद्यपि घर छोटा था, लेकिन सभी के लिए भरपूर व्यवस्था थी। आँगन के पास वाले सबसे बड़े और हवादार कमरे में जेठ-जिठानी का साम्राज्य था। बरामदे से लगकर जो कमरा था, वह अपने बाहरी परिवेश और

रातरानी की सुगंध को स्वयं में समेटने की वजह से देवर को प्रिय था। बैठक के पीछे का कमरा अपने छोटे आकार और हवा की समुचित व्यवस्था न होने की वजह से मात्र भंडारघर के लिए उपयुक्त था। चौथे कमरे यानी बैठक में ससुर जी का आधिपत्य था। बड़े-से आँगन में एक बरामदा निकाल कर उसके एक भाग में अस्थायी रसोई की व्यवस्था की गयी थी। अब जब घर की हर जगह वस्तु विशेष या व्यक्ति विशेष के लिए निश्चित थी तो दूसरी बहू यानी कि उसे देने के लिए वही बीच का भंडारघर बचा था।

तय हुआ कि सासू माँ की गृहस्थी रसोई के बगल में ही आँगन के बरामदे को थोड़ा और धेरकर उसमें स्थानांतरित कर दी जाये



और उस कमरे के आँगन की तरफ वाली दीवार को तोड़कर वहाँ एक खिड़की बनाकर दूसरे नम्बर वाले बेटे-बहू को दे दिया जाये। बस, तब से लेकर आज तक हजारों रंगीन सपने उसने उसी कमरे की चारदीवारी में देखे। उसी कमरे में पति के साथ मिलकर उसने भविष्य का ताना-बाना बुना था। उसके हर्ष, क्रोध, दुःख, क्षोभ, राग-विराग का एकमात्र मूक गवाह वही कमरा था। फिर एक दिन उसके पति को मुंबई में नौकरी मिल गयी, लेकिन नौकरी छोटी थी। उतनी कम आमदनी में मुंबई जैसे शहर में पली का भी खर्च उठाकर माँ-बाप के लिए कुछ भेज पाना संभव न होता। इसलिए उसे सास-ससुर की सेवा में ही रहना पड़ा। वियोग के एकाकी पलों में भी वह कमरा ही उसका हमर्ददथा।

मकान की बार्याँ तरफ थोड़ी-सी जमीन खाली पड़ी थी। उसमें दो कमरे और बनाने का कार्यक्रम बना। अब चूँकि जेठी बेरोजगार थे और ससुर जी रिटायर हो गये थे। इसलिए कमरे को बनाने में जो खर्च होना था, वह सब उसके पति को ही करना था। घर खर्च के लिए जो पैसे मुंबई से आते थे, उसमें से सौरभ और प्रिया के लिए दूध की व्यवस्था कर दी जाती थी, लेकिन अब उसमें कटौती होने लगी। बच्चे तो अब बड़े हो गये थे, उन्हें दाल-चावल या दूसरी अन्य चीजें खानी चाहिए।

सासू माँ का बेटा पैसे के लिए परदेश में पड़ा है और यहाँ ये बच्चे दूध-भात खाकर ऐश करें, यह उन्हें कैसे बर्दाश्त होता! आखिर उनके बेटे की भी जान है। सो दूध में कटौती कर कमरों के लिए पैसा इकट्ठा किया जाने लगा। न जाने कैसी किस्मत थी उसकी कि सासू माँ की किसी भी योजना-यज्ञ में आहुति उसे और उसके बच्चों को ही बनना पड़ता। जिठानी चूँकि रौबदार घर की थीं और साथ में भरपूर दहेज भी लायी थीं, इसलिए वे सासू माँ के अंकुश की सीमा-रेखा से परे थीं और यदि सासू माँ कुछ कहना भी चाहतीं तो नतमस्तक होकर सुन लेना जिठानी के बस की बात नहीं थी। उसकी बात और थी, उसे बचपन से ही उसकी माँ ने ऐसी शिक्षा दी की सासू माँ के अन्यायपूर्ण व्यवहार का भी विरोध कर पाना उसके लिए असम्भव था। न जाने उसे क्या हो जाता था! जबान तालू में चिपक जाती थी। वह जमाना भी कुछ और था। मन इतना विद्रोही नहीं हुआ करता था।

किसी तरह विषम परिस्थितियों में भी धैर्य रखते हुए वह संयुक्त परिवार को टूटने से बचाये हुए थी। देवर की शादी तक वे दो कमरे बनकर तैयार हो गये थे। जगह की पर्याप्त व्यवस्था हो गयी थी। शादी की भीड़-भाड़ में वे दो कमरे बहुत काम आये थे। देवरानी को रहने के लिए वही कमरा मिला जिसमें उसके पति पहले से ही रहते थे। बगल वाली जमीन के दोनों कमरों को किराये से उठा दिया गया जिससे कुछ अतिरिक्त आमदनी शुरू हो गयी। देवर भी नौकरी पर लग गये थे। सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था। परिवार के इतने सदस्यों के बीच आपसी मन मुटाब होता था लेकिन वह ससुर जी के धीर-गम्भीर व्यक्तित्व और सुलझे विचारों की वजह से तथा सासू जी के दबंगपन से पुनः सामान्य हो जाता था। वैसे सासू जी जितनी अनुशासनप्रिय थीं, उतनी ही ममतामयी

थी। सूझ-बूझ ऐसी कि पूछो मत। यही वजह थी कि परिवार मिल-जुल कर चल रहा था।

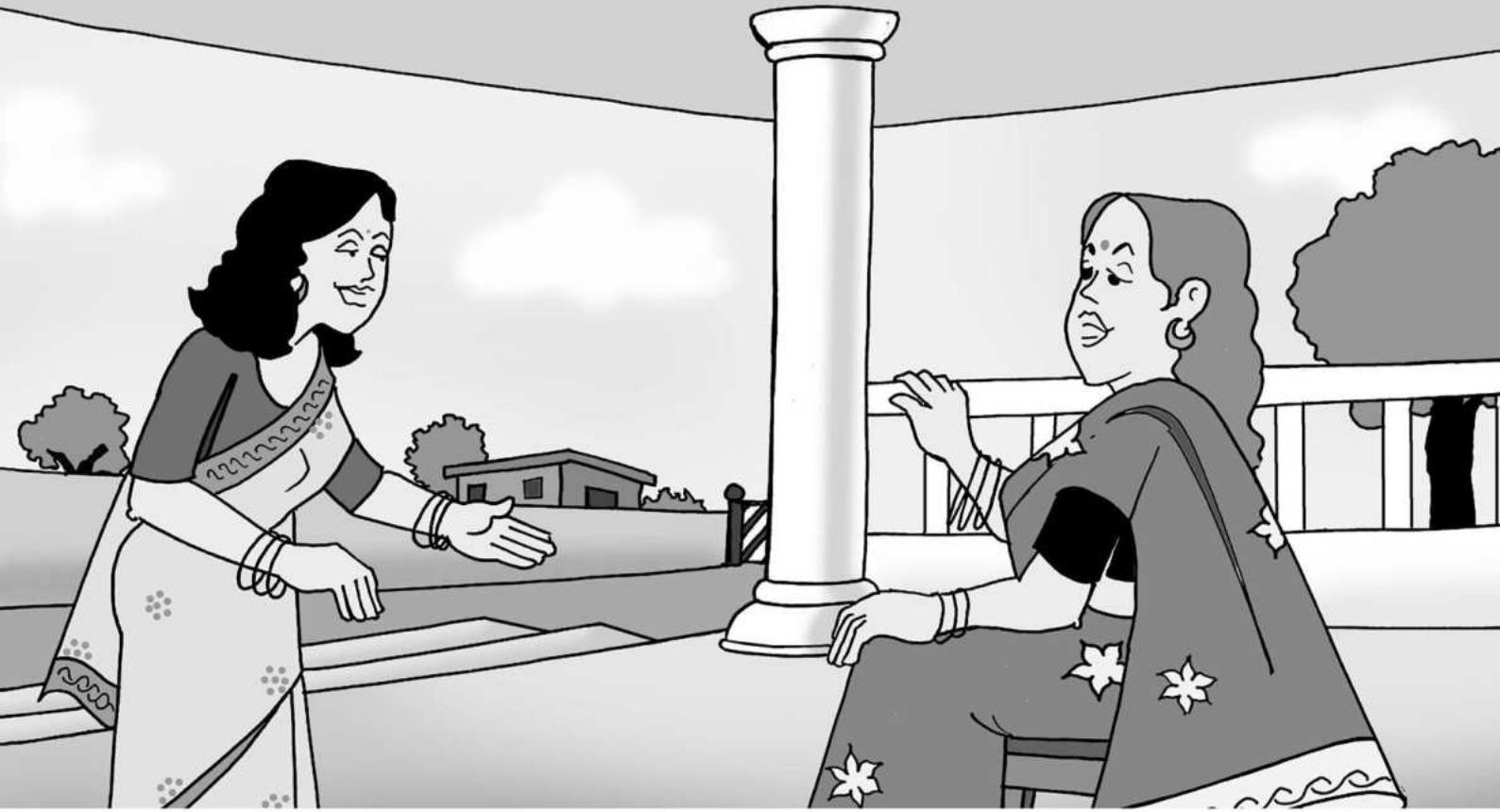
सास-ससुर के देहांत के बाद तीनों भाइयों में मकान का बंटवारा हुआ। बरामदा, बैठक, आँगन की रसोई तथा वही वाला कमरा उसके हिस्से में आया था। पीछे के दोनों बड़े और हवादार कमरे, आँगन, भंडारघर जेठ के हिस्से में गया था। देवर ने नये बने दोनों कमरों को लिया था।

अब बँटवारे में मिले अपने दोनों कमरों को उसने नये ढंग से सजाना शुरू किया। आगे की बैठक, बैठक ही बनी रही। फर्क सिर्फ यह पड़ा कि उसमें सौरभ और प्रिया के पढ़ने की तथा किताब-कॉपी रखने की व्यवस्था कर दी गयी। बीच वाले कमरे में पलंग के बगल दीवार से लगकर दो फुट चौड़ा चार फुट ऊँचा ओटा बनवा लिया गया। ओटे के नीचे तीन-चार रैक निकलवा ली गयी। अब ओटे के नीचे के खानों में तथा ओटे के ऊपर भी सामान रखा जा सकता था। जरूरत पड़ने पर ओटे पर बिस्तर बिछाकर एक व्यक्ति के सोने की व्यवस्था हो जाती थी। पति नौकरी के सिलसिले में मुंबई में ही रहते थे। उसके और उसके दो बच्चों के लिए वह दो कमरों का मकान पूरी तरह पर्याप्त था। उन्हीं दोनों कमरों में वह विविध हेर-फेर कर अपनी कल्पनाशीलता तथा कलाप्रियता का परिचय देती रहती थी।

जब पति रिटायर होकर घर में रहने लगे तो जगह की थोड़ी कमी मस्सूस की गयी। छत के ऊपर एक कमरा बनवाने का प्रस्ताव पारित भी हो गया था, लेकिन पति का हाथ तंग था और फिर प्रिया की शादी भी करनी थी, सो वह प्रस्ताव पारित होते ही निरस्त हो गया। सीमित आमदनी वाले लोगों के यहाँ इसी तरह अनेक योजनाएं बनती और बिगड़ती रहती हैं।

सौरभ बड़ा हो गया था। पढ़ाई पूरी करने के बाद वहीं एक स्कूल में टीचर की नौकरी लग गयी थी उसकी। सौरभ के पिता ने उसका व्याह तय कर दिया। बहू को देने के लिए एकमात्र वही बीच वाला कमरा था। उसने उसे खाली किया। कमरे का पलंग बाहर के बरामदे में डाल दिया गया। छोटे-मोटे सामान कुछ रसोई तथा कुछ बैठक की बंद आलमारी में रखे गये। बहू के माता-पिता ने डबलबेड, सिंगारदान, बड़े-बड़े बक्से आदि दिये थे। जब उसका सामान बीच वाले कमरे में लगाया जाने लगा तो मात्र डबलबेड से ही वह कमरा दो तिहाई से अधिक भर गया। सिंगारदान तथा बड़े बक्से को रखने के बाद तो वह पूरा भरा जा रहा था। ऐसे में कमरे को थोड़ा बड़ा आकार देने के लिए आज उसका ओटा, जिसको बनवाने के बाद उसने राहत की साँस ली थी कि सामान रखने और आराम करने, दोनों की व्यवस्था हो गयी, तोड़ा जा रहा था। बहू के आते ही घर में उसकी सुविधा के लिए तोड़-फोड़ उसे पसंद नहीं आयी थी। उसे लग रहा था कि उसके साम्राज्य पर अचानक आक्रमण हो गया है और उसे किंकर्तव्यविमूँढ़ हो हार मान लेनी पड़ रही है।

स्वामित्व का सुख वह भोग चुकी थी। सब कुछ उसका अपना था। कहाँ क्या रखना है, कहाँ से क्या हटाना है, इसका



निर्णय वही लेती थी। अचानक उसके एकाधिकार पर अंकुश लग रहा था। पूरे मनोयोग से बनायी गयी उसकी योजना, जो पहले पति और बच्चों द्वारा प्रशंसनीय थी, अब निरर्थक साबित हो रही थी। ऐसे हालात में उसे बहु अपनी प्रतिस्पर्धी लगने लगी थी।

उसके मन में नयी बहू के प्रति स्वाभाविक प्रेम और ममता का अंकुर सूखता नजर आ रहा था। आते ही ऐसे लक्षण!! उसे याद आया, एक बार उसने भंडारघर की सफाई करते-करते गलती से चीनी के कनस्टर को गेहूँ की कोठी के पीछे रख दिया था, कितना नाराज हुई थीं उसकी सासू माँ। मजाल क्या कि कोई उनकी व्यवस्था में टाँग अड़ाता। वैसे वे अगर किसी बात पर नाराज होती थीं तो दिन भर शुरू ही रहती थीं। उसने तो मन ही मन उनका नामकरण भी कर दिया था - 'विविध भारती'। अपनी इस दबी शरारत को याद कर आज भी उसके होठों पर हँसी आ गयी।

बरामदे में बैठकर वह ओटा तोड़ने की ठक-ठक की आवाज सुन रही थी। ओटे का बिछोह उसे आत्मिक जन के बिछोह से कम नहीं लग रहा था। उसे लग रहा था, हथौड़े का हर बार उसके सीने पर ही हो रहा है। उसके पति कैसे चुपचाप यह काम करवा रहे हैं? कम से कम उन्हें तो पत्नी की भावनाओं को समझना चाहिए था। उसने पति के लिए पति के परिवार के लिए हमेशा त्याग ही किया है। कभी कोई खालिश नहीं, कोई इच्छा नहीं, कोई शिकायत नहीं। हर परिस्थिति में समझौता कर लेना उसकी आदत बन गयी थी। आज उसकी इच्छा हो रही थी कि उसके पति उसके पक्ष में कुछ बोलें।

क्या सच में कमरा इतना छोटा है कि उसमें बहु का सामान नहीं आ सकता? नहीं, ऐसा नहीं है। सिंगारदान पलंग के बगल में

रखा जा सकता है और टीन के बड़े बक्से को ओटे के ऊपर। छोटे-मोटे अन्य सामान के लिए पलंग के नीचे की जगह पर्याप्त है। कमरा थोड़ा भर जरूर जाएगा, लेकिन ओटा तो टूटने से बच जाएगा।

कुछ क्षोभ, कुछ क्रोध और कुछ उदासी में ढूबी वह बरामदे में बैठी थी, तभी बहु आकर बोली - "माँ! आज खाने में क्या बना लूँ?" उसने चौंक कर बहू की तरफ देखा - कितना निश्छल चेहरा! वाणी में आदर और प्रेम का कैसा मिश्रण! आँखें नयी दुल्हन के लिहाज से झुकी हुई, सास के अस्तित्व को शिरोधार्य करती सिर झुकाये सामने खड़ी, चंद दिनों में ही काम की जिम्मेदारी अपने सिर पर ले लेने वाली उसकी बहु आक्रमण करने वाली तो नहीं हो सकती! यह तो एकदम नाजुक कली है, इसे तो सहारा चाहिए, उसका अपना सहारा।

इस कली की खुशबू पूरी बगिया में फैले, इसलिए उसे अपनी बासी सुगंध समेटनी पड़ेगी। नयी कोंपल पल्लवित होकर आच्छादित हो सके, इसलिए ठूंठ को हटना ही पड़ेगा। अपनी कर्तव्यपरायणा बहु के लिए वह स्वयं ऐसा करेगी। पुराने ओटे का गम कैसा? आने वाली बहार क्या कम लुभावनी होगी?

वह एक झटके में उठी, अपनी साड़ी को झाड़ मन की मैल को उड़ा दिया तथा बीच वाले कमरे में जाकर मजदूरों को काम जल्दी खत्म कर कमरा ठीक ढंग से साफ करने की हिदायत देने लगी।

अमरावती में रहने वाली लेखिका इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विधिविद्यालय में काउंसलर पद पर कार्यरत रहने के साथ ही साहित्य सूजन में संलग्न हैं। विभिन्न विधाओं में आपकी अनेक कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं।



कजरी : परंपरा तथा आधुनिकता का समन्वय

सा वन का जिक्र आये और कजरी की बात न हो तो चर्चा कुछ अधूरी-सी लगेगी। कजरी गाने का चलन तीन महीने तक चलता है - आषाढ़, सावन तथा भादो। कजरी का प्रारंभ जोठ के आखिरी समय में अर्थात् गंगा दशहरा से हो जाता है, पर कजरी के चढ़ान व चरम का महीना सावन ही होता है। कजरी का मूल संबंध मेघ तथा मल्हार से है। एक परंपरा अतीत में रही है कि जब औरतें धान की रोपनी करने खेत में जाती थीं तो सबसे पहले वह मिट्ठी लेकर खेत के मालिक के चरण पर रखती थीं और मिट्ठी का तिलक करके कजरी गाया करती थीं। एक प्रसिद्ध गीत है - "नीचवा बिनई माई धरती के उपरा आकाश बिनई ए राम। ए राम खेतवा बिनई बाला खेतपात, संगे उनकर बहुअरी ए राम...!"

भारतीय समाज में अनेक कजरियां गायी जाती हैं। जैसे एक प्रसिद्ध लोकगीत है - "बरिसे बरिसे असरेसवा गिरेला बखरी/ पाँच रुपझिया के रजउ तोर नौकरी/ ए में झूलनी गढ़ाइब कि उठइबे बखरी...।" गीत का भावार्थ यह है कि महिलाएं धन कमाने वाले पति से कहती हैं कि तेज बारिश हो रही है और घर ढह रहा है, पाँच रुपये की नौकरी करते हो तो इस पाँच रुपये से पहले घर ठीक करवाएं या फिर अपने लिए झूलनी गढ़वाएं।

कजरी उत्तरप्रदेश के मिर्जापुर क्षेत्र में सबसे लोकप्रिय है। पहले वहाँ कजरी का दंगल होता था, रात भर कजरी का गायन होता था जिसमें महिला कलाकार भी आती थीं। मेला भी लगता था। कजरी की उत्पत्ति को लेकर कई मिथकीय कथाएं प्रचलित हैं। ऐसी ही एक कथा के अनुसार, विंध्याचल धाम में जो विंध्यवासिनी देवी हैं, उनका नाम भी कज्जली देवी है, ऐसा माना जाता है कि कजरी की उत्पत्ति भी उनसे ही हुई है। ऐसा भी कहा जाता है कि मेघ वाले बादल का रंग काला होता है जिसके कारण भी इस विधा का नाम कजरी पड़ा।

कजरी में परंपरा तथा आधुनिकता का अद्भुत सामंजस्य है। प्रकृति कजरी के मूल में है। जब तक कजरी स्त्रियों के अधिकार



सामाजिक जीवन में लोककलाओं का अपना महत्व है। ये हमें अपनी संस्कृति और विरासत से जोड़ती हैं। इन्हें रूढ़ परम्पराएँ मानकर दरकिनार कर देना उचित नहीं है वरन् इनके पीछे जुड़ी जमीनी सच्चाइयों को जानकर बेहतर जीवनशैली की प्रेरणा प्राप्त की जा सकती है।

में रहा, तब तक इसके गीत प्रकृति, सृष्टि, मेघ, नदी, आनंद, पूजा-पाठ आदि तक सीमित रहे। जब यह महिलाओं के दायरे से बाहर निकला, अखाड़े का संगीत बना, तब से यह समकालीन विषय हो गया। गिरिजा देवी कजरी को एक नयी ऊँचाई पर ले गयीं। बिस्मिल्लाह खान ने इसके दो लोकप्रिय गीतों को संगीतबद्ध किया - "मिर्जापुर कइले गुलजार हो..." और "पिया मेहंदी लिया द मोतीझील से..."। छन्नूलाल मिश्र वर्षों से इसे गाते हैं।

कजरी कई टेक के साथ गायी जाती है 'अरे राम...', 'हरि हरि...', 'अरे सांवरिया...', 'झीर झीर बुनिया...।' इसके दो दर्जन के करीब टेक चलते हैं। आज भी मिर्जापुर के इलाकों में कजरी के कई उस्ताद मिल जाते हैं जिन्होंने कजरी की परंपरा को जीवित रखा है। लोकगीतों की परंपरा को जीवित तथा संरक्षित रखने की जिम्मेदारी हर एक नागरिक की होनी चहिए क्योंकि इन लोकगीतों में हमारी संस्कृति की आत्मा बसती है। ■





परिचय

“क्या हैं स्वतंत्रता के असली मायने”

जून अंक में प्रस्तुत परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदु -

प्रत्येक नागरिक को मिले शांति और सुरक्षा

'स्वतंत्रता' अर्थात् अपने नियमों पर चलना और 'स्वाधीन' अर्थात् आत्मनिर्भर जो अपना जीवन अपनी मर्जी से जिये, लेकिन क्या ऐसा है? आजादी के पहले हम अंग्रेजी हुकूमत के गुलाम थे और आज हम अपने ही लोगों के बनाये कानूनों में बँधे हुए हैं तो फिर हम स्वतंत्र कैसे हुए? आजादी के बाद पिछले 75 वर्षों में हम देख सकते हैं कि जनता का जीवन स्तर मात्र दस प्रतिशत बढ़ा होगा जबकि हमारे नेताओं की सम्पत्तियां आज करोड़ों में पहुँच चुकी हैं। आमजन दो जून की रोटी की तलाश में घर से पलायन करने पर मजबूर है। आज भी हम अपने हक के लिए हमारी ही चुनी सरकार के सामने फाइलें लेकर गिड़गिड़ते फिरते हैं। असली स्वतंत्रता तो तब मिलेगी जब हमारे देश से भ्रष्टाचार, घूसखोरी, हत्या, जैसे जघन्य अपराध समाप्त होकर शांति और सुरक्षा प्रत्येक नागरिक को मिलेगी।

-सुशीला शर्मा, जयपुर

वतन से प्यार करना सीखें

हम अपनी सनातन संस्कृति व रीति-रिवाजों को भूलकर पश्चिमी सभ्यता में रंगते जा रहे हैं। आज भी हम अंग्रेजी भाषा, विदेशी पहनावे और पश्चिमी संस्कृति के गुलाम हैं। जात-पात-धर्म, ऊँच-नीच के भेदभाव से ग्रसित हैं। इंसान द्वारा इंसान का शोषण किया जा रहा है। किसी भी राष्ट्र का भविष्य तभी उज्ज्वल होता है जब वह अपने अतीत के अनुभवों और विरासत के गर्व से पल-पल जुड़ा रहता है। भारत के पास गर्व करने के लिए समृद्ध ऐतिहासिक चेतना और सांस्कृतिक विरासत का अथाह भंडार है। हम अपने देश की मिट्टी से, अपने वतन से प्यार करना सीखें और सबको प्रेरित करें। स्वच्छता पर ध्यान दें। अधिक से अधिक पेड़-पौधे लगाएं तथा विशिष्ट अवसरों पर पेड़-पौधे ही भेंट करें।

-डॉ. निशा नदिनी भारतीय, तिनसुकिया

विकारों पर हो संयम का अंकुश

स्वाभिमान और आत्मसम्मान से जीवन जीना, हीन मानसिकता से मुक्ति, समानता और समरसता का अधिकार, शोषण से आजादी, कुविचारों और रूढ़िवादी परंपराओं को तिलांजलि, बड़ों का सम्मान, छोटों के प्रति स्नेह और विचारों की अभिव्यक्ति ही स्वतंत्रता के वास्तविक मायने हैं। सही मायने में हम आजाद उस दिन होंगे जिस दिन सभी के चेहरों पर मुस्कान तैर रही होगी, कोई भी बदहाल न होगा, सभी खुशहाल होंगे। कहने को आज हम स्वतंत्र अवश्य हैं किंतु असहिष्णुता और पाश्चात्य संस्कृति ने हमें अपना गुलाम बनाया हुआ है। हमें सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, वैयक्तिक, दैहिक, शैक्षिक, आध्यात्मिक, वैचारिक और सात्त्विक स्वतंत्रता मिले और हम उसका अनुचित विदोहन नहीं करें, तभी आजादी और उसके मायने सार्थक होंगे। यदि हम हीनभाव से बाहर नहीं आएंगे तो यह माना जाएगा कि हम परतंत्र हैं। मन के विकारों पर संयम का अंकुश ही सही अर्थों में आजादी है।

-नलिन खोईवाल, इंदौर

स्वतंत्रता है पूर्णतः प्राकृतिक

वैश्वीकरण के इस युग में हम प्रगति पथ पर आगे बढ़ते आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) तक का सफर तय कर चुके हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का मुख्य धारा में शामिल होना हमारी परतंत्रता का द्योतक है। भाषा के साथ भाषाई संस्कृति का प्रवाह भी हमारी स्वतंत्रता को छिन्न-भिन्न कर परतंत्रता को स्पष्ट कर रहा है। हम अपनी आगामी पीढ़ी को अपनी मातृभाषा में शिक्षा व ज्ञान दे पाने का सामर्थ्य अभी तक भी जुटा नहीं पाये हैं। यह भी परतंत्रता का ही द्योतक है। हम प्राकृतिक स्वतंत्रता से दूर कृत्रिम परतंत्रता में गोते खा रहे हैं। स्वतंत्रता पूर्णतः प्राकृतिक है। परतंत्रता अप्राकृतिक हुआ करती है।

-डॉ. चेतना उपाध्याय, अजमेर



असली आजादी के आह्वान का हार्द

जब हिन्दुस्तान आजाद हुआ तब दूरदृष्टा संत आचार्य तुलसी ने देखा कि आजादी के जुनून में हमलोग आगे तो बढ़ रहे हैं किन्तु यह शायद वह आजादी नहीं जिसका सपना वीरों ने देखा था। अगर इसी तरह हम चलते रहे, तो वह दिन दूर नहीं, कि हम एक बार पुनः गुलामी की बेड़ियों में बंध जाएंगे। और यह गुलामी शारीरिक नहीं बल्कि मानसिक गुलामी होगी। इस गम्भीर समस्या पर चिन्तन करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने जीवनशैली का एक आयाम बनाया। इस पर चलकर हम स्वयं का, परिवार का, समाज एवं राष्ट्र का कल्याण कर सकते हैं।

इस जीवनशैली का पहला सूत्र है सम्पर्दर्शन जिससे समाज में फैल रहे अंधविश्वास और अंधानुकरण की वृत्ति से छुटकारा मिल जाता है और वह सत्य के प्रति श्रद्धा करने लगता है। दूसरा सूत्र अनेकान्त - आग्रह और कलह से बचने का अमोघ उपाय है। तीसरा सूत्र है - अहिंसा। इससे हृदय में करुणा की चेतना का विकास होता है। चौथा सूत्र समानता, शान्ति और श्रमशीलता को अपनाना है। पाँचवां सूत्र इच्छापरिमाण के द्वारा इच्छाओं का नियंत्रण कर संग्रह और उपभोग की सीमा करता है। छठा सूत्र है सम्यक् आजीविका - इससे व्यक्तिलोक में घृणित माने जाने वाले व्यक्तियों से दूर रहता है तथा व्यापार में भी साधन-शुद्धि को प्रमुखता देता है। सातवां सूत्र है सम्यक् संस्कार द्वारा अपने परिवारों में सुसंस्कारों का बीजारोपण। आठवां सूत्र आहारशुद्धि व व्यसनमुक्ति। खाद्य-संयम सध जाये तो स्वास्थ्य की पहली भी सहजता से सुलझ जाती है। इस आयाम का अन्तिम और नौवां सूत्र है साधर्मिक वात्सल्य। इससे भाईचारे की भावना का सिंचन होता है। इस जीवनशैली में समाहित गुण वास्तव में हमें आजादी का अनुभव करवाते हैं और यही है सच्ची आजादी जिसके लिए हमारे पूर्वजों ने बलिदान दिया।

-जितेन्द्र पारसमल जैन, अहमदाबाद

कर्तव्य का बोध आवश्यक

हर प्राणी को अपनी आजादी जान से भी ज्यादा प्यारी होती है। हमारे देश को वर्ष 1947 में आजादी हासिल हुई। हमने आजादी का दुरुपयोग किया। अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों को भूलते चले गये जिसके कारण लोकतंत्र अपने स्वाभाविक स्वरूप में विकसित नहीं हो पाया। चुनावों में धांधली, धनबल और बाहुबल का अनुचित प्रयोग, झूठे वादे, सपने बेचकर बोट हासिल करना। इन सब बातों से लोकतंत्र को ठेस पहुँची। आजादी तभी अपनी गरिमा हासिल कर पाएगी जब हम सभी नागरिक सच्चे मन से देश और समाज में लोकतंत्र की स्थापना करेंगे। अपने नागरिक होने का फर्ज अदा करेंगे। आने वाली पीढ़ी के बेहतर भविष्य के लिए अभी से सही दिशा में सार्थक सामूहिक प्रयास करने होंगे, तभी देश का भविष्य उज्ज्वल होगा।

-इंद्रजीत कौशिक, बीकानेर

हर क्षेत्र में हो सुखद वातावरण

किसी भी देश के स्वतंत्र होने का अर्थ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ऐसा सुखद वातावरण तैयार करना है जिसमें रहकर उसका प्रत्येक निवासी अपने इच्छित क्षेत्र में फले-फूले और देशसेवा में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अपना सहयोग दे सके। आज हमारे देश का माहौल बड़ा चिन्तनीय है, कौन देश का रक्षक है और कौन भक्षक, यह जानना बड़ा कठिन हो चला है। जो देश हित में काम करता है, उसके मार्ग में हजार व्यवधान डाले जाते हैं। सबसे पहले एक देशभक्त सरकार का होना आवश्यक है, फिर उसके महान कार्यों में कोई व्यवधान न डाल सके, इसके लिए राष्ट्र विरोधी ताकतों को जड़ से खत्म करने का प्रयास होना चाहिए।

-सन्ध्या गोयल सुगम्या, गाजियाबाद

स्व का पुनरुत्थान हो

आजादी के मतवालों का केवल एक स्वप्न था - स्व का पुनरुत्थान। क्रांतिवीरों के स्वर में 'स्व' का अभिप्राय स्व शिक्षा प्रणाली, स्व समाज व्यवस्था, स्वसंस्कृति, स्वर्धर्म और स्वभाषा था, परंतु दुर्भाग्यवश देश की स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मनाने के बाद भी इस 'स्व' को दबाने का षड्यंत्र चलता रहा। हम एक स्वतंत्र नागरिक की भूमिका नहीं निर्वाह कर पा रहे हैं। आज आदर्श चरित्र के अभाव में चरित्र का संकट है। जो महान उद्देश्य हमारे जीवन को सार्थक बनाएगा, उसे चिंतन, अनुभव, अनुभूति एवं पुरुषार्थ से पाना होगा।

मिली नहीं असली आजादी, केवल सिर पर ताज मिला।

मद में ढूबे सत्ताधारी, जन को नहीं सुराज मिला।

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

ईमानदार प्रयास करने होंगे

दो सौ वर्ष की अंग्रेजों की गुलामी से भारत ने प्रशासनिक तौर पर स्वतंत्रता तो हासिल कर ली, पर शिक्षा का प्रयोजन आज भी एक अद्द नौकरी का लक्ष्य पा लेने तक सीमित है। नौकरी पाने वाली सोच बनाने वाले से अधिक नौकरी देने वाली सीख सिखाने वाला पाठ्यक्रम अभी भी बाट जोह रहा है। हर शख्स को निर्भीक और प्रफुल्लित जीने की आजादी देने वाला माहौल उपलब्ध करने हेतु सत्ता में बैठे लोगों को और अधिक ईमानदार प्रयास करने होंगे। स्वतंत्र भारत में स्वतंत्र विचार उन्मुक्त सोच वाले सौ प्रतिशत भारतीयों के समाज को देखना अभी एक दिवास्वप्न ही है।

-संदीप पांडे 'शिष्य', अजमेर

मर्यादापूर्ण हो जीवनशैली

दासता या गुलामी एक बहुत बड़ा अभिशाप है। मनुष्य की तो बात ही क्या, पशु-पक्षी भी स्वतंत्रता चाहते हैं। स्वतंत्रता के 77 वर्ष पश्चात् भी भारत के नागरिकों को वह स्वतंत्रता प्राप्त नहीं है

जिसकी कल्पना हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने की थी। इसका मुख्य कारण यह है कि लोगों ने स्वतंत्रता को स्वच्छता मान लिया। जब भारत आजाद हुआ तो आचार्य श्री तुलसी को आशंका थी कि आजादी की उमंग कहीं उन्मुक्तता में बदलकर धातक सिद्ध न हो जाये, इसलिए उन्होंने लोगों को मर्यादित स्वतंत्र जीवन जीने की कला सिखाने के लिए अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से जन जागरण का अभियान चलाया। वास्तव में यदि हमें स्वतंत्रता पूर्वक रहना है तो कानून एवं संविधान के साथ-साथ मर्यादापूर्ण जीवन को अपना महत्वपूर्ण जीवनशैली बनाना पड़ेगा।

-सुभाष जैन, टोहाना

समानता तथा एकत्र का भाव आवश्यक

हमारे देश में भ्रष्टाचार, अनीति, भूषणहत्या, बेकारी ने अभी तक पाँव पसार रखे हैं। गुरुदेव तुलसी ने जो अणुव्रत का बीज बोया था, भारत उन नियमों पर खारा नहीं उतरा है। हम विकास के क्षेत्र में बहुत आगे बढ़ रहे हैं, लेकिन इस तथ्य को नहीं नकारा जा सकता है कि जो पिछड़ा है, वह और अधिक पिछड़ रहा है। जब तक सकारात्मक सोच, समानता तथा एकत्र का भाव नहीं होगा, तब तक पूर्ण रूप से स्वतंत्र होना मेरी समझ से परे है।

-ममता जैन कच्छारा, अहमदाबाद

आत्मिक स्वाधीनता की आवश्यकता

आजादी के साढ़े सात दशक बाद भी सभी क्षेत्रों में व्यास कुटिलता और कलुषिता के कारण मनुष्य कर्तव्यों से विमुख होकर स्वार्थों, तृष्णाओं और विषय-वासनाओं का गुलाम बनकर रह गया है। ईर्ष्या, द्वेष और अभिमान से घिरकर वह परतंत्रता में जी रहा है। हम आत्मिक दृष्टि से स्वाधीन होने पर ही पूर्ण स्वतंत्र होंगे। जब हमारे शरीर, मन और बुद्धि पर पूरी तरह हमारा ही शासन हो

और वे सब केवल हमारी इच्छा के अनुसार संचालित होते हों तभी हम स्वतंत्र कहे जा सकेंगे। इसके लिए हमें भौतिकवादी दृष्टिकोण को त्यागकर आध्यात्मिकता का मार्ग अपनाना होगा। सांसारिक प्रलोभनों का त्याग करके आत्मिक वृत्तियों का शुद्धीकरण करना होगा। आध्यात्मिक ज्ञान ही आत्मिक शक्ति को जाग्रत करने का मुख्य साधन है। आत्मिक स्वाधीनता का अर्थ है - सम्पूर्ण भौतिक पदार्थों और भौतिक जगत की चकाचौंध से विरक्त रहना। पूर्ण स्वाधीनता की इच्छा रखने वाला कभी अपने अधिकारों की दुहाई नहीं देता। वह निष्काम कर्म करते हुए कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ता जाता है और आत्मिक अनन्द की अनुभूति करता है। कामनापूर्ण कर्म में स्वार्थ की गंध होती है जिससे दूसरों के हृदय में अविश्वास के भाव पैदा होते हैं। इसलिए स्वार्थ का परित्याग करके हमें आत्मिक भाव के विस्तार से सर्व के हितार्थ कार्य करना चाहिए ताकि आत्मविकास की सच्ची स्वतंत्रता प्राप्त की जा सके।

-डॉ. कैलाश चन्द्र सैनी, जयपुर

बुराइयों के खिलाफ बुलंद हो आवाज

देश के शहीद सेनानियों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि तब अर्पित होगी जब स्वतंत्र हवा में बेटियाँ खेल सकें, उनकी अस्मिता, मौलिकता को कोई न छू सके। सत्य, अहिंसा के लिए मूल्य न चुकाना पड़े। आजादी के असली मायनों से परिचित होने के लिए देश के हर नागरिक को भ्रष्टाचार एवं गरीबी जैसी बुराइयों के खिलाफ आवाज बुलंद करनी होगी। देश की युवा शक्ति को इतना निर्दर, प्रबल, निर्गुण, निरामय, ईमानदार और जागरूक होना चाहिए कि वह स्वतंत्रता को गौरव और मजबूती से अपने कंधों पर संभाल सके।

-आस्था नाहटा, गुवाहाटी

अगली परिचर्चा का विषय

"हर वर्ष क्यों पैदा हो जाते हैं नये रावण"

विजयदशमी या दशहरा - बुराई पर अच्छाई की विजय का पर्व। इस दिन हर वर्ष हजारों-लाखों रावण जलाये जाते हैं। 'रावणों' का नाश कर हम विजय का हर्षोल्लास मनाते हैं। पर क्या, हम रावण को असल में मार पाते हैं? क्या बुराई पर सच्चाई की जीत के इस प्रतीक का कोई अर्थ है? क्या हमारे जीवन में कोई बदलाव आ पाता है? क्या समाज में कोई बेहतरी नजर आती है? रावण रूपी बुराई का अंत करने के लिए भगवान राम को लम्बा संघर्ष करना पड़ा था, गहन साधना करनी पड़ी थी। एक दिन रावण फूँक कर हम कैसे स्वयं को विजयी घोषित कर सकते हैं?

'अणुव्रत' पत्रिका के अक्टूबर 2024 अंक में प्रकाशित होने वाली परिचर्चा हेतु इन्हीं सब मुद्रों पर आमंत्रित हैं आपके विचार। रचनात्मक, प्रयोगधर्मी और अनुभवजन्य विचारों को प्रकाशन में प्राथमिकता दी जाएगी। अपने विचार अधिकतम 200 शब्दों में हमें 10 सितम्बर 2024 तक 9116634512 पर व्हाट्सएप के माध्यम से भेजें।



सोसायटी नातक मूल्या के संवर्धन एवं स्वस्थ समाज और चना के लिए राष्ट्रीय एवं मंतरराष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत वैचित्रक संस्था है। अणुविभा बाल पीढ़ी के वर्गीण विकास के लिए एक सेक्युरिटी प्रकल्प संचालित ही है। उसमें से एक अहत्वपूर्ण प्रकल्प है केडजोन।

अणुव्रत समिति द्वारा आयोग से उत्तमतुर्मास प्रवास वेहर सूरत में आज केडजोन का शुभारंभ किया गया।

दिनांक 21 जुलाई 2024 को प्रातः 7:30 बजे, अणुव्रत अनुशासनी महाश्रम वारडाल के नीड्जोन में विधायक ने नमस्कार महामंगल पाठ सुनाया एवं केडजोन में प्रवेश कर समग्र

अपन साक्षर एवं सारणाभत उद्घोषन में फरमाया कि बाल पीढ़ी हमारे समाज और देश

अणुव्रत समाचार

मनोरंजन के साथ अच्छा ज्ञान और अच्छे संस्कार भी मिलते रहे इस हेतु केडजोन के संचालकों का प्रयास होने रहे हैं। उन्होंने स्पर्धित के

आधक स आधक कोड्जान शुरू करने का आह्वान किया।

राजेश सुराणा ने केडजोन के निर्माण एवं संचालन के लिए अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत द्वारा किए थे शम की सराहना की। विधायक महाश्रमण प्रवास वेहर समिति सूरत के अध्यक्ष संजय सुराणा, नाना बाबू बाटौड, उपाध्यक्ष अणुविभा पायल आदि ने व्यक्ति की।

कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत के संजय बोथरा ने किया।

संचालक टीम के द्वालावत, ग्रेटर सूरत एवं उनकी रहकर आदि के जानकारी दी।

विधिवत उद्घाटन किया। भीक मचंद सुराणा ने



अनुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

द्वारा प्रदत्त किये जाने वाले अणुव्रत आंदोलन के विभिन्न पुरस्कारों—सम्मानों हेतु वर्ष 2024 के लिए

नामांकन आमंत्रित

अणुव्रत पुरस्कार

नैतिकता और चारित्रिक उन्नयन का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करने वाले एवं इस दिशा में उत्कृष्ट योगदान देने वाले विशिष्ट व्यक्तियों या संस्थाओं को अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। पुरस्कार स्वरूप 1.51 लाख रुपये का चैक, प्रशस्ति—पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान किये जाते हैं।

अणुव्रत अहिंसा अंतरराष्ट्रीय शांति पुरस्कार

अणुव्रत के मूल्यों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने में अनुकरणीय भूमिका निभाने वाले विशिष्ट व्यक्तियों को 'अणुव्रत अहिंसा अंतरराष्ट्रीय शांति पुरस्कार' से सम्मानित किया जाता है। पुरस्कार स्वरूप 1 लाख रुपये का चैक, प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान किये जाते हैं।

अणुव्रत गौरव सम्मान

अणुव्रत आंदोलन के प्रति गत 20 से अधिक वर्षों से संलग्न ऐसे समर्पित अणुव्रत कार्यकर्ताओं को 'अणुव्रत गौरव' सम्मान प्रदान किया जाता है जिनकी आयु 50 वर्ष से अधिक हो एवं जिनका स्वयं का जीवन अणुव्रत जीवनशैली का उल्लेखनीय उदाहरण हो। सम्मान स्वरूप प्रशस्ति—पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान किये जाते हैं।

जीवन विज्ञान पुरस्कार

जीवन विज्ञान को अधिक से अधिक विद्यालयों और विद्यार्थियों तक पहुँचाने में 20 से अधिक वर्षों से संलग्न ऐसे समर्पित कार्यकर्ताओं या प्रशिक्षकों को प्रतिवर्ष जीवन विज्ञान पुरस्कार प्रदान किया जाता है जिनकी आयु 50 वर्ष से अधिक हो। पुरस्कार स्वरूप 1 लाख रुपये का चैक, प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान किये जाते हैं।

अणुव्रत लेखक पुरस्कार

अणुव्रत दर्शन के अनुरूप उत्कृष्ट, नैतिक एवं आदर्श लेखन के लिए विशिष्ट लेखक, कवि, पत्रकार अथवा साहित्यकार को 'अणुव्रत लेखक पुरस्कार' प्रदान किया जाता है। पुरस्कार स्वरूप 51 हजार रुपये का चैक, प्रशस्ति—पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान किये जाते हैं।

○○○

- * उपरोक्त पुरस्कारों के लिए नामांकन निर्धारित प्रपत्र में सम्पूर्ण जानकारी के साथ आमंत्रित हैं।
- * नामांकन पत्र अनुविभा की वेबसाइट <https://anuvibha.org/anuvibha-awards/> लिंक पर उपलब्ध है।
- * सभी संलग्नक के साथ नामांकन प्रपत्र संस्था मुख्यालय अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, चिल्डन'स पीस पैलेस, राजसमंद—313326 पर 31 अगस्त, 2024 तक व्यक्तिशः, कोरियर या डाक द्वारा पहुँच जाने चाहिए। चयन समिति द्वारा लिया गया निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा।





Anuvrat Balodaya's
KIDZONE
Fun | Creativity | Learning

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा) नैतिक मूल्यों के संवर्धन एवं स्वस्थ समाज संरचना के लिए राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत स्वैच्छक संस्था है। अणुविभा बाल पीढ़ी के सर्वांगीण विकास के लिए भी अनेक प्रकल्प संचालित कर रही है। उनमें से एक महत्वपूर्ण प्रकल्प है किडजोन।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा आचार्य महाश्रमण चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति सूरत एवं अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत के सहयोग से आचार्य महाश्रमण चतुर्मास प्रवास स्थल संयम विहार सूरत में 21 जुलाई को किडजोन का शुभारंभ किया गया।

प्रातः 7:30 बजे अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण महावीर समवसरण प्रवचन पंडाल के निकट बने हुए किडजोन में पधारे और अपना आशीर्वाद प्रदान किया। पूज्य प्रवर ने मंगल पाठ सुनाया एवं समग्र किडजोन का अवलोकन किया।

अणुव्रत अनुशास्ता ने अपने संक्षिप्त एवं सारगर्भित उद्बोधन में फरमाया कि बाल पीढ़ी हमारे समाज और देश का भविष्य है। समाज को स्वस्थ एवं देश को उन्नत बनाना है तो बाल पीढ़ी को सुसंस्कारी बनाने पर पूरा ध्यान देना होगा। यहाँ आने वाले सभी बच्चों को मनोरंजन के साथ अच्छा ज्ञान और अच्छे संस्कार भी मिलते रहें, इस हेतु किडजोन के संचालक प्रयासरत रहें। उन्होंने खेल के साथ-साथ सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के पाठ भी पढ़ाते रहने की प्रेरणा दी।

बाल पीढ़ी है हमारे समाज और देश का भविष्य : आचार्य महाश्रमण
अणुव्रत अनुशास्ता का सूरत के 'संयम विहार' में बने किडजोन में पावन पदार्पण





अणुव्रत विश्व भारती के महामंत्री भीकमचंद सुराणा, उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, सूरत के अध्यक्ष संजय सुराणा एवं अणुव्रत समिति, ग्रेटर सूरत के अध्यक्ष विमल लोढ़ा ने रिबन खोलकर किडजोन का विधिवत उद्घाटन किया। महामंत्री भीखम सुराणा ने किडजोन के उद्देश्यों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी एवं अणुव्रत समितियों से अधिक से अधिक किडजोन शुरू करने का आह्वान किया। उपाध्यक्ष राजेश सुराणा ने किडजोन के निर्माण एवं संचालन के लिए अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत द्वारा किये गये श्रम की सराहना की। आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति सूरत के अध्यक्ष संजय सुराणा एवं अणुव्रत समिति अध्यक्ष विमल लोढ़ा ने भी विचार रखे।

इस अवसर पर व्यवस्था समिति के महामंत्री नानालाल राठौड़, उपाध्यक्ष अंकेश भाई दोशी, अणुविभा संगठन मंत्री पायल चोरड़िया, गुजरात राज्य प्रभारी अर्जुन मेडतवाल, बारडोली समिति के अध्यक्ष राजेश चौरड़िया, अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत के मंत्री संजय बोथरा की महत्वपूर्ण उपस्थिति रही। रेखा ढालावत, रेणु नाहटा सहित किडजोन संचालक टीम ने किडजोन में बच्चों के लिए उपलब्ध गेम आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर अणुविभा पदाधिकारियों के साथ स्थानीय अणुव्रत समिति व किडजोन टीम के कार्यकर्ताओं की बैठक हुई जिसमें पूरे चतुर्मास काल में किडजोन के सफल व उद्देश्यपरक संचालन के विभिन्न पक्षों पर चिंतन हुआ।



अणुविभा के गौरवशाली प्रकाशन 'बच्चों का देश' का रजत जयंती समारोह 16 से राजसमंद में देशभर से जुटेंगे बाल साहित्य रचनाकार



राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित मासिक बाल पत्रिका 'बच्चों का देश' का रजत जयंती समारोह 16 से 18 अगस्त 2024 तक अणुविभा के राजसमंद स्थित मुख्यालय 'चिल्डन' स पीस पैलेस' में मनाया जाएगा। अणुविभा द्वारा प्रकाशित नई पीढ़ी के नवनिर्माण को समर्पित इस बाल पत्रिका को देशभर में प्रतिष्ठा प्राप्त है और 25 राज्यों में इसका पाठक वर्ग फैला है। देश की महान विभूतियों ने इसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की है और एक जागरूक, जिम्मेदार और मानवीय मूल्यों को समर्पित श्रेष्ठ व्यक्तित्व के निर्माण में इसकी रचनात्मक भूमिका को रेखांकित किया है।

रजत जयंती पर आयोजित हो रहे तीन दिवसीय 'राष्ट्रीय बाल साहित्य समागम' में 15 राज्यों के लगभग 100 बाल साहित्य रचनाकार भाग लेंगे।

समागम में बाल साहित्य विषयक सात सत्र एवं समूह चर्चाएँ आयोजित होंगी जिनमें बाल पत्रिका : भविष्य की अपेक्षाएं और समाधान, एक सफल बाल साहित्य रचनाकार होने के मायने, राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में हिन्दी बाल साहित्य की दशा और दिशा, आदर्श व्यक्तित्व निर्माण में बाल साहित्य का योगदान, बाल साहित्य का पठन-पाठन : समाज व परिवार का दायित्व, बाल साहित्य रचनाधर्मिता : चुनौतियाँ और समाधान जैसे विषयों पर राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त साहित्यकार विचार व्यक्त करेंगे।

बच्चों के साथ संवाद करेंगे साहित्यकार

रजत जयंती समारोह के अन्तर्गत अणुविभा द्वारा एक नवाचार किया जा रहा है जिसमें देशभर से समागत बाल साहित्य रचनाकार 17 अगस्त को राजसमंद क्षेत्र के 25 से अधिक अलग-अलग स्कूलों में जाएंगे और बच्चों के साथ सीधा संवाद करेंगे। यह संवाद जहाँ कहानी, कविता, नाटिका, गीत आदि विविध विधाओं में साहित्य लेखन की बारीकियों से बच्चों को परिचित कराएगा, वहाँ साहित्यकार बच्चों की भावनाओं व अपेक्षाओं को बेहतर जान पाएँगे। अपनी तरह का यह एक अनूठा प्रयोग होगा जिसमें पाँच हजार से अधिक बच्चों की सहभागिता होगी।

'राष्ट्रीय बाल साहित्य समागम' के आयोजन स्थल 'चिल्डन' स पीस पैलेस' का अपना विशेष महत्व है। प्रसिद्ध राजसमंद झील के किनारे पहाड़ी पर विकसित यह कलात्मक भवन बच्चों के सर्वांगीण विकास को समर्पित एक अनूठा केंद्र है जहाँ प्रतिमाह आयोजित होने वाले आवासीय बालोदय शिविरों में बच्चे जीवन निर्माण की वह दिशा प्राप्त करते हैं जो सामान्यतः परिवार या विद्यालयों में भी संभव नहीं हो पाती है। यहाँ विकसित 25 से अधिक बालोदय दीर्घाएँ व कक्ष तथा यहाँ उपलब्ध संसाधन विभिन्न मानवीय मूल्यों से बच्चों को जोड़ते हैं और यहाँ संचालित बाल मनोविज्ञान आधारित प्रवृत्तियाँ बच्चों को स्व से परिचित करा एक सफल जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त करती हैं।

रजत जयंती विशेषांक का होगा प्रकाशन

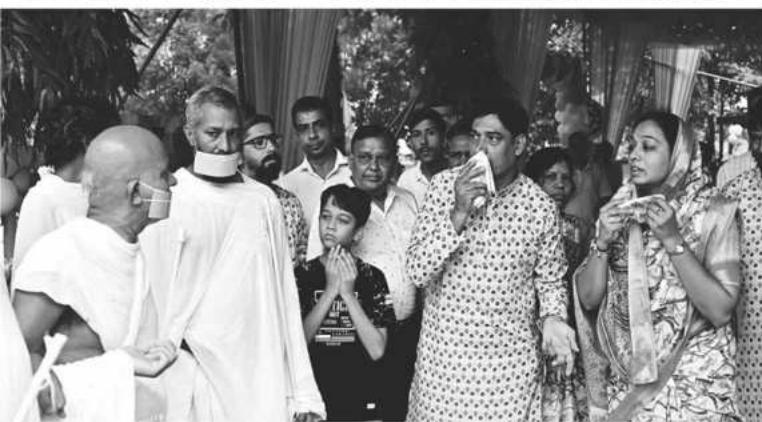
रजत जयंती के इस अवसर पर 'बच्चों का देश' का रजत जयंती विशेषांक भी प्रकाशित किया जा रहा है जिसमें पिछले 25 वर्षों में प्रकाशित चयनित रचनाओं के साथ ही इस गौरवशाली यात्रा की झलकियाँ भी सम्मिलित होंगी। बाल मनोविज्ञान की कस्ती पर कसी श्रेष्ठ रचनाओं और बहुरंगी चित्रों के साथ प्रकाशित यह पत्रिका बच्चों के मन पर गहरा प्रभाव छोड़ती है। यह एक गैर-व्यावसायिक सेवा-प्रकल्प है जिसका प्रारम्भ अणुविभा के संस्थापक श्री मोहनभाई के संरक्षण में 1999 में भागीरथी सेवा प्रन्यास के तत्त्वावधान में जयपुर से हुआ था। 18 वर्षों तक मोहनभाई के परिवार ने इसे आगे बढ़ाया और जनवरी 2018 से इस पत्रिका का प्रकाशन अणुविभा द्वारा किया जा रहा है। देश के प्रतिष्ठित श्रेष्ठ बाल साहित्य लेखकों के साथ ही लगभग 400 साहित्यकार इससे जुड़े हैं।

अणुव्रत वाटिका और किडजोन का शुभारंभ



अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में संचालित पर्यावरण जागरूकता अभियान के तहत अणुव्रत समिति बारडोली द्वारा ग्राम पंचायत पंचवटी बाबैन में अणुव्रत वाटिका का शुभारंभ किया गया। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के पावन चरणों का स्पर्श पाकर अणुव्रत वाटिका की भूमि धन्य हो गयी तथा वातावरण में एक अलौकिक ऊर्जा का संचार हो गया। आचार्य श्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में मंगल पाठ श्रवण करने के पश्चात् अणुव्रत बालोदय किडजोन का लोकार्पण भी हुआ।

इस अवसर पर अणुविभा उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, महामंत्री भीखम सुराणा, संगठन मंत्री पायल चौरड़िया, बारडोली विधायक ईश्वर भाई परमार, बारडोली शुगर फैक्ट्री के चेयरमैन भावेश भाई, पंचवटी बाबैन ग्राम पंचायत सरपंच फाल्युनी बेन पटेल, अणुव्रत समिति बारडोली अध्यक्ष राजेश चौरड़िया, स्थानीय संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी व कार्यकर्ता, आशाबेन चोरड़िया परिवार तथा स्कूली बच्चों सहित अन्य लोगों की गरिमामयी उपस्थिति रही। अणुव्रत वाटिका के सौजन्यकर्ता स्मृति शेष शोकिंद कुमार चोरड़िया की पुण्य स्मृति में पली आशा बेन, सुपुत्र राजेश कुमार, पुत्रवधू पायल बेन, सुपौत्र धैर्य कुमार, अंशु कुमार चोरड़िया परिवार बारडोली (लछुडा) रहे।



स्वस्थ समाज की संरचना में शिक्षक देता है योगभूत बलिदान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में शिक्षक सम्मेलन आयोजित



बारडोली। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि शिक्षक नैतिक हो, इमानदार हो। बच्चा चाहे अमीर परिवार से हो या गरीब परिवार से हो, वह सबके साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करे। शिक्षा का क्षेत्र बहुत ही व्यापक है। आचार्यश्री अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति बारडोली द्वारा बाजीपुरा क्षेत्र में 9 जुलाई को आयोजित शिक्षक सम्मेलन के प्रथम सत्र में शिक्षकों को प्रेरणा पाठ्ये प्रदान कर रहे थे। अणुव्रत अनुशास्ता ने कहा कि केवल किताबी ज्ञान से डॉक्टर, इंजीनियर, वकील बन सकते हैं, पर अच्छा इंसान तथा व्यावहारिक ज्ञान चरित्रवान शिक्षक ही दे सकता है। वही स्वस्थ समाज की संरचना में अपना योगभूत बलिदान देता है।

शिक्षक सम्मेलन के द्वितीय सत्र में मुनिश्री योगेश कुमार ने छोटे-छोटे प्रयोगों के माध्यम से शिक्षकों को समझाया कि किस तरह हम बच्चों को क्लास में एकिटव रख सकते हैं और पूरी ऊर्जा और उत्साह के साथ में यह क्रिया अल्प समय में पूर्ण की जा सकती है। आज की व्यस्तता वाली जीवनशैली में कैसे सुधार किया जा सकता है। उन्होंने बहुत ही सरल भाषा में शिक्षकों की जिज्ञासा का समाधान किया। कार्यक्रम में लगभग 200 शिक्षक शामिल हुए। प्रिंसिपल राजेश राठौड़ ने सप्ताह में तीन या चार दिन प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान का प्रयोग करने का आश्वासन दिया। इससे पहले अणुविभा की संगठन मंत्री पायल चौरड़िया ने स्वागत वक्तव्य दिया। बारडोली समिति अध्यक्ष राजेश चौरड़िया ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन अणुविभा के गुजरात प्रभारी अर्जुन मेड़तवाल ने किया।



अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

ये आप बड़ी देर से
आसमान की तरफ
क्या देख रहे हो जी ?



यही, कि इस आसमान में कितने
तरह-तरह के पक्षी उड़ते हैं।
अलग रंग, अलग प्रजाति....फिर भी
आपस में कोई भेदभाव नहीं।



सच कहा आपने...
सबकी अपनी उड़ान,
सबका आसमान!



काश! धरती पर हम मनुष्यों में भी
ऐसा हो....अणुव्रत सिद्धांत के अनुसार
हमें जाति, रंग आदि के आधार पर
आपस में छोटे-बड़े का भेदभाव
नहीं रखना चाहिए।





पर्यावरण जागरूकता अभियान अणुव्रत समितियों ने पौधरोपण कर मनाया वन महोत्सव सप्ताह

■■ संयोजिका डॉ. नीलम जैन की रिपोर्ट ■■

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में देशभर की अणुव्रत समितियों ने वन महोत्सव सप्ताह के अवसर पर पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किये। इस दौरान छात्रों और आमजन को पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रेरित किया गया।

चिकमंगलुरु अणुव्रत समिति ने एस. आर. प्राइम नर्चर इंटरनेशनल स्कूल में पौधरोपण किया। इस दौरान अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट में भाग लेने वाले छात्र-छात्राओं को



सर्टिफिकेट और मोमेंटो वितरित किये गये। समिति ने साई एंजेल स्कूल में भी पौधरोपण तथा अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट का प्रमाण पत्र वितरण किया। महर्षि विद्या मंदिर स्कूल और प्राइड यूरो स्कूल में भी पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

जोधपुर अणुव्रत समिति ने चांदपोल स्थित अणुव्रत वाटिका में चिक्रकला प्रतियोगिता आयोजित की। इस दौरान बच्चों को नाश्ता करवाया गया और स्केच कलर, पेंसिल भेंट की गयी।



फरीदाबाद अणुव्रत समिति द्वारा गवनमेंट प्राइमरी स्कूल, फरीदपुर में 300 पौधे लगाये गये। कार्यक्रम में जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, तेरापंथ युवक परिषद्,



किशोर मंडल और महिला मंडल फरीदाबाद ने सहयोग दिया। दर्शना मित्तल ने बच्चों के बैठने के लिए दरियां दीं। बच्चों को पारितोषिक भी प्रदान किये गये।

मंडी गोविंदगढ़ अणुव्रत समिति ने हरियाल पंजाब के साथ मिलकर अजनाली गाँव में 1150 पौधे लगाये। नगर कौंसिल



अध्यक्ष हरप्रीत प्रिंस ने भी पौधे लगाकर अपना योगदान दिया। ऋचा जैन और पीयूष जैन के सुपुत्र काव्य जैन के दसवें जन्मदिवस पर खालसा स्कूल में आम, जामुन और कड़ी पत्ते के

अणुव्रत समाचार

पौधे लगाये गये। समिति के अध्यक्ष ने पर्यावरण संरक्षण के कार्यों के लिए 11 हजार रुपये के योगदान की घोषणा की। इस अवसर पर लोगों ने पर्यावरण संरक्षण की शपथ ली और इस मुहिम को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया।

मुम्बई अणुव्रत समिति क्षेत्र वसई व तेरापंथ युवक परिषद्



वसई की ओर से सनसिटी में नीम के बड़े पौधे लगाये गये और उनकी सुरक्षा के लिए लोहे की जालियां भी लगायी गयीं।

औरंगाबाद अणुव्रत समिति ने छत्रपति संभाजी नगर में एलोवेरा, नीम, आम, आंवला, नींबू, सहजन, कड़ी पत्ता, मिर्ची



और कोथमीर समेत 20 प्रकार के पौधे लगाये गये। समिति के पदाधिकारियों और सदस्यों ने इंको फ्रेंडली फेस्टिवल बैनर लेकर शपथ ली।

भीलवाड़ा अणुव्रत समिति ने नेहरू विहार सेक्टर 13 के गार्डन में फलदार और छायादार पौधे लगाये गये तथा इनकी



देखभाल का संकल्प लिया। जगराओं अणुव्रत समिति ने महाप्रज्ञ स्कूल में पौधरोपण किया। इस कार्यक्रम में डायरेक्टर का विशेष सहयोग रहा।

राजसमन्द अणुव्रत समिति ने भिक्षु निलयम राजनगर में आचार्य श्री महापञ्च के 105वें जन्मदिवस 'प्रज्ञा दिवस' पर



पौधरोपण किया। इस अवसर पर तेरापंथी महासभा के उपाध्यक्ष, अणुविभा के ट्रस्टी, अणुविभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, मेवाड़ कॉफ़ेस अध्यक्ष सहित कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

भिवानी अणुव्रत समिति ने दुकानदारों से जूट और कपड़े के थैले का उपयोग करने की अपील की। समिति ने शहर में जूट के



400 निःशुल्क थैले वितरित किये और प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक किया। पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में प्लास्टिक के खतरों और उनके विकल्पों पर चर्चा की गयी।

दिवेर अणुव्रत समिति ने फुलीबाई भैरुलाल नाहर राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में 'चलो, चले हम वृक्ष



लगाएं, सभी मिल वृक्ष बचाएं' के संदेश के साथ पौधरोपण किया।

अणुव्रत समाचार

वापी अणुव्रत समिति अध्यक्ष ने पंच तत्वों के प्रदूषण से शरीर के बीमार होने पर प्रकाश डाला। तेरापंथ वापी सभाध्यक्ष, मंत्री,



तेयुप अध्यक्ष, महावीर इंटरनेशनल अध्यक्ष, महिला मंडल अध्यक्ष सहित कई लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

उदयपुर अणुव्रत समिति व तुलसी निकेतन रेजिडेंशियल स्कूल के तत्वावधान में अणुव्रत सर्किल, हिरण मगरी सेक्टर 4



में 'एक पौधे माँ के नाम' अभियान के तहत अशोक, नीम, कनेर आदि के पौधे लगाये गये। कार्यक्रम में मुख्य वन संरक्षक आर. के. जैन, पूर्व आरएस अधिकारी दिनेश कोठारी, अणुव्रत समिति के संस्थापक व अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

इस्लामपुर अणुव्रत समिति द्वारा बिधाननगर स्थित ब्लाइंड स्कूल में पौधरोपण कार्यक्रम हुआ। समिति के कोषाध्यक्ष के



जन्मदिन के उपलक्ष में बच्चों को खिचड़ी खिलायी गयी और जरूरतमंदों को खाद्य सामग्री उपलब्ध करवायी गयी। अणुव्रत समिति की अध्यक्ष ने पर्यावरण जागरूकता अभियान के तहत ईको फ्रेंडली बैग का वितरण किया।

अजमेर अणुव्रत समिति की ओर से सिविल लाइस स्थित जैन मंदिर में आयोजित कार्यक्रम में जिला प्रशासन और विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों द्वारा हरयालो राजस्थान एवं तरु अजमेर अभियान का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर 24 तीर्थकरों के नाम पर मंदिर की वाटिका में 24 पौधे लगाये गये। मुख्य अतिथि जिला कलेक्टर भारती दीक्षित और पुलिस अधीक्षक देवेंद्र विश्नोई ने कहा कि पौधरोपण आने वाली पीढ़ियों के लिए उत्तम धरोहर है।

इंदौर विधायक कैलाश विजयवर्गीय के आह्वान पर आयोजित वृहद् वृक्षारोपण अभियान "एक पेड़ माँ के नाम" अभियान के तहत इंदौर अणुव्रत समिति और तेरापंथ युवक परिषद् ने भी सक्रिय रूप से भाग लिया। इस दौरान महावीर वाटिका में 500 से अधिक पौधे लगाये गये।

टमकोर अणुव्रत मंच और महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल ने वृक्ष देखभाल अभियान आयोजित किया। प्राचार्य ने पेड़ों के महत्व और जलवायु परिवर्तन से लड़ने में उनकी भूमिका पर प्रकाश डाला। छात्रों ने पौधों की देखभाल का संकल्प लिया।

गंगापुर अणुव्रत मंच ने अष्टम आचार्य श्री कालूगणी समाधि स्थल स्थित अणुव्रत वाटिका में जामुन, गुडहल, मोगरा और अन्य पौधों का रोपण किया गया।

सरदारशहर अणुव्रत समिति के तत्वावधान में शाकम्भरी विद्यापीठ के विद्यार्थियों ने विद्यालय में पर्यावरण संरक्षण अभियान की शुरुआत कर रामलाल आर्य राजकीय औषधालय में गुलमोहर, नीम, अमलतास, गुडहल, कनेर, अर्जुन, अशोक आदि के पौधे लगाये। वक्ताओं ने पेड़ों को प्राणदाता और प्रदूषण नियंत्रक बताया। इस अवसर पर कई अभिभावक भी उपस्थित थे।



ईको फ्रेंडली कैरी बैग वितरण

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ईको फ्रेंडली कैरी बैग के वितरण का कार्य अनवरत जारी है। अणुव्रत समितियां व अणुव्रत सेवी ईको फ्रेंडली कैरी बैग की बुकिंग को लेकर उत्साह दिखा रहे हैं।

इनमें अणुव्रत समिति विजयवाड़ा, अणुव्रत समिति मुंबई, अणुव्रत समिति गाजियाबाद तथा अणुव्रत समिति मंडी गोविंदगढ़ के साथ किडजोन के राष्ट्रीय संजोजक चमन दूधोड़िया और अणुविभा की संगठन मंत्री (सेंट्रल जोन) साधना कोठारी शामिल हैं।



योग के व्यापक सन्दर्भों को समझें: आचार्य महाश्रमण अणुविभा के तत्त्वावधान में जीवन विज्ञान विभाग द्वारा देश भर में अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस आयोजित

■■ संयोजक रमेश पटावरी की रिपोर्ट ■■

“योग की साधना शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। योग स्वयं के लिए भी और योग समाज के उन्नयन के लिए भी हो सकता है। योग साधना में आसन प्राणायाम आदि अंग हो सकते हैं। इसके अलावा हमारे भारतीय साहित्य में योग को बहुत ऊँचा स्थान दिया गया है। योग में स्वाच्छाय, जप आदि को भी जोड़ सकते हैं, इसके साथ अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह, इनकी साधना भी योग साधना है। शरीर, वाणी, मन और इन्द्रियां इन चारों का संयम करने की साधना भी अपने आप में योग साधना होती है। 21 जून का दिन योग दिवस के रूप में स्थापित हुआ है, इस निमित्त से बहुतों को योग से जुड़ने की ओर योग साधना करने की प्रेरणा मिल सकती है। हम योग के व्यापक सन्दर्भों को समझें और अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह की साधना के साथ ही शरीर, वाणी, मन और इन्द्रियों को संयमित रखने की साधना करें तो योग साधना का महत्व और उपयोगिता बहुत ज्यादा सिद्ध हो सकती है।” उपरोक्त विचार अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस पर व्यक्त किये।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में जीवन विज्ञान विभाग द्वारा देशभर में कार्यरत 150 से अधिक अणुव्रत समितियों/अणुव्रत मंच के माध्यम से अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को मनाया गया।

जीवन विज्ञान विभाग के राष्ट्रीय संयोजक रमेश पटावरी ने बताया कि इस हेतु देश को पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और केन्द्रीय जोन में विभाजित कर पाँचों क्षेत्रों के लिए क्रमशः सरला बरड़िया, कुनूर को साउथ-जोन, धर्मेन्द्र चोरड़िया, पूना को वेस्ट-जोन, रंजीता जैन, जोधपुर को नॉर्थ-जोन, प्रियंका मालू, गुडगांव को सेन्ट्रल-जोन तथा पुष्पलता पिंचा, बोरहोला को नॉर्थ-ईस्ट जोन का संयोजक बनाया गया। पाँचों संयोजकों ने अपने-अपने क्षेत्र में कार्यरत अणुव्रत समितियों/अणुव्रत मंच से सम्पर्क कर विद्यालयों, पार्कों, तेरापंथ भवनों आदि स्थलों पर आयुष मंत्रालय द्वारा जारी प्रोटोकॉल के प्रयोगों के साथ-साथ जीवन विज्ञान के विभिन्न ध्यान, योग आधारित प्रयोगों का अध्यास करवाया। उक्त आयोजनों के साथ-साथ केन्द्रीय टीम के निर्देशन में ऑनलाइन भी कार्यक्रम आयोजित कर अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया, जिसमें सविता जैन का सहयोग मिला।

पटावरी ने बताया कि देश में अनेक स्थानों पर विराजित चारित्रिकामाओं एवं समणीवृन्द का कृपापूर्ण सान्निध्य भी प्राप्त हुआ, एतदर्थे उन सभी चारित्रिकामाओं एवं समणीवृन्द के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। कार्यक्रम आयोजन में अणुव्रत समितियों, मंचों, अणुव्रत/जीवन विज्ञानी कार्यकर्ताओं एवं गणमान्य महानुभावों तथा विभिन्न सामाजिक संस्थाओं का महत्वपूर्ण सहयोग मिला, उन सभी के प्रति हार्दिक आभार।

जीवन विज्ञान विभाग के सह-संयोजक कमल बैंगाणी ने बताया कि नेपाल सहित देश के 68 शहरों पर आयोजन के समाचार प्राप्त हुए हैं -

भवानीपुरम	विजयवाड़ा	बरपेटा रोड
बोरहोला	धुबरी	दिफू
गुवाहाटी	जोरहाट	नगांव
तेजपुर	किशनगंज	अंबिकापुर
भिलाई	रायपुर	दिल्ली
अहमदाबाद	बारडोली	दाहोद
सचिन	सूरत	वापी
फरीदाबाद	हांसी	हिसार
जींद	बेंगलुरु	चिकमंगलूर
हुबली	बामनिया	इंदौर
कल्याणपुर	पेटलावट	शिवपुरी
मुंबई	पुणे	ठाणे
पिंपरी चिंचवड	आसोंद	बालोतरा
भीलवाड़ा	बीदासर	छापर
दिवेर	गंगापुर	हनुमानगढ़
जयपुर	जसोल	चूरू
जोधपुर	लाडनूं	नाथद्वारा
पाली	पुर	राजसमंद
टमकोर	पीलीबंगा	सिलीगुड़ी
काठमांडू	चेन्नई	कुनूर
हैदराबाद	गाजियाबाद	वाराणसी
इस्लामपुर	दलकोला	दिनहाटा
कोलकाता		





अणुव्रत अमृत विशेषांक पाठक परख

अणुव्रत आंदोलन के गैरवशाली 75 वर्षों की सफल सम्पूर्ति पर वर्ष पर्यन्त मनाये गये 'अणुव्रत अमृत महोत्सव' के क्रम में वैविध्यपूर्ण प्रकल्पों की एक वृहद् शृंखला आयोजित हुई। इस शृंखला की अंतिम कड़ी के रूप में प्रस्तुत हुआ - 'अणुव्रत अमृत विशेषांक'। हमारा विनम्र प्रयास रहा कि इस विशेषांक को पठनीय, मननीय और संग्रहणीय बनाया जा सके।

'अणुव्रत अमृत विशेषांक' के संदर्भ में हमें निरंतर संवाद और सम्मतियाँ प्राप्त हो रही हैं। कुछ संवाद तो इतने विस्तृत हैं कि स्थानाभाव के कारण उन्हें जस का तस प्रकाशित करना संभव नहीं हो पा रहा है। आप सब के स्नेह व समर्थन के हम हृदय से आभारी हैं। 'पाठक परख' के अंतर्गत आगामी अंकों में आप कुछ और प्रबुद्ध पाठकों के मूल्यवान विचारों से परिचित हो सकेंगे।

पढ़ता ही चला गया

'अणुव्रत अमृत विशेषांक' की प्रति प्राप्त हुई। इसे पढ़ा एवं पढ़ता ही चला गया। एक-एक लेख-आलेख को तन्मयता से देखा। मुझे इस बात की बेहद खुशी हुई कि अणुव्रत से जुड़े प्रायः सभी बिन्दुओं को इसमें स्थान दिया गया है। लेख-आलेख का चयन अत्यन्त उत्कृष्ट लगा। एक बात और देखने को मिली कि लेख-आलेख की भाषा एवं भाव को अत्यन्त कलात्मक तरीके से परिष्कृत किया गया है। भाव, भाषा, शैली, प्रस्तुतीकरण तथा विषय-सामग्री अच्छी पत्रकारिता के गुण अथवा लक्षण माने जाते हैं। 'अणुव्रत' पत्रिका इन सभी दृष्टियों से परिपक्व लगती है।

सम्पादकी एवं उनकी टीम इसके लिए बधाई एवं साधुवाद की पात्र है। आप सभी लोग कलम के धनी हैं। आप लोगों की कलम में दम है। आपकी लेखनी सतत चलती रहे तथा समय के दस्तावेज पर एक सशक्त हस्ताक्षर बनें, यही मंगलकामना है।

-डॉ. बसन्तीलाल बाबेल, लावा सरदारगढ़

नैतिक चेतना की मशाल

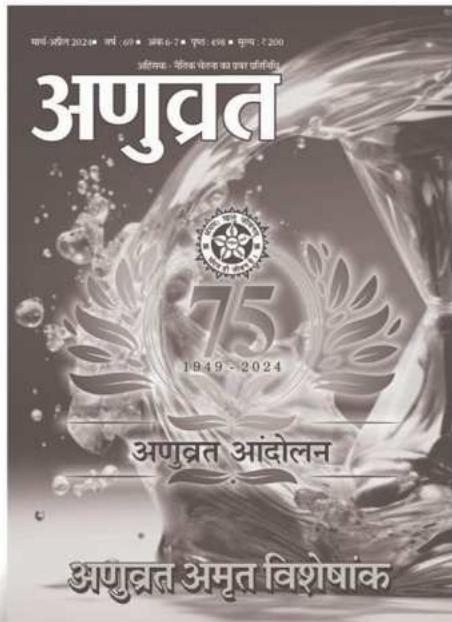
सन् 1949 में आरम्भ हुए अणुव्रत आंदोलन की मुख पत्रिका 'अणुव्रत' अहिंसा और नैतिक चेतना हेतु सन् 1955 से समर्पित है। इसके सतत प्रकाशन में अनेक सम्पादकों, साहित्यकारों और विचारशील लेखकों का अमूल्य योगदान रहा है। किसी वैचारिक पत्रिका का सात दशक तक अनवरत

प्रकाशन साहित्यिक पत्रकारिता में एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। अणुव्रत आंदोलन के 75 वर्षों की अनवरत यात्रा की सम्पूर्ति पर 'अणुव्रत' पत्रिका का 'अणुव्रत अमृत विशेषांक' नैतिक चेतना की मशाल के रूप में पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत हुआ है। 498 पृष्ठीय संग्रहणीय यह विशेषांक सारगर्भित सम्पादी समेटे है। सम्पादक श्री संचय जैन एवं सह-सम्पादक श्री मोहन मंगलम का श्रम 'अणुव्रत अमृत विशेषांक' में स्पष्ट झलकता है। दोनों को हार्दिक बधाई। यह हर्ष का विषय है कि आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन आज भी अपनी प्रासंगिकता के साथ उत्तरोत्तर गतिशील है और भविष्य में यह और व्यापक एवं गतिशील होगा। साधुवाद।

-हरदान हर्ष, जयपुर

ऐतिहासिक दस्तावेज

अणुव्रत आंदोलन के 75 वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण होने के स्वर्णिम अवसर पर अणुव्रत अमृत महोत्सव का राष्ट्रव्यापी आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत अनेक यादगार कार्यक्रमों के साथ अणुव्रत पत्रिका के वृहद्, सर्वांग संपत्र अणुव्रत अमृत विशेषांक का प्रकाशन भी एक महत्वपूर्ण प्रकल्प है। नौ विभागों में विभाजित 500 पृष्ठों का यह विशाल ग्रंथ एक ऐतिहासिक दस्तावेज है। इस विशेषांक में एक ओर जहाँ अणुव्रत आंदोलन की आध्यात्मिक ऊर्जा को विद्वान संतों व विदुषी साधिकारों ने अपने ज्ञान, ध्यान एवं अनुभव से प्रतिपादित किया है, वहीं दूसरी ओर अणुव्रत कार्यकर्ताओं की अनुभव जनित वैचारिक पृष्ठभूमि से आंदोलन की प्रेरणा व प्रभाव को उद्घाटित किया गया है।



अणुव्रत की अमृत यात्रा के विराट अतीत में से 75 प्रमुख माइलस्टोन की खोज करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है जिसे समर्पित कार्यकर्ताओं की टीम ने पूरी जिम्मेदारी के साथ प्रस्तुत किया है। ये 75 शिलालेख पढ़ने से अणुव्रत की गति-प्रगति और गौरवशाली इतिहास का पर्याप्त ज्ञान हो जाता है। निश्चित ही इस वरिष्ठ एवं गरिष्ठ अंक को संकलित, संयोजित व संपादित करने में संपादक श्री संचय जैन की परिकल्पना व परियोजना साकार होकर जन-जन के मानस तक पहुँची है। इस उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए संपूर्ण अणुव्रत परिवार साधुवाद का पात्र है।

-प्रकाश तातेड़, उदयपुर

अनमोल आलेखों का समाहार

अणुव्रत आंदोलन के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा प्रकाशित 'अणुव्रत अमृत विशेषांक' अनमोल तथा अनुकरणीय आलेखों का समाहार है। विभिन्न पदों पर आसीन विशिष्ट व्यक्तित्वों के शुभकामना संदेश अणुव्रत आंदोलन की महत्ता के द्योतक हैं।

अणुव्रत आंदोलन के सूत्रधार आचार्य तुलसी का प्रेरणा पथेर्य 'अणुव्रत की क्रांतिकारी पृष्ठभूमि' पाठकों को मार्गदर्शन प्रदान करता है। वे कहते हैं कि अणुव्रत चरित्र-निर्माण की प्रक्रिया है। नैतिक उन्नति का आधार है नैतिक विचार। अणुव्रत का एकमात्र उद्देश्य है जाति, वर्ण, वर्ग, भाषा, प्रांत और धर्मगत संकीर्णताओं से ऊपर उठकर मानव मात्र को आत्मसंयम और नैतिक मूल्यों के प्रति प्रेरित करना। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से अस्पृश्यता निवारण का भी सघन अभियान चलाया था। अगर आचार्यश्री का यह लेख कोई पढ़े तो उसे जीवन का वह तत्त्व ज्ञान प्राप्त होगा जो उसे अंधेरे से उजाले की ओर ले जाएगा और तब शायद वह जीवन में वास्तविक कर्म की ओर उद्यत हो सके। आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमण, साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा, साध्वीप्रमुख विश्रुतविभाके आलेख भी पठनीय ही नहीं, अनुकरणीय भी हैं।

'अणुव्रत साधन' शीर्षक आलेख में शासन गौरव साध्वी राजीमतिजी कहती हैं, "अणुव्रत ऐसा समाज चाहता है जो शाकाहारी हो, जो अहिंसक हो, जो व्यसनमुक्त हो, जो शोषणविहीन हो, जो संप्रदायमुक्त हो, जो सामुदायिक चेतना वाला हो, अणुव्रत हर आदमी के लिए विकासशील ब्रत है, अतः अणुव्रती बनना हमारा नैतिक कर्तव्य है।" न्यायमूर्ति गौतम चौरड़िया का आलेख 'भारत का संविधान और अणुव्रत आचार संहिता' भी ध्यान आकर्षित करता है। वे कहते हैं कि अणुव्रत का विचार-दर्शन भारतीय संविधान की मूल भावना को संपूष्ट

करता है। अणुव्रत दर्शन का मूल मंत्र है - 'संयमः खलु जीवनम्' अर्थात् संयम ही जीवन है। मानव को मानव बनाने का अभियान है अणुव्रत आंदोलन। अगर कोई व्यक्ति अणुव्रत के सिद्धांतों को अपना ले तो वह सही अर्थों में मानव बन जाएगा।

-सुधा आदेश, बंगलुरु

अणुव्रत की विकास यात्रा का परिचायक

'अणुव्रत अमृत विशेषांक' प्राप्त हुआ, जिसका अध्ययन सुखद और प्रभावपूर्ण रहा, क्योंकि यह एक पावन ग्रंथ समान ही है। इस वृहद विशेषांक को पढ़ते समय अणुव्रत की ऐतिहासिक विकास यात्रा का सम्पूर्ण परिचय मिला। इसमें प्रकाशित वैविध्यपूर्ण आलेखों के माध्यम से अणुव्रत आंदोलन के अनमोल सिद्धांतों से परिचय हुआ।

आज समाज में जब हर ओर अशांति का साम्राज्य है, हमारी पुरातन सभ्यता और संस्कृति लुप्तप्राय हो रही है, ऐसे में रामराज्य जैसे समाज की कल्पना करना, अंधे को दीपक दिखाने के समान है। इसलिए अणुव्रत के सिद्धांतों का अनुसरण करना आज के समाज की आवश्यकता बन गया है, क्योंकि जब तक व्यक्ति का अंतर्मन शुद्ध नहीं होगा, तब तक देश और समाज प्रगति के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकते। ऐसे कालखंड में अणुव्रत का दर्शन जनमानस में मानवीय मूल्यों की स्थापना हेतु निरंतर प्रयत्नशील है, जिनको अपनाकर ही एक स्वस्थ समाज का निर्माण हो सकता है। अणुव्रत आंदोलन के प्रणेता आचार्य तुलसी जी ने भी स्पष्ट किया है कि 'अणुव्रत' किसी समुदाय विशेष के लिए नहीं है, अपितु मानव मात्र के लिए है। यही कारण है कि अणुव्रत दर्शन का प्रचार-प्रसार देश-देशांतर में हो रहा है।

'अणुव्रत अमृत विशेषांक' में संकलित आलेख तो महत्वपूर्ण हैं ही, कहानियां, कविताएं और प्रेरक प्रसंग भी गागर में सागर भरते प्रतीत होते हैं। इसका स्पष्ट उदाहरण रामनिवास 'मानव' जी की कविता, 'वैर भाव से मुक्त हों' है, जिसमें पत्रिका का सारांश ही निहित है। सुधी संपादक श्री संचय जैन, सह संपादक मोहन मंगलम जी तथा पूरे संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई देती हैं, क्योंकि इन सबके अथक परिश्रम और लगन के फलस्वरूप ही यह भव्य और संग्रहणीय विशेषांक हमारे समक्ष है। मैं उन सभी महानुभावों को भी हृदयतल से नमन करती हूँ जिन्होंने अणुव्रत आंदोलन में अपना विशिष्ट योगदान दिया है और जो हमें प्रतिपल लोकमंगल के पथ पर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करता रहेगा।

-सुकीर्ति भट्टनागर, पटियाला

मन को शुद्ध, आत्मा को पवित्र बनाता है योग - मुनिश्री हिमांशुकुमार

चेन्नई। मुनिश्री हिमांशुकुमार ने कहा कि जो हमारे स्वास्थ्य को संतुलित व स्वस्थ बनाता है, मन को शुद्ध बनाता है, आत्मा को पवित्र बनाता है, उसे योग कहते हैं। भारतीय संस्कृति में योग का



मन, वचन और शरीर से गहरा संबंध माना गया है। मुनिश्री अणुविभा के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति चेन्नई एवं श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ ट्रस्ट, ट्रिप्लीकेन की ओर से अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस पर तेरापंथ भवन में 'योग अपनाएं- आरोग्य पाएं' विषयक कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुनिश्री हेमंतकुमार ने कहा कि योग ऐसी साधना है जिससे व्यक्ति स्वयं से जुड़ जाता है। योग के विविध प्रयोगों - आसन, ध्यान और प्राणायाम से शरीर की क्रियाएं जागरुकता पूर्वक संचालित होती हैं। इससे आंतरिक विकास होता है। यौगिक क्रियाएं स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद होती हैं। अणुव्रत समिति के मंत्री स्वरूप चन्द दाँती ने बताया कि कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोगों ने हिस्सा लिया।

योग से मिलता है आरोग्य

चेन्नई। अणुविभा के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति, तेरापंथ एजूकेशन एण्ड मेडिकल ट्रस्ट, प्रेक्षा फाउंडेशन और संघीय संस्थाओं के सहयोग से तेरापंथ जैन विद्यालय, पट्टालम् में अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस पर 'योग से बने निरोग' कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में 300 से अधिक बच्चों के साथ लगभग 400 अभिभावक, अध्यापक तथा श्रावक उपस्थित थे। इस अवसर पर साध्वी डॉ. गवेषणाश्री ने कहा कि योग भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है।

उन्होंने कहा कि योग का मतलब होता है जोड़ना, खण्ड से अखण्ड की ओर जाना। योग साधारण को असाधारण बनाता है, चेतना से अचेतना की ओर ले जाता है। योग और प्राणायाम से मेमोरी पॉवर बढ़ती है। आत्मविश्वास, आत्मविकास से हार्डवर्क भी सरलता से समन्वय के साथ कर सकते हैं। गुस्सा, चिड़चिड़ापन,

आलस्य से दूर रह सकते हैं। साध्वीश्री मयंकप्रभा ने कहा कि योग से आईक्यू ईक्यू, पीक्यू एसक्यू लेवल बढ़ता है। इमोशन एवं नेचर पर कन्ट्रोल होता है। साध्वीश्री मैरुप्रभा ने 'अच्छे बच्चे हों तैयार', साध्वीश्री दक्षप्रभा ने 'योग के अभ्यास से जीवन बदलता है' गीतिकाओं के माध्यम से प्रेरणा दी।

कार्यक्रम का संचालन संजय भंसाली ने किया। धन्यवाद ज्ञापन अणुव्रत समिति मंत्री स्वरूप चन्द दाँती ने दिया। कार्यक्रम की शुरुआत में बच्चों ने विविध आसन किये। प्रधानाध्यापिका आशा क्रिस्टी, ट्रस्ट चेयरमैन एम. जी. बोहरा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष ललित आंचलिया तथा प्रेक्षा फाउंडेशन से भारती मुथा ने भी विचार व्यक्त किये। अणुव्रत समिति ने बच्चों, विद्यालय चेयरमैन, प्रधानाध्यापिका इत्यादि का सम्मान किया।

4500 विद्यार्थियों को अणुव्रत टी शर्ट वितरित

दिल्ली। अणुव्रत समिति की ओर से अणुव्रत सेवा प्रकल्प के तहत 5 जुलाई को आचार्य तुलसी सर्वोदय बाल विद्यालय



छत्तरपुर में 4500 विद्यार्थियों को अणुव्रत लोगों लगी टी शर्ट का वितरण किया गया। प्रिसिपल मनदीप कुमार ने कहा कि इसके माध्यम से विद्यार्थियों में अणुव्रत की चेतना जागृत होगी। उन्होंने कहा कि स्कूल के विभिन्न हाउस के नाम - सत्य, शांति, अहिंसा, सद्बाव अणुव्रत सन्देश के आधार पर ही आधारित हैं। दिल्ली सभा के पूर्व अध्यक्ष जोधराज बैद ने टी शर्ट बनवाने में आर्थिक सहयोग प्रदान किया।

अणुव्रत समिति के अध्यक्ष मनोज बरमेचा, निवर्तमान अध्यक्ष शांतिलाल पटाकरी, मंत्री राजेश बैंगानी, सह मंत्री मनोज खटेड़, बाबूलाल दूगड़, कमल सेठिया ने जोधराज बैद तथा प्रिसिपल मनदीप कुमार को पटका पहनाया एवं अणुव्रत आचार संहिता का मोमेंटो भेंट किया।

इग्र फ्री हो युवा पीढ़ी

वारपी। अणुव्रत समिति की ओर से नशामुक्ति और डिजिटल डिटॉक्स पर दो दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस



अक्षर पर डॉ. मुनिश्री अभिजीत कुमार ने बताया कि ओवर थिंकिंग को थिंकिंग ओवर में कन्वर्ट करके कैसे वर्तमान में जिया जा सकता है। कार्यक्रम में इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के उपयोग को संयमित करने हेतु आमजन को जागरूक किया गया। "एलिवेट है एक ऐसी सीढ़ी, जिससे ड्रग फ्री हो युवा पीढ़ी।" पर व्याख्यान में डॉ. मुनिश्री अभिजीत कुमार ने ड्रग्स के दुष्परिणामों से अवगत कराया और बताया कि छोटे-छोटे संकल्पों को ग्रहण कर कैसे सात्त्विक रहा जा सकता है। मुनिश्री ने श्रोताओं की जिज्ञासाओं का सरल एवं प्रैक्टिकल तरीके से समाधान सुझाया।

इस अक्षर पर अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के नशामुक्ति अभियान के राष्ट्रीय संयोजक प्यारचंद मेहता, सह-संयोजक दलपत बाबेल, अणुव्रत समिति के प्रतिनिधियों समेत स्थानीय तेरापंथ संघ के पदाधिकारियों तथा वापी, बलसाड एवं सहवर्ती क्षेत्रों के श्रावक-श्राविका गण की अच्छी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन समिति अध्यक्ष चन्दा दुगड़ ने तथा आभार ज्ञापन संजय भंडारी ने किया।

अणुव्रत मानवीय मूल्यों के ऊर्ध्वारोहण का आंदोलन

दिल्ली। दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष रामनिवास गोयल ने कहा कि अणुव्रत मानवीयता के ऊर्ध्वारोहण का आंदोलन है।



अणुव्रत दर्शन से बिना किसी जाति, धर्म, संप्रदाय या वर्ण भेद के मानव मात्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है। इससे पहले अणुव्रत विश्व भारती की संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया, अणुव्रत समिति गाजियाबाद की अध्यक्ष कुसुम सुराना, हीरालाल सुराना एवं ज्ञानशाला के पूर्व संयोजक अशोक बैद ने अणुव्रत आंदोलन के 75वें वर्ष पर प्रकाशित 'अणुव्रत अमृत विशेषांक' विधानसभा अध्यक्ष को भेंट किया।

विधानसभा अध्यक्ष ने विशेषांक की सामग्री, कलेवर व साज सज्जा की प्रशंसा करते हुए कहा कि अणुव्रत मानवीय मूल्यों पर आधारित है। हमारा लक्ष्य भी उच्च मानवीय मूल्यों की स्थापना से व्यक्ति, समाज व राष्ट्र का उत्थान करना है।

अणुव्रत संरक्षक



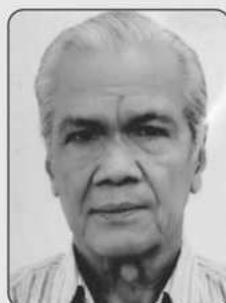
श्री आनंद बागरेचा

पचपदरा, पुणे



श्रीमती संगीता बागरेचा

पचपदरा, पुणे



'अणुव्रत गौरव' डॉ. बसंतीलाल बाबेल

लावा सरदारगढ़

अणुविभा के अर्थ संबल अभियान में आपने 1 लाख रुपये

अनुदान की सहभागिता कर अणुव्रत आंदोलन को

सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

अणुविभा परिवार आपका हृदय से आभारी है।



Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional



International



Akash Ganga®

— *Integrity at work* —

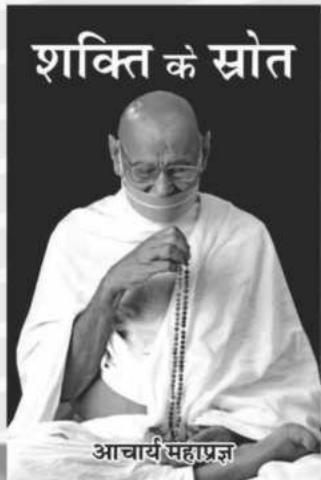
ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom,
Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur,
New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahmedabad • Bangalore • Chennai
Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguri • Surat





आधार पुस्तक

“
अणुव्रत प्रबोधन
प्रतियोगिता
2024
”

आयोजक



अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

राजसमन्द • दिल्ली

प्रायोजक

सुरेशराज—जसकंवर—जितेन्द्र—पारुल सुराणा, दिल्ली—जोधपुर

सम्पर्क सूत्र : 9950030181, 9116634512


अनुव्रत विश्व भारती सोसायटी
द्वारा
अपने गैरवशाली प्रकाशन राष्ट्रीय बाल मासिक



बच्चों का देश
की रजत जयंती के अवसर पर आयोजित

बाल साहित्य क्रमागाम



- बाल-साहित्य सृजन विमर्श
- स्कूली बच्चों के साथ संवाद
- बालोदय दीर्घा अवलोकन
- काव्य गोष्ठी
- सम्मान व स्मृति-चिन्ह

आयोजन स्थल
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, राजसमंद
राजस्थान

16-18 अगस्त, 2024